हम आबि रहल छी

(समाजमे बूढ़क दुखद स्थितिक जीवन्त चित्रण करैत उपन्यास)

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि जौं ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए।

हम आबि रहल छी

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5493-109-3

दाम : निःशुल्क
सर्वाधिकार सुरक्षित © : रबीन्द्र नारायण मिश्र
पहिल संस्करण :2021
लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

हम आबि रहल छी

A Maithili Novel by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

एहि पोथीक सर्वाधिकार पुस्तकक लेखक श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र लग सुरक्षित अछि। कॉँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छायाप्रति एवम् रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समर्पण

जीवनक उत्तरार्धमे
ससम्मान जीबाक हेतु संघर्षरत
बृद्धलोकनिकेँ
सादर सप्रेम समर्पित

आभार

पूर्वमे प्रकाशित हमर पुस्तकसभपर कतेको विद्वान लोकनिक उत्साहवर्धक प्रतिकृया प्राप्त होइत रहल अछि । एहि प्रसंगमे प्रोफेसर(डाक्टर) श्री भीमनाथ झा, प्रोफेसर(डाक्टर) इन्द्रकांत झा, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगामे मैथिली विभागमे प्राध्यापक प्रोफेसर(डाक्टर) रमण झा, आ डाक्टर कीर्तिनाथ झा उल्लेखनीय छथि। आओर अनेको विद्वान पाठक लोकनि समय-समयपर हमर पुस्तकसभ पढ़ि कए अपन मंतव्य दए हमरा उत्साहित करैत रहलाह अछि । हम अत्यंत विनम्रतापूर्वक हुनका लोकनिक प्रति कृतज्ञता व्यक्त करैत छी आ आशा करैत छी जे हुनकासभक मार्गदर्शन भविष्योमे एहिना प्राप्त होइत रहत।

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि पोथीक पाण्डुलीपिकेँ रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ एहिमे गुणात्मक सुधार भेल। हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ)क अमूल्य सुझाव सेहो समय-समय पर भेटैत रहल अछि । एहि हेतु ओ सभ प्रशंसाक पात्र छथि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

11.5.2021

लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र

माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी

जन्म तिथिः२ जनबरी १९५४(प्रमाण पत्र)

२४ अगस्त १९५२(जन्मपत्र)

पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह

मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी

वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)

स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)

शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक

प्रकाशित कृति :

मैथिलीमे:-

१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा) २. 'प्रसंगवश' (निवंध) ३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग) ४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास) ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास) १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास) १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१. बदलि रहल अछि सभ किछु(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)
२३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहए(उपन्यास) २६.ठेहा परक मौलायल गाछ(उपन्यास) २७.पटाक्षेप(उपन्यास) २८. माटि बजा रहल अछि(यात्रा प्रसंग) २९. जयतु जानकी(उपन्यास)
३०. यज्ञसेनी(उपन्यास) ३१.कथा अखन बाँकी अछि(संस्मरण) ३२. गाछ बजैत छैक(कथा संग्रह) ३३.सूर्यपुत्र(उपन्यास)

In English: -

1. The Lost House (Collection of short stories)

2. Life is an art

3.The Ganges Whispers (English translation of Maithili Novel, हम आबि रहल छी)

हिन्दी में –

१.न्याय की गुहार(उपन्यास)

(उपरोक्त पोथीसभ pothi.com, amazon.com आओर www.flipcart.com पर सँ कीनल जा सकैत अछि)

इमेल: mishrarn@gmail.com
ब्लोग: mishrarn.blogspot.com
Mobile -9968502767
एमजोनक लेखक पृष्ठ: amazon.com/author/rnmishra

हम आबि रहल छी

1

हमरा जखन होस आएल तँ हम सफदरजंग अस्पतालक शायिकापर पड़ल रही। चारूकातसँ कैकगोटे घेरने रहए। ओहिमे किछु डाक्टर,सिस्टर,अस्पतालक कर्मचारी आ दूटा पुलिस सामिल छल। मोन होअए जे पुछिऐक जे बात की छैक? मुदा बाजले नहि होअए। जतबा काल होस रहए एही गुनधुनमे रही। ताधरि डाक्टरसभ हमरा किछु दबाइ देलक आ एकटा सुइआ सेहो बामा बाँहिमे लगा देलक। तकरबाद जे हम फोंफ काटए लगलहुँ से एकहि बेर चारिबजेक आसपास आँखि खुजल। चारूकात मुड़ी घुमओलहुँ। कतहु केओ नहि रहए। हमरा पिआससँ कंठ सुखाइत छल। अपनेसँ उठल नहि होइत छल। संयोगसँ बगलबला रोगीक संगे आएल एकटा अधबयसु सामनेमे पड़लाह। हम हुनका इसारासँ पानि आनि देबाक हेतु कहलिअनि। ओ हमर बात बूझलनि। अपना संगसँ पानिक बोतलमे सँ एक गिलास पानि हमरा दिस बढ़ा देलनि। हम एकहि बेरमे सौंसे गिलासक पानि पीबि गेलहुँ। जानमे-जान आएल। भेल जे किछु पुछिअनि । मुदा हम किछु बजितहुँ ताहिसँ पहिने

डाक्टरसभक हुजुम आबि गेलैक । प्रहरीसभ बाहरी आदमीसभकेँ कोठरीसँ बाहर कए देलकैक ।

डाक्टरसभ हमरा तरह-तरहसँ देखलक । हाथ,पैर,छाती सौंसे तँ किछु-किछु लागले रहए । किछु आओर यंत्रसभ लगबा देलक । अपनासभमे कहि ने की-की बतिआएल आ सहटि कए दोसर रोगी दिस चलि गेल । दोसर रोगी एकदम युवती ,देखबामे बहुत सुंदरि छलीह । हुनका लग एकटा अधबयसू पुरुख रहनि । ओएह कखनो काल हमरो दिस घुसकि जाइत छल । कैक बेर बंगालीमे हमरासँ किछु-किछु पुछलक। हम की जाने गेलिऐक बंगालीमे ओ की बकि रहल अछि ? हमर उत्तर नहि पाबि ओ उदास भए जाइत छल,बजनाइ छोड़ि कए माथपर हाथ धए लैत छल । मुदा तैओ फेर-फेर हमरा दिस अबैत रहैत छल ।

डाक्टरसभ ओकरो देखलकैक आ आगू बढ़ि गेल । ओसभ बेरा-बेरी ओहि कोठरीमे सभ रोगीकेँ देखलक आ आपसमे गप्प करैत दोसर कोठरीमे चलि गेल । जखन डाक्टरसभ ओहि कोठरीसँ बाहर भए गेल तँ ओ फेर हमरा लग आएल । कहलक-

“हम छी दीपेंदु”

आ फेरसँ बंगालीमे शुरू भए गेल । ओकर उत्तर हम फेर नहि दए सकलिऐक । मुदा अपना भरि इसारासँ कहलिऐक जे बंगाली छोड़ि किछु आओर बाजए । इसारा ओ बुझैक नहि,हमरा बंगाली बाजल होअए नहि । तेँ बात ओतहिकेँ ओतहि रहि गेल । ताबते एकटा

सिस्टर आएलि। हमर शायिका लग टांगल कागजसभ पढ़लक। फेर पुछैत अछि-

"अहाँ संगे के अछि?"

बहुत मोसकिलसँ हम कहि सकलिऐक-

"केओ नहि।"

"तखन एतए के अनलक?"

हम टुकुर-टुकुर आकाश दिस देखैत रहि गेलहुँ।

संभवतः ओकरा किछु कहबाक रहैक ,किंवा किछु दबाइ मंगेबाक रहैक। मुदा जखन केओ रहबे नहि करए तँ ओ की करैत?

सिस्टरकेँ परेसान देखि दीपेंदु पुछलकैक-

"की बात छैक?"

"हिनकर स्थिति आब ठीक छनि। हिनका आइ अस्पतालसँ छुट्टी करबाक छैक।

"तँ दिक्कति की छैक?"

"हिनका संगे केओ छनिहे नहि। ककरा की बुझेबैक? मास दिन दबाइ खेबाक छनि। तकरबाद फेर अस्पताल आबि देखबए पड़तनि।"

"अहाँ चिंता नहि करू। हमरा कहू जे की करबाक छैक।"

"ठीक छैक। हम डाक्टर साहेबसँ गप्प करैत छी।"

सिस्टर चोट्टे डाक्टर साहेब लग गेल। हुनका संगे दीपेंदु सेहो गेल। दीपेंदुकेँ बाहरे ठाढ़ कए सिस्टर डाक्टर साहेबकेँ सभ बात

कहलकनि । डाक्टर साहेब दीपेंदुकेँ बजेलखिन । दीपेंदु डाक्टर साहेबकसँ गप्प केलथि । जे-जे ओ कहलखिन से सुनलक। डाक्टर साहेब आश्वस्त भए गेलथि । सिस्टरकेँ कहलखिन-

“हिनकासँ कागजसभपर दस्तखत करबा लिअ आ बूढ़ाकेँ अस्पतालसँ छुट्टी कए दिअनु ।”

अस्पतालसँ छुट्टी भेटलाक बाद हम दीपेंदु संगे निकललहुँ। हमरा अस्पतालक मुख्यद्वारि लग ठाढ़ कए ओ कहैत छथि-

“अहाँ एतहि रहू । हम दीपाकेँ लेने अबैत छी।"

हम हुनका पुछए चाहलिअनि जे दीपा के? मुदा ताहिसँ पहिने ओ आगू बढ़ि गेलाह । हम कनीकाल ओतहि ठाड़ रहि गेलहुँ। लोक अबैत-जाइत रहल । मुदा दीपेंदु नहि अएलाह । द्वारिपर ठाढ़ भेल-भेल मोनमे कोनादनि लागि रहल छल । आखिर आगू बढ़लहुँ । कनीके फटकी एकटा आटोरिक्सा भेटल । हम ओकरा रुकबाक हेतु इसारा करैत छी । आटोरिक्साबला पुछैत अछि-

“कतए जेबैक बाबा?”

“पुष्पविहार सेक्टर एक।”

“ओ! ”

“कतेक पाइ लेबहक।”

“चलू ने जे उचित हेतैक से दए देबैक ।”

आटोरिक्सा बलाकेँ मैथिलीमे बजैत सुनि हम बहुत आश्वस्त भेलहुँ । हम निधोख आटोरिक्सापर बैसि गेलहुँ । हम आटोरिक्सापर

बैसले छलहुँ कि लागल जेना केओ हाक दए रहल अछि। पाछू घुमि कए देखैत छी। दीपेंदु ओही महिलाक संगे ठाढ़ रहथि। हम आटोबलाकेँ रोकबाक प्रयास केलहुँ। मुदा ओ अपने धुनमे मस्त छल। आटोरिक्सा तेजीसँ आगू बढ़ि गेल।

आटोरिक्साबला गाना बजओलक-"कखन हरब दुख मोर हे भोला बाबा......."आ आटो चला देलक। हम मोने मोन सोचैत छी-ईहो पकिआ मैथिल बुझाइत अछि।

जेना ओ हमर मोनक बात बूझि गेल होअए।

ओ पुछैत अछि-

"अहाँक घर कतए भेल बाबा?"

"दरभंगासँ सटले।"

"कोन गाम?"

"हरिआरी"

"हमहूँ ओमहरेक छिऐक।"

"कोन गाम?"

रिक्साबला किछु नहि बाजल।

हमहूँ फेर नहि पुछलिऐक। थोड़बेकालमे पुष्पविहार सेक्टर एक आबि गेल। सड़कसँ सटले बामाकात हमर डेरा छल। हम आटोसँ उतरि तँ गेलहुँ मुदा आगू जाएब कोना? आटोबला ई बात बुझलक। हम ओकरा सीढ़ी दिस इसारा केलिऐक। पहिल तलपर स्थित हमर डेरा ओ पहुँचा देलक।

डेरा भम्ह पड़ि रहल छल। कतहु केओ नहि छल। आटोबला बात बूझि गेल।

“अहाँ एसगरे एहन हालतिमे कोना रहबैक?”

हम किछु उत्तर नहि दए सकलिऐक। की कहितिऐक? एकटा पर्चीपर अपन नाम,मोबाइल नंबर सभ लिखि देलक। हम ओहि पर्चीकँ सम्हारि कए राखि लैत छी। जाइत-जाइत ओ कहैत अछि-

“हमर डेरा लगीचेमे अछि। जखन कखनो काज होअए हमरा फोन कए देब।”

से कहि ओ चलि गेल। बड़ी काल धरि हम कृतज्ञतासँ ओकरा दिस तकैत रहलहुँ। फेर पर्चीमे लिखल ओकर नाम पड़ैत छी-“गंगा,ग्राम सकरबार ,जिला मधुबनी मोबाइल नंबर....२३४।”

आटोरिक्साबला चलि गेल। हम ओछाओनपर बैसल-बैसल सोचैत रहलहुँ। भने गामपर छलहुँ। ककरो पमौजी तँ नहि छल। कम सं कम अपन समाजक बीचमे रही। एहिठाम तँ केओ नहि। जँ मरिओ जाएब तँ लोककेँ पता नहि लगतैक। जहन एहन बात रहैक तँ शंकरकेँ हमरा बजेबेक नहि चाहैक छलनि। हमरा जँ ओ बजेबो केलाह तँ हुनकर बात मानक नहि चाहैक छल। कम सँ कम गाममे एहन हालति तँ नहिए होइत। मुदा आब की करी? जखन आबिए गेल छी तँ अपना मोने वापसो नहि जा सकैत छी। किछु दिन रहि जाइ। हुनका लोकनिकेँ वापस आबए दिअनि। ओना तँ कहि गेल रहथि जे तीन-चारि दिनमे गोआसँ लौटि जेताह। पहिनेसँ टिकट कटल रहनि।

तँ गेनाइ अनिवार्य छनि नहि तँ सभटा टाका बुरि जेतनि । हबाइ जहाजसँ होटल धरि सभटाक ओरिआन कएल छनि । हम कहनो रहिअनि-"हम तँ अहाँक कहलेपर आएल रही । जँ अहाँसभकेँ कतहु जेबाक रहए तँ पहिने कहि दितहुँ । हम बादमे अबितहुँ किंवा जे करितहुँ।"

मुदा ओ चुप रहि गेलाह । भोरमे ओ सभ गेलाह आ दुपहरिआमे हमर हारनिआ उतरि गेल । दर्दसँ छटपट कए रहल छलहुँ। कहि नहि के आ कोना हमरा अस्पताल लए गेल?

हम इएहसभ सोचि रहल छलहुँ कि खटके अबाज भेल। केओ केबार लग ठाढ़ छल । हम किछु पुछितिएक ताहिसँ पहिने एक बेर फेर खट-खटक अबाज भेल । केबार खुजले रहैक । ओ आदमी बिना कोनो प्रतीक्षाकेँ अन्दर आबि गेल ।

"दीपेंदु... ।"- हम बजैत छी ।

"हम तँ थोड़बे कालमे वापस आबि गेल रही । ताबतेमे अहाँकेँ एकटा आटोरिक्सापर चढ़ैत देखलहुँ । हम बहुत हल्ला केलहुँ। मुदा आटो ठाढ़ नहि भेल । आखिर हम अहाँक पाछू-पाछू बिदा भेलहुँ ।

"भेल जे नाहक अहाँकेँ परेसान कए रहल छी । संयोगसँ हमरा एकटा आटोबला तुरंते भेटि गेल । हमरे गाम दिसका लोक छल। ओएह एतए छोड़ि गेल ।"

"एहिमे परेसानीक कोन बात रहैक। हमरा तँ एतए अएबेक छल।"

"से कोना?"

"हमर डेरा एहि फ्लैटक पछुअतिमे अछि।"

"तँ की अहीं हमरा अस्पताल लए गेल रही?"

"नहि, नहि। हम तँ अस्पतालेमे रही।"

"से किएक?"

"सुनलिऐक जे दीपा दुखित अछि। ओकरे देखबाक हेतु गेल रही।"

"ओ अहाँक.।"

"ओ हमरे संगे काज करैत छथि। असलमे..."

"की?"

"हम, शंकर आ दीपा एकहि कार्यालयमे काज करैत छी।"

"हम तँ सुनने रहिऐक जे शंकरक पत्नी सेहो ओकरे संगे काज करैत छथिन।"

"पहिने काज करैत रहथिन। मुदा आब दोसर ठाम चलि गेलखिन।"

"मुदा हमरा अस्पताल के लए गेल छल?"

"से तँ हमरो नहि बूझल अछि। अहाँ एहिठाम असगरे कोना रहब?"

"मुदा उपाय की अछि?"

"हमरा डेरापर चलू । जखन शंकर आबि जेताह तँ चलि आएब ।"

"हम कतए-कतए जाएब? हमरा तँ गाम पहुँचा दितहुँ ।"

"शंकरकैं परोक्षमे गाम गेनाइ ठीक होएत?"

"ठीक-बेठीकक बात की करैत छी? जँ से बात होइतैक तँ हमरा एतए बजा कए ओ अपने कतहु किएक चलि जइतथि?"

दीपेंदु बहुत प्रयास केलाह जे हम हुनके संगे रहि जाइ आ जखन शंकर आबि जेताह तखन वापस एहिठाम चलि आएब। मुदा हमरा मोन नहि मानलक । हम कतहु नहि गेलहुँ ।

2

साँझ पड़ि रहल छल । हम सोफापर घसमोड़ि कए पड़ि गेल रही । भूखसँ छटपट कए रहल छलहुँ । घरमे केओ छल नहि जकरा किछु कहितिऐक । हारि कए अपने उठलहुँ आ लगीचेमे राखल फ्रीजमे सँ ब्रेड निकाललहुँ । जेना-तेना एक-दूटा ब्रेड खेलहुँ,पानि पिलहुँ आ सोफापर ओलड़ि गेलहुँ ।

थोड़े कालक बाद मोबाइल फोनक घंटी बाजल ।

"गोर लगैत छी बाबू ।"

"नीके रहह ।"

"कोना छी?"

“कोना की रहब । थोड़बे काल पहिने अस्पतालसँ वापस अएलहुँ अछि । संयोगसँ ओतए दीपेंदु भेटि गेल । रस्तामे अपने ओहिठामक आटोबला भेटि गेल । ओएहसभ जेना-तेना डेरा धरि वापस अनलक ।”

“एतेक जल्दी की भए गेल? हमसभ बिदा होइत रही तखन तँ अहाँ केहन बढ़िआँ छलहुँ ।”

“जे भेल, से भेल । आब हमरा अपन गाम पहुँचा दएह । हमरा एहिठाम मोन नहि लागि रहल अछि ।”

“एतेक जल्दी केना चलि जाएब । हमसभ वापस आबि रहल छी। ताधरि दीपेंदुकेँ अहाँक देखभाल हेतु कहिए देने छिऐक।”

“ओ तँ अपना भरि हमर मदति केबो केलक आ कइए रहल अछि । मुदा तूँ छह कतए? फोनमे तँ चिन्हल अबाज सुना रहल अछि।”

“ठीके बुझलिऐक । गाम आएल छी । ओकीलक अबाज सुनने हेबैक ।”

“सएह तँ कहि रहल छिअह । मुदा तूँ तँ कहने रहह जे गोआ जा रहल छी ।”

“गोआक उड़ान अचानक रद्द भए गेलैक । तेँ भेल जे जखन निकलिए गेल छी तँ गामे सँ भेने आबी ।”

“मुदा गाम जेबाक एहन कोन ताहिरी रहैक? ओहुना तूँ तँ गाम सालक-साल नहि अबैत छलह ।”

"सभटा बात फोनेपर कए लेब। हम आबिए रहल छी। तखन निचैनसँ गप्प करब।"

"हमरा मोनमे तरह-तरहक चिंता भए रहल अछि। तूँ फोन ओकीलकेँ दहक। हम ओकरासँ गप्प करए चाहैत छी।"

तकर बाद फोन कटि गेल। हम एकसर डेरामे छटपट करैत रहि गेलहुँ।

3

आइ दू दिन भए गेल। शंकर वापस नहि अएलाह। हम असगरे फ्लैटमे हुनकर प्रतीक्षा कए रहल छी। धन कही ओहि आटोबलाकेँ जे हमर जान बाँचल अछि। ओएह भोर-साँझ हाल-चाल पुछि जाइत अछि। जलखै-भोजन अपने ओहिठामसँ लेने अबैत अछि। दबाइ-दारूक जोगार सेहो करैत अछि। हम ओकरा कैक बेर कहबो केलिऐक जे तूँ एतेक किएक परेसान छह ? मुदा ओहो अछि अपन धुनक पक्का। कहलक-

"अपने सन-सन बूढ़क सेवा तँ भाग्ये सँ भेटैत छैक।"

हम ओकर विचार सुनि अबाक भए गेल रही। दोसर दिन साँझमे जखन ओ झोरामे बहुत रास चीज-वस्तु लेने आएल रहए तँ हम बहुत उदास पड़ल रही। ओ हमर मनोदशाकेँ बूझलक। बड़ीकाल धरि हमर पैर जाँति देलक। कतबो कहिऐक जे तूँ जाह। ओ सुनबे नहि करए। बात-बातमे ओएह कहलक जे दीपेंदु एकटा महिलाक

संगे काल्हि अस्पताल गेल छल। हमरा आब बुझाएल जे ओ किएक नहि देखा रहल छल। हम कैक बेर आटोबलाकेँ किछु टाका देबाक प्रयास केलिऐक। मुदा ओ बहुत भावुक भए जाइत छल। कहलक-

"अहाँ अनमन हमर बाबा सन छी। अहाँसँ गप्प करैत छी तँ हमरा ओएह मोनमे बसि जाइत छथि। तँ हमरा अहाँकेँ सेवा केलासँ बहुत आनंद होइत अछि। जाबे जीबथि हम हुनका संगे गामे रहलहुँ। हुनकर इलाजक बहुत जोगार केलहुँ। ओहीमे सभटा खेत भरना पड़ि गेल। ओ बचबो नहि केलाह। तकर बाद गाममे कथी पर रहितहुँ। दिल्ली चलि अएलहुँ। तहिआसँ एतहि छी। एहिठाम इज्जतिसँ जीबि रहल छी। परिवारो संगे रहैत अछि। मुदा गामक कचोट तँ रहिते अछि। अहाँ भेटलहुँ तँ जेना मोनमे उत्साह भेल। भेल जे अपन गाम-घरसँ फेरसँ जुड़ि गेल छी।"

हम आटोबलाक बात सुनि कए अबाक रही। एहनो लोक सहरमे होइत छैक से नहि बूझल छल। हम तँ अपन शंकरकेँ देखैत छिअनि। जाबे एहिठाम नहि आएल रही दिन-राति फोन करैत-करैत तंग केने रहथि। जखन हुनकर बात मानि कए एहिठाम अएलहुँ तँ ओ स्वयं कतहु चलि गेलाह। बेसक हम आटोबलाकेँ मना करिऐक मुदा ओएह रहए जे हमर जानो बाँचि रहल छल। हमरा खुआ-पिआ कए आटोबला चलि गेल। ओकरा जाइते हमरा निन लागि गेल।

थोड़बे कालक बाद घंटी बाजल। हम निनमे रही। जखन कैक बेर घंटी बाजल तँ हड़बड़ा कए उठलहुँ। केबार खोलैत छी। सामने शंकर ठाढ़ छलाह, असगरे।

केबार खोलबामे देरी भेलासँ ओ तंग भए गेल रहथि। कहैत छथि-

“सौंसे इलाका घंटी सुनने होएत। मुदा अहाँकँ कोनो असरे नहि होइत छल।”

“हमरा सुता गेल रहए। घंटी नहि सुनि सकलिऐक।”

“ईहो कोनो सुतबाक समय छैक?”-ओ तमतमाइत बजलाह।

के हाल पुछत? के अपन हाल कहत? उन्टे हुनकर भाषण सुनि रहल छलहुँ। तथापि चुप्पे रहि गेलहुँ। ओहो डेरामे अपन समानसभ राखए लगलाह। कपड़ा सभ बदललाह। हमरा मोनमे तरह-तरहक जिज्ञासा होइत छल। ओ असगरे किएक लौटलाह? कनिआ कतए रहि गेलीह? गामक की समाचार अछि? मुदा किछु पुछबाक साहस नहि होअए। ओ अबिते-अबिते तेना ने मुँह लटका लेलेथि जे आगू किछु करबाक माहौल नहि रहि गेल।

थोड़े कालक बाद फेर घंटी बाजल। शंकर बाहर निकलाह आ दूटा पाकिट लेने घुरलाह।

एकटा पाकिट हमरा लग राखि देलाह। हम पुछैत छिअनि- “की छैक?”

"पिज्जा"

"एकर की होइत छैक?"

"ई अहाँक भोजन अछि ।"

"ऐँ?"

डिब्बामे भोजनक कल्पनो नहि केने रही। हम गुनधुनमे रही जे की करी। भोजन तँ हमरा आटोबला करा गेल रहए। भूख रहए नहि । हम हुनका से बात कहलिअनि । आटोबलाक नाम सुनिते हुनका जेना देहमे आगि लागि गेलनि। चिकरि कए कहैत छथि-

"ई सहर छैक। जकरा-तकरा एना घर घुसाएब बहुत महग पड़ि सकैत अछि ।"

"मुदा ओ तँ अपने दिसका अछि। हमरा बहुत सेवा केलक अछि। ओ नहि रहैत तँ कहि नहि हमर हालति की रहैत?"

"दूए दिनमे अहाँक हालतिकेँ की भए गेल जे अपरिचित व्यक्तिक शरण लेबए पड़ल । ई कोनो गाम नहि छैक । एहि ठाम तरह-तरहक फसाद होइत रहैत छैक । एनामे तँ जानो जा सकैत अछि ।"

हमर मोन बहुत दुखी भए गेल रहए। आब आओर सुनबाक स्थिति नहि रहए। ठामहि ओंगठि गेलहुँ। कहि नहि कखन सुता गेल।

4

प्रात भेने फेर आटोबला आएल। हमरा लेल जलखै,चाह लेने आएल छल। सीढ़ीपर चढ़ैत काल ओकरा शंकर भेटलखिन।

“तूँ के छह?”

“हम गंगा-आटो चलबैत छी।”

“ओ तँ तूँहीं हमर फ्लैटक चक्कर लगा रहल छह?”

“फ्लैटक चक्कर नहि लगा रहल छी। एहिठाम बूढ़ा एकसरे रहैत छथि। हुनके सेवामे लागल छी।”

“जरूर किछु बात हेतैक जे तूँ पछोड़ कए रहल छह। चुपचाप खसकि जाह। बड़ा चललाह अछि सेवा करए।”

“अहाँकेँ एना नहि बाजक चाही। एतेक वयोवृद्धकेँ अहाँसभ असगरे छोड़ि कए चलि गेलिअनि से नहि सोचाइत अछि। उल्टे हमरापर तामस उतारि रहल छी।”

“हम की केलहुँ आ की करब ताहिमे तोरा पंचैती करबाक हेतु के कहलकह? अपन काजसँ मतलब राखह आ चुपचाप खसकि जाह। नहि तँ.. ”

“नहि तँ की करबैक?”

“केहन जमाना आबि गेल। ने जान ने पहिचान आ से बनल मेहमान। जँ जानक काज होअए तँ तुरंत एहिठामसँ घसकि जाह आ दोबारा एमहर अएबाक प्रयास नहि करिअह।”

सीढ़ीपर हल्ला सुनि कए हम बाहर अएलहुँ। आटोबला संगे शंकरकेँ बकझौं करैत देखलिअनि।

मोनमे बहुत दुख भेल। रहल नहि गेल।

“एना किएक कए रहल छह? ओ तँ बहुत नीक लोक अछि। अपने गाम दिसका अछि। हम असगर रही तँ जी-जानसँ हमरा सेवा केलक। नहि तँ हमर की हाल रहैत से नहि कहि सकैत छी। ओकरा धन्यवाद करबाक बदलामे तूँ फज्झति कए रहल छह। ई तँ घोर अन्याय थिक।”

“चुप रहू। अनेरे सभ बातमे टपर-टपर नहि करू। इ सहर छैक। ककरो माथपर नहि लिखल छैक जे ओ असलमे की अछि। तेँ सावधानी राखए पड़ैत छैक।”

आखिर आटोबला चलि गेल। हम बड़ीकाल धरि ओकरा देखैत रहि गेलहुँ।

थोड़े कालक बाद हम वापस सोफापर बैसि गेलहुँ। होइत छल जे चोट्टे गाम वापस भए जाइ। पाछू लागल शंकर सेहो अबैत छथि। हमरा गुनधुनमे देखि बजैत छथि-

“गामोमे आब लोक ककरोसँ मतलब नहि रखैत छैक। सभ अपन-अपन दलानपर चुक्कीमाली बैसल रहैत अछि। सहरमे तँ सभ दिनसँ लोक अलगे रहैत अछि। मुदा कहि नहि अहाँकेँ की भए गेल अछि? दू दिन अएला नहि भेल आ एतेक फसाद बेसाहि लेलहुँ। दुइए

दिनमे अहाँकेँ हारनिओ उतरि गेल,अस्पतालो जाए पड़ल,ककरा-ककरासँ दोस्ती भए गेल । ऐनामे जिनगी कोना चलत?”

हमरा रहल नहि गेल । हम चिचिआ उठलहुँ-

“खबरदार! यदि एक शब्द आओर बजलह तँ खैर नहि छह। एकरा जिनगी बाँचब कहैत छैक । ई तँ नर्कोसँ बढ़ि कए अछि । जीविते मृत्यु अछि ।”

हमर तामस देखि शंकर घबड़ा गेल । ओकरा उम्मीद नहि रहैक जे हम ओहुना चिचिआ सकैत छी,सेहो ओकरे डेरापर । ओ आगू किछु नहि बाजल । हमर रक्तचाप बहुत बढ़ि गेल छल । लागए जेना माथ फाटि जाएत । तत्काल मोन पड़ल जे आइ रक्तचापक दबाइ खेबे नहि केलहुँ अछि । झोरामे सँ दबाइ निकाललहुँ । जेना-तेना दबाइ खेलहुँ,पानि पिलहुँ आ सोफेपर पड़ि रहलहुँ । असलमे भोर-साँझ आटोबला अबैत रहैत छल । ओएह दबाइओ दैत छल । मुदा आइ तँ ओ सीढ़ीएपर सँ घुरि गेल।

सोफापर बैसले-बैसल तरह-तरहक बातसभ सोचाइत अछि। “शंकरक माए आ हम केना दिन-राति हुनका संगे खेलाइत रहैत छलहुँ । केना हुनकर एक-एक इच्छा पूरा करबाक हेतु जान लगा दैत छलहुँ । केना एकदिन इसकुलमे खसि पड़ल रहथि तँ हम दौगल रही । गामक लोकसभ छगुन्तामे रहए । हम मास्टरकेँ कतेक फज्झति कए देने रहिऐक आओर सुनैत रहि गेल छल । मैट्रिकक परीक्षामे जहन ओ प्रथम श्रेणीसँ उतीर्ण भेल रहए तँ हम हनुमानजीकेँ

सवामोन लड्डू चढ़ओने रही आ सौंसेगाम लड्डू बँटने रही । जखन ओ इंजीनियरिंगमे नाम लिखओने रहथि तखन कतेक मोसकिलसँ हम टाकाक जोगार केने रही । चारिसालक हुनकर पढ़ाइमे कहि नहि हमरा कोन-कोन गति ने भेल,ककरा-ककरासँ ने टाका लेबए पड़ल । हमसभ सहैत रहलहुँ-सहर्ष । हमरा विश्वास छल जे शंकर जहिआ नौकरीमे आबि जेताह तहिआ सभ दुख बिला जाएत । गाममे फेर हमरे डंका बाजत । सभ हमरे खुसामद करत।"सोफापर बैसले-बैसल हमर आँखिसँ नोरक धार बहए लगैत अछि । हम जेना अर्द्धमुर्छित अवस्थामे पहुँचि जाइत छी । एही हालमे कहि नहि हम कखन सोफेपर सुति जाइत छी ।

शंकरकेँ आफिस जेबाक समय भए जाइत छनि । ओ हमरा सुतले छोड़ि आफिस चलि जाइत छथि । डेरा एक बेर फेर सुन्न भए जाइत अछि । दुपहरिआमे हमर निन टुटैत अछि । भूखसँ पेटमे दर्द भए रहल छल । सामने टेबुलपर रतुका पिज्जा ओहिना डिब्बामे बंद रहैक । हम ओहि डिब्बाकेँ खोलैत छी । लसफस करैत पिज्जाकेँ मुँहमे धरैत छी । लहसुन-पिआजु आ कहि ने की-की सँ परिपूर्ण पिज्जाक स्वाद बहुत नीक लगैत अछि। सभटा पिज्जा देखिते-देखिते खा लैत छी । फ्रिजमे सँ ठंढा पानिक बोतल निकालि गिलासमे ढारि लैत छी आ सौंसे गिलास पानि गटर-गटर पीबि लैत छी । तकरबाद मोन कने आश्वस्त होइत अछि । आटोबला मोन पड़ैत अछि । ओकरा संगे शंकरक दुर्व्यवहारसँ हम बहुत दुखी रही। मोन भेल जे ओकरा फोन

करी। कम सँ कम माफी मांगि ली । हम ओहि पर्चीमे सँ आटोबलाक मोबाइल नंबर निकालि ओकरा फोन लगबैत छी । दू सँ तीन बेर घंटी बाजल होएत की ओ धर दए फोन उठा लेलक। बजैत अछि-

“गोर लगैत छी बाबा ।”

“नीके रहह । कोना छह?”

“हम तँ ठीके छी । अपन हाल कहू।”

“अपन हाल की कहिअह? शंकर तोरा संगे नीक व्यवहार नहि केलथि । से जानि बहुत दुखी छी ।”

“की करबैक । जे भेलैक, से भेलैक । अहाँ एहि बातसभपर बेसी नहि सोचू । जाबे अहाँ एहि ठाम छी हमरा मौका भेटत तँ हम फेर अएबे करब । तकर बाद हमरा हुनका सँ की लेना-देना? ओना हम हुनका नीकसँ जनैत छिअनि।”

“से की?”

“जाए दिअ । की-की बूझब । बहुत कष्टमे पड़ि जाएब ।”

ताबतेमे घरक घंटी बाजल । हम फोन राखि देलिऐक आ केबार खोलबाक हेतु आगू बढ़लहुँ ।

5

दुपहरिआमे डेराक घंटी बाजल । हम औंघाइत रही । अकचका गेलहुँ । जाबे उठी-उठी ताबे तँ तरातर-तरातर कैक बेर घंटी बाजि गेल ।

“खोलि रहल छी ।”

हम ससरि कए केबार लग जाइत छी । केबार खोलबाक प्रयास करैत छी । ताबे बाहरसँ महिला स्वर सुनाइत अछि।

“केबार खोलबामे एतेक समय किएक लागि रहल अछि? अहाँ की कए रहल छी? ”

“की करब, सुता गेल रहए ।”

केबार खोलि दैत छिऐक । केबार खोलिते निशाकेँ देखैत छी। गोर-नार छओ फुटक धुआ । सुट-बुट पहिरने। बड़का-बड़का आँखि ,चाकर ललाट । तामससँ लगैत छल जेना मुँहसँ बल दए खून बाहर भए जेतनि । हम केबार लगसँ सहटि जाइत छी । मुदा ओ अखनहु तमसाएले बुझाइत छथि ।

“अहाँसभ सहरमे रहए जोकर लोक नहि छी । एतेक कालसँ हम बाहर रौदमे ठाढ़ि छी, घंटीपर घंटी बजा रहल छी। मुदा अहाँकेँ कोनो असरिए नहि होइत अछि ।”

हम निशाकेँ सुनैत रहि जाइत छी । पहिल बेर हुनका देखि रहल छी । सुनने रहिऐक जे बहुत पढ़ल-लिखल आ विचारवान छथि।

कोनो निजी कंपनीमे बड़का पदपर छथि। मूलतः केरलक छथि मुदा हुनकर परिवार बहुत दिनसँ दिल्लीमे बसि गेल छनि। शंकरक कालेजमे संगे पढ़ैत छलखिन। ओतहिसँ दुनूगोटेमे प्रेमक स्फुटन भेलनि जे कखन गाछ बनि गेलनि से नहि कही। एकहिटा बेटा छलाह। सोचने रही जे ई करब,ओ करब। सभटा सेहेंता धएले रहि गेल। तथापि संतोष केलहुँ जे कम सँ कम पढ़ल-लिखल पुतहु भेलथि। विचारवान हेतीह। मुदा अजुका दृश्य देखि-सुनि लगैत अछि जे सभटा सपने छल। कम सँ कम किछु धाख तँ करबाक छलनि। पहिल बेर ससुरसँ भेँट भेल रहनि। हम तँ अपने लाजे कठौत भेल रही। मुदा ओ.....। बाजब शुरू केलीह से बजिते रहि गेलीह। कोनो आदि-अंत नहि।

निशा अपन शयनकक्षमे चलि जाइत छथि। मोबाइल फोन निकालैत छथि आ शंकरकेँ फोन करैत छथि।

"हम एहि जाकर आदमी संगे एकदिन नहि रहि सकैत छी।"

“से की भेलैक?”

“हेतैक की। एकरा तँ कनिको समझ छैके नहि। एहनो मनुक्ख होइत छैक से हम नहि सोचि सकल रही।

“भेलैक की?”

“एतेक रौदमे हम कोठरीक बाहर ठाढ़ि छलहुँ, घंटीपर-घंटी बजबैत रहलहुँ। मुदा ओ सुतल छलाह। कोनो असरे नहि। एहि बएसमे एहन मोट निन। सोचिओ नहि सकैत छी।”

"थोड़े दिनक बात छैक। गामक जमीन जायदादकेँ खटिआ देबैक। तकर बाद जतए जेबाक हेतनि जेताह। हम कोनो ठीका लेने छिअनि। जखन मनुक्ख छथिहे नहि तखन...।"

"से तँ बुझलहुँ। मुदा एहन ने होअए जे अहाँक बाप ठामहि रहि जाथि आ हमही खटिआ जाइ।"

"जाए दिअ। एहनो केओ बजैत अछि। बेसी सँ बेसी मास दिन नहि तँ दू मास। ओतबे दिनमे सभटा ठीक भए जेतैक। एहि बीचमे हमरासभकेँ बुधिआरीसँ रहबाक होएत। बूढ़ा कहीं बदकि ने जाथि, से देखब।"

"मुदा दू माससँ एकदिन बेसी हम हिनका नहि सहि सकब। से साफे सुनि लिअ। बादमे हमरा नहि कहब।"

"अहाँ निश्चिंत रहू। एमहर गामक काज भेल आ ओमहर हिनका वृंदावन जेबाक ओरिआन भए जेतनि।"

हम दोसर कोठरीमे सोफापर बैसल फोनमे भए रहल वार्तालापकेँ सुनैत रहलहुँ। रोंआ ठाढ़ भए गेल। देह-हाथ काँपए लागल। मोने-मोन सोचाइत छल-

"सएह कहू। केहन भारी साजिस केने अछि ई छौंड़ा। हम तँ गामसँ डेग बाहर धरै नहि चाहैत छलहुँ। मुदा असगर रहैत-रहैत तंग भए गेल रही।"

भेलैक ई जे हुनका संगे चारूधामक यात्रापर गेल रही। गामक बहुत रास लोकसभ जाइत रहैक। ओ बहुत जोर देलथि।

“चलू हमहूँ सभ तीर्थ कए अबैत छी। जीवनक कोन ठेकान। नीक काज जखने भए जाए सएह भाग्यक बात। अखन मौका अछि। गामक लोकसभ संगे रहत। बादमे के देखलक अछि।”

“बात तँ सही कहि रहल छी। अखन तँ चलिओ फिरि लैत छी। बादमे ताहु जोकर रहब की नहि से के जनैत अछि?”

“सएह तँ कहैत छी।”

दुनूगोटे तैयारीमे लागि गेलहुँ। लगपासक कैकगोटे संगे जा रहल छलाह। तेँ बेसी चिंताक बात नहि रहैक। शंकरकेँ जखन पता लगलनि ताधरि हमसभ गामसँ निकलि चुकल रही। ओ अपना भरि बहुत प्रयास केलथि जे हमसभ घुरि जाइ। “मौसम ठीक नहि चलि रहल छैक। कहाँदनि मौसम विभाग चेतौनी देलकैक अछि जे किछुदिनमे पहाड़पर अनर्थ भए सकैत अछि।” मुदा हमसभ हुनकर बातपर ध्यान नहि देलहुँ आ अपन रस्ता चलैत रहलहुँ। बहुत दिनक बात लागल जेना एकटा नवीन जीवन जीबि रहल छी। भोरे उठी। स्नान-ध्यान कए आगूक यात्राक ओरिआनमे लागि जाइ। चलैत-चलैत हमसभ गंगोत्री पहुँचलहुँ। हुनकर प्रसन्नताक तँ अंते नहि रहनि। जेना आनंदक वर्षा भए रहल छल। चारूकात बर्फ खसि रहल छलैक। ठंढसँ हाथ-पैर जाम भए गेल छल। धुंध ततेक भयानक छल के एकहाथ फटकी नहि देखा रहल छल। हम तँ फटकिएसँ गंगाकेँ प्रणाम कए बैसि गेलहुँ। मुदा ओ नहि मानलीह। एहनो मौसममे गंगा स्नान करए चलि गेलीह। गंगाक पानि बहुत ठंढा छल।

कहुना कए स्नान केलीह । तकरबाद डिब्बामे गंगाजल भरए लगलीह। हुनकर हाथ सर्द भए गेल रहनि। देहक संतुलन गड़बड़ा गेलनि । देखिते-देखिते पानिक तेज बहावमे ओ कतएसँ कतए चलि गेलीह। हम कातमे ठाढ़ देखैत रहि गेलहुँ। मुदा किछु नहि कए सकलहुँ । लोकसभ हाहाकार करैत रहि गेल । मुदा ककरो साहस नहि भेलैक जे गंगामे हुनका निकालबाक प्रयास करए । थोड़बे काल मे ओ अदृश्य भए गेलीह । हम छटपटा कए रहि गेलहुँ । घंटो असहाय भेल कनैत रहि गेलहुँ । लगपासमे लोकसभकेँ गोहार लगबैत रहि गेलहुँ । मुदा केओ किछु नहि कए सकल । पंडासभ कहए लागल- “हुनकर तँ अहो भाग्य । हुनका गंगा लाभ भेलनि । एहन मृत्यु तँ सभकेँ होउ। हम तीनदिन ओतए रहि गेलहुँ । मुदा किछु नहि भेल। आब हेबो की करैत? तकर बाद असगर वापस विदा भेलहुँ । गौआँसभ आगू बढ़ि गेलाह । हमरा साहस नहि रहि गेल जे आगू तीर्थ यात्रा करी । जेना-तेना पन्द्रह दिनक बाद गाम वापस आएल छलहुँ की शंकरक फोन आएल । एहि दुर्घटनासँ ओ बहुत आहत बुझेलाह। हमरा वारंबार आग्रह केलथि जे दिल्ली आबि जाइ । असगर गाममे रहब ठीक नहि । हम आहत तँ रहबे करी । हुनकर बात मानि दिल्ली आबि गेलहुँ । आबि तँ गेलहुँ । मुदा एहिठाम तँ हाले बेहाल अछि ।

6

साँझमे शंकर डेरा अएलाह। हुनकर पाछू लागल निशा सेहो अएलीह। दुनूगोटे हमरा लग सोफापर बैसि जाइत छथि। शंकर पुछैत छथि-

“कोना छी बाबू?

“की रहब? हमर मोन एहिठाम नहि लागि रहल अछि। कहुना गाम पहुँचा दएह।"

“से किएक?”

“सभ दिन गाममे उन्मुक्त वातावरणमे रहलहुँ। केओ ने केओ भेटैत रहैत छल। एहिठाम एसगर एकटा कोठरीमे बंद पड़ल रहैत छी। ने ककरोसँ भेँट ने गप्प-सप्प। एनामे तँ पागल भए जाएब।”

“अहाँ चिंता नहि करू। थोड़े दिनक बाद हमसभ नव मकानमे चलि जाएब। जमीनपर तीनतल बनल मकान सस्तेमे भेटि रहल अछि। ओहिठाम गामे जकाँ सभटा सुविधा रहतैक। अफरात रौद-हबा, शुद्ध भोजन आ अपना दिसका लोकसभ सेहो भेटत। अपना सभ दिसक बहुत लोक ओहि लगपासमे रहैत छथि।”

“कतेक दाम लगतह?”

“अहाँ तकर चिंता किएक करैत छी। हमसभ सभटा जोगार कए लेबैक। थोड़ बहुत घटतैक तँ गामसँ समाबेस कएल जेतैक।”

“गाममे कतएसँ टाका आओत। ओहिठामक जमीनक केओ किननाहर नहि भेटत आ जँ केओ भेटिओ जाएत तँ गरजू बूझि औने-पौने दाममे चाहत जे कीनि ली। फेर अखन तँ हम जीबिते छी। जाबे हम छी ताबे गामक चीज-वस्तुकेँ बचओने रहब ठीक होएत। जीवनक कोन ठेकान थिक? कतेक दिन जिअब? ”

“तेँ ने फैलसँ घर लए रहल छी। जतए मोन होएत, जेना मोन होएत रहब। कोनो चीजक कोनो कमी नहि रहत।”

“कतेक दाम लागि रहल छह?”

“तीन करोड़मे बनल-बनाएल जमीनपर तीन तल मकान छैक। एक करोड़ तँ हमसभ जेना-तेना दए देबैक। एक करोड़ कर्जो भेटि जाएत। रहि गेल एक करोड़, से तँ गामोसँ निकलि जाएत।”

“गाम-गाम रटलासँ किछु नहि होएत। फेर गामक चीज-वस्तु कोनो तोरे थोड़े हेतह। आब समय बदलि गेलैक अछि। कानून बदलि गेलैक अछि। बेटा-बेटीक पैतृक संपत्तिमे बरोबरिक हक हेतैक। जतबे तोहर हिस्सा हेतह ततबे हीराक हेतैक। मुदा ओ सभ तँ बादक बात भेल, अखन तँ हम स्वयं जीबि रहल छी।”

हमरा मुँहसँ हीराक नाम खसिते शंकरक देहमे आगि लागि गेलैक।

“अहाँकेँ तँ खाली हीरा मोन पड़ैत रहैत अछि। जेना हम अहाँक केओ हेबे नहि करी। जखन मोन एहन अशुद्ध अछि तखन शांति भेटत कोना?”

“हम तँ अहाँकेँ पहिने कहैत रही जे अहाँ हिनकर चक्करमे नहि पड़ू । मुदा अहाँ तँ अपने दुनिआमे रहैत छी । आब लिअ। जेहो टाका छल सेहो फँसा लेलहुँ । केहन बढ़िआँ केन्द्रीय विहारक फ्लैट देखने रही । जतबे टाका अपनासभक लग छल ओहीमे सभटा काज भए जाइत । दुनूगोटे चैनसँ रहितहुँ । मुदा अहाँकेँ तँ सदिखन गाम आ पिताश्री सोचाइत रहैत छथि । तखन लिअ । आब तँ गेल महीष पानिमे परड्ड समेत ।”- निशा बाजलि।

“तूँ सभ जे एतेक अड़-बड़ बाजि रहल छह तकर निहितार्थ हम बूझि रहल छी । हम कोनो बौक-बहिर नहि छी । मुदा हम जाबे जिअब ताबे बाप-दादाक निसानीकेँ नहि मिटा सकैत छी । चाहे जान रहए की जाए ।”

“जैँ एहन वुद्धि अछि तेँ ने एहन गति अछि । गाममे केओ मोजरो करैत अछि । कहिओ टगि जाएब केओ लहासो उठओनिहारो नहि भेटत । देआद देआदे होइत छैक ।”

“से जे होएत । हम आब एहिठाम एक मिनट नहि रहि सकैत छी । हमरा तुरंत गाम वापस लए चलह । नहि तँ... ”

“नहि तँ की करब? हमर जान लए लेबह की? ”

“अहाँ बेकारे हिनकासँ मुँह लगबैत छी । गामक जमीन कोनो हिनके तँ छनि नहि । हमरो लोकनिक अधिकार अछि । हमसभ अपन हिस्साकेँ जे मोन होएत से करब । हिनकासँ पुछबाक कोन काज? -निशा बजैत अछि ।”

"गाममे रहए की? जेहो किछु रहए से भरना राखल छल। हम अपन छोटेसन नौकरीसँ सभटा भरना छोड़ेलहुँ। साले-साल जमीन कीनलहुँ। गाममे घर बनेलहुँ। तोरा आ हीराकेँ पढ़ओलहुँ। कन्यादान केलहुँ। तखन आब किछु कहबैत छी। तूँ सभ की केलह अछि जे अधिकार सुना रहल छह।"

क्रमश: माहौल गरमाइते गेल। हमरा ततेक जोर तामस भेल जे लागए जे माथ फाटि जाएत। रक्तचाप आकाश लागि गेल। हमर हालति खराप होइत देखि निशा केबार खोलि कतहु चलि गेलि आ शंकर दोसर कोठरीमे कार्यालय जेबाक तेयारीमे लागि गेल। हम बेहोस सोफापर पड़ल रहलहुँ।

7

रातिमे भुखले सुति रहलहुँ। टेबुलपर निशा हमर भोजन राखि देने रहथि। हम ओमहर तकबो नहि केलहुँ। असलमे खेबाक मोनो नहि होइत छल। ओ दुनूगोटे भोजन केलाह आ अपन कोठरीमे चलि गेलाह। हमरा सुतल देखि ओ सभ निचैन आपसमे गप्प-सप्प करैत रहलाह। संयोगसँ थोड़बे कालमे हमर निन टुटि गेल। भूख लागि गेल छल। मुदा भोजन करए नहि चाही। ओतेक रातिमे की खटपट करितहुँ? । भेल जे भोरे जल्दीए उठि जाएब। तखन देखल

जेतैक। एमहर शंकर आ निशाक मुँहे बेरि-बेरि अपन चर्चा सुनि कान ठाढ़ भेल।

“हम तँ अहाँकेँ पहिने कहने रही जे ई बूढ़ आसानीसँ रस्तापर नहि आओत। तँ अहाँकेँ विश्वास नहि होअए। सभ दिन एतबे बात कहैत रहलहुँ जे हम तँ असगरे भाइमे छी। सभ किछु हमरे अछि। आब बुझलिऐक ने। बूढ़ा अपन बेटीकेँ पटिदार बना कए राखि देलाह।”

“अहाँ बहुत जल्दी अगुता जाइत छी। हम सभ बातक समाधान सोचने छी। बूढ़बाक किछु नहि चलतैक।”

“की समाधान सोचने छी? कनी हमहूँ बुझिऐक।”

“ओकीलसँ कागज-पत्र बनबा रहल छी। काल्हि सभटा तैयार भए जेतैक। तकर बाद.”

“तकर बाद की?”

“बूढ़ाक औंठा निसान कल्हुका रातिमे लगबा देबैक। बात खतम। एहि लेल अनेरे परेसान किएक रहब?”

“से ओ औंठा निसान लगबए देत? एतेक सोझलोक तँ नहि बुझा रहल अछि।”

“ई सभ चिंता हमरा पर छोड़ि दिअ।”

ओकरा लोकनिक आपसी वार्तालाप हम सभटा सुनलहुँ। भय आ चिंतासँ सौंसे देह काँपि रहल छल। देहक रोंआसभ ठाढ़ भए गेल छल। माथा सोचनाइ बंद कए देलक। बुझेबे नहि करए जे की

करी?मोन होअए जे जोरसँ चिकरी । ततेक जोरसँ जे सौंसे मोहल्लाक लोकसभ जमा भए जाए । थाना-पुलिसमे फोन कए दिऐक। तरह-तरहक बातसभ मोनमे अबैत-जाइत रहल । हम थोड़े काल ओहिना कान पथने रहलहुँ। ओकरसभक आपसी गप्प बंद भए गेल । थोड़बे कालमे ओकरासभक फोंफ कटबाक अबाज आबि रहल छल । निस्तव्ध रातिमे ओहि कोठरीमे हम असगरे जागल सोचि रहल छलहुँ जे एहिठामसँ जान बँचा कए कोना घसकी। मोनमे डर होअए जे एतेक रातिमे कतए जाएब ? जँ नहि जाएब तँ काल्हि भेने कहि नहि की-की भए जाएत? । भए सकैत अछि जे जबरदस्ती वा सुतलेमे ओकीली कागजपर हमर औंठा निसान लए लेल जाए आ हम सदा-सर्वदाक हेतु कंगाल भए जाइ। इएह सभ सोचैत-सोचैत हम उठि कए ठाढ़ भए गेलहुँ । हमरा लागल जेना सौंसे देहमे करेंट लागि गेल अछि । हम अपन कुरता पहिरैत छी ,झोरा कान्हमे लटकबैत छी आ केबारक कुंडी स्थिरेसँ खोलि कोठरीसँ बाहर भए जाइत छी । बाहर कतहु केओ नहि छल। दुपहर रातिमे के रहैत आ किएक? लगीचमे मेनरोड छल । हम रोडक ओहिकात चलि जाइत छी । सामने कनीक फटकी बस स्टैंड लग एकटा आटो ठाढ़ देखाएल । हम सहटि कए ओकरा लग जाइत छी ।

“एतेक राति कए अहाँ असगरे सड़कपर की कए रहल छी?”-ओ हमरा पुछैत अछि ।

“ओ गंगा! एखन धरि एतहि छह।”

“गर्मीक मौसममे रातिमे आटो चलाएब बेसी सुविधाजनक रहैत छैक। टाका सेहो बेसी भेटैत छैक। दिनमे ततके रौद भए जाइत छैक जे आटो चलाएब बहुत मोसकिल भए जाइत छैक। मुदा अहाँ अखन एहिठाम की कए रहल छी?”

“पहिने एहिठामसँ निकलह। फेर ई सभ गप्प करब।”

“मुदा जेबैक कतए?”

“टीसन पहुँचा दएह। गाम चलि जाएब।”

“टिकट अछि।”

“टिकट कतएसँ आएत?”

“मुदा बिना टिकटक ट्रेनपर चढ़बैक कोना? जँ पकड़ा गेलहुँ तँ जहल जाए पड़त।”

“तखन...”

“अखन हमरा ओहिठाम चलू। हमहूँ गाम जाएबला छी। टिकटक जोगार नहि भए रहल अछि। तेँ रुकल छी। गर्मीमे टिकट भेटब मोसकिल रहैत छैक। दलालकेँ कहने छिऐक। ओकरेसँ अहूँक टिकट बनबा देब। तखन दुनूगोटे संगे चलब।”

हमरा गंगाक विचार ठीक बुझाएल। ओहुना हमरा सहरक कोनो अंदाज नहि छल। टिकटक ओरिआन के करैत? भने गंगा भेटि गेल छल। हम ओकर आटोपर बैसि जाइत छी। गंगाक आटो तेजीसँ आगू बढ़ि जाइत अछि।

आटोपर बैसल हम गंगाकेँ देखैत रहि जाइत छी। गंगाक बएस चालीसक आसपास रहल होएतैक। मोछ-दाढ़ी बड़ी-बड़ीटा छलैक-जेना सालोंसँ काटल नहि गेल होइक। गोटे-गोटे केस पाकि गेल रहैक। रंग पिंडस्याम,मुँह नमगर धुआ छोट। देहमे फाटल गंजी आ नीचाँ पुरानसन लुंगी। इएह छलैक ओकर बगए। मुदा बोलीमे बेस ठसक रहैक ओकरा। विचारसँ बेस परिपक्व लगैत छलैक। लगबे नहि करैत जे कोनो औंठाछाप आदमीसँ गप्प कए रहल छी। आटोपर जाइत-जाइत हम ओकरे बारेमे सोचैत रहि गेलहुँ। बुझेबे नहि करए जे कोन जन्मक हमर ऋण ओ चुका रहल अछि। जकर से करबाक छलैक,जकरा बले हम दिल्ली सन महानगरमे पहिल बेर आएल रही,जे हमर एकमात्र पुत्र अछि से तँ दोसरे जोगारमे पड़ल छल। दोसर दिस छल गंगा जे एहि महानगरमे हमरा संगे ठाढ़ भए गेल छल। थोड़बे कालमे आटो एकटा खोपड़ी लग ठाढ़ भेल। हम आटोसँ उतरि जाइत छी। गंगा बहुत आवेशसँ हमरा अपन खोपड़ीमे लए जाइत अछि। हमहूँ ओकरे अनुसरण करैत जाइत छी।

8

आटोरिक्सा एकाएक एकटा खोपड़ी लग रुकि जाइत अछि। गंगा उत्साहपूर्वक हमरा आटोसँ उतारैत अछि आ हमरा संगे खोपड़ीक दलानपर पहुँचैत अछि। ओतेक राति बितलोपर ओकर

घरमे सभ जगले छैक,ओकर प्रतीक्षा कए रहल छलैक। दलानपर राखल खाटपर हमरा बैसबैत अछि। अन्दरसँ ओकर माए,पत्नी आ दुनू बच्चा दौड़ल अबैत छैक। हमरा दिस इसारा करैत गंगा कहैत अछि-

"अपने गाम लगक छथिन। हमरा संगे गाम जेथिन। काल्हि ने तँ परसू। टिकटक जोगार करबाक छैक। दलालकँ कहलिऐक अछि। ओहो आइ-काल्हि कए रहल अछि। गर्मीक छुट्टीक कारण ट्रेनसभमे बहुत भीड़ भए रहल छैक।"

गंगाक माए हमरा दिस देखैत रहल ,जेना किछु अखिआसि रहल होइक। किछु बाजए नहि। हमरो लागए जेना एकरा कतहु देखने छिऐक। फेर होअए जे मतिभ्रम भए सकैत अछि। थोड़बे कालमे गंगाक पत्नी बड़ीटा गिलासमे भफाइत चाह लेने आएलि। हम आ गंगा चाह पिबैत छी। हमर मोन कनी आश्वस्त भेल। गंगाक पूरा परिवार ओकरा घेरि कए बैसि गेल रहैक। सभ हँसी ठट्ठा करैत रहल। हमरोसँ किछु-किछु पुछैत रहल। ओहिठामक माहौल देखि हम दंग रही। लगैक जेना दोसर दुनिआमे आबि गेल छी। एकटा एकदम अपरिचित लोकक हेतु एतेक अंतरंग भावनाक उद्गार देखि चकित छलहुँ। हमरा गुमसुम देखि गंगाकँ चिंता भेलैक। ओ कहैत अछि-

“की बात छैक? अहाँ एतेक चिंतामे किएक छी। अहाँ कोनो आनठाम नहि छी। ई अहींक परिवार अछि। जतेक दिन मोन होअए रहू। हमरोसभकेँ मोन लागत।”

“चिंता कथीक करब। तोरा सन नीक लोकक बीचमे कोनो कष्ट नहि। हम तँ तोहरसभक प्रेमभाव देखि बहुत प्रसन्न छी। एहन माहौल कतए पाबी? मुदा गाम तँ जाए पड़त। ओहिठाम चीज-वस्तुसभ बिदति होइत होएत।

अहाँ अनेरे मोहमे पड़ल छी। जाबे अपन वश छल ताबत केलहुँ। आब तँ अहाँक आरामक समय अछि। धिया-पुताकेँ करबाक चाही।”

“सभ तोरे सन होइक तखन ने।”

“हम कोनो आन छी? अहाँ निचैन अहिठाम रहू।”

हमसभ गप्प कइए रहल छलहुँ कि गंगाक पत्नी भोजनक बिझो करओलक। गंगा हमरा लेने घरक ओसारापर लए जाइत अछि। ओहिठाम पीढ़ीपर हमरा बैसबैत अछि। हाथ-पैर धोलाक बाद हम बैसैत छी। मुदा गंगा ठाढ़े रहि जाइत अछि।

“तूँहूँ किएक ने खा लैत छह। बहुत राति भए गेलैक।”

“पहिने पाहुन खेतैक तकर बादे ने हमसभ खेबैक।”

हम ओकर बात सुनि अबाक रही। एतेक कम समयमे भोजनक एहन सरंजाम देखि आश्चर्यचकित रही। दालि, भात,चारिटा तरकारी, कैक तरहक तरुआ आ ऊपरसँ दहीक छओ। हम बहुत

भुखाएल रही संगहि ओकरसभक दुराग्रह । आइ कैकदिनपर भरि पेट खेलहुँ ।

हम भोजन करिते छलहुँ कि एकटा वयोवृद्ध कोठरीसँ बाहर होइत छथि । “ई हमर बाबू छथिन । राति कए कम सुझैत छनि । एमहर मोनो खराप रहैत छनि । अपना भरि इलाज करओलिअनि। मुदा डाक्टरसभ कहैत अछि जे बएसक प्रभाव छनि । एहिना होइत रहतनि ।” ओहि बूढ़क आकृतिपर प्रसन्नताक भाव टपकि रहल छल। कहैत अछि-

“हम बहुत भाग्यवान छी जे भगवान गंगा सन बेटा देलथि। दिन-राति दुनूप्राणी सेवामे लागल रहैत अछि । तैओ गामे मोन टांगल रहैत अछि ।”

“हिनके द्वारे गाम जेबाक सोचलहुँ अछि । एकमाससँ दिन-राति गामे-गाम करैत रहैत छथिन ।”

ओकरसभक गप्प-सप्प सुनि होइत छल जेना कोनो दोसर दुनिआमे पहुँचि गेल छी । हम कहलिऐक-

“अहाँ बहुत भाग्यवान छी जे एहन परिवार भेटल ।”

“से बात अपने सही कहि रहल छी । मुदा गामक दरेग तँ होइते छैक ने । अपन लोक-वेदसभसँ भेँट केला बहुत दिन भए गेल।”

“अच्छा चिंता नहि करू । आब जल्दीए गाम चलब ।”-गंगा बजैत अछि । गंगा संगे हम बाहर निकलैत छी । पाछू-पाछू ओकर

पूरा परिवार सेहो अबैत अछि। सभ गोटे हमरा वारंबार आश्वस्त करैत छथि। ओसारापर हमर ओछाओन भेल अछि।

“आब आराम करू। बहुत थाकि गेल होएब।”

“ठीक छैक।”

गंगाक परिवारक प्रति समर्पण देखि हम बहुत प्रभावित भेलहुँ। ओकर माए-बापकेँ देखलासँ लगबे नहि करैक जे ओ सभ ओतेक बूढ़ भए गेल अछि। पारिवारिक प्रेम आ आपसी सौहार्द्यसँ ओ गरीबीक कष्टकेँ नीकसँ झाँपि देने छल।

हम खाटपर पड़ि जाइत छी। बड़ी काल धरि आङनमे हँसी-ठट्ठा होइत रहैत अछि। घंटाभरिक बाद सभ सुति जाइत अछि। मुदा हमरा निन नहि होइत अछि। हम रातिभरि करोट बदलैत रहि जाइत छी। भोरुकबामे गंगाक माए पराती गेनाइ शुरू केलक। बहुत दिनक बाद एतेक मधुर स्वरमे पराती सुनबाक मौका भेटल छल।

परातीक अबाज सुनि गंगा सेहो उठि जाइत अछि। हमरा खाटपर बैसल देखि पुछैत अछि-

“अहाँ सुतलिऐक नहि?”

“निन भेबे नहि कएल। राति भरि जागल-जागल देह भसिआ रहल अछि।”

“एतेक परेसान नहि रहू। ई जिनगी छैक। सभटा अपने सोचला नहि होइत छैक। सभ समय बीति जाइत छैक। ईहो समय

बीति जेतैक। जएह भगवान कष्ट दैत छथिन सएह समाधानो करैत छथिन।”

“बात तँ ठीके कहि रहल छह। मुदा मनुक्खक स्वभाव छैक। ओ जे नहि सोचबाक ताहूपर सोचैत रहैत अछि।”

“मुदा बात की भेलैक जे एतेक रातिमे अहाँ एना घर छोड़ि कए निकलि गेलिऐक?”

“की-की कहिअह? टिकटक जोगार करह। पहिने एहिठामसँ निकली ,फेर किछु आओर। टिकटक जोगार तँ हेबे करतैक। हम रातिएमे फोन कए देलिऐक अछि। दलाल बाबू आश्वस्त केलक अछि।”

एतबेमे फोनक घंटी बजैत अछि।

“गंगा भाइ!”

“कहह की हाल अछि?”

“टिकट तँ भेल मुदा किछु दंड लागि गेलह।”

“कतेक?”

“एक टिकटपर पाँच सए ऊपरका।”

“कोनो बात नहि। तूँ टिकट पठाबह।”

मोबाइलमे दरभंगाक चारिटा टिकट आबि जाइत छैक। गंगा हमरा से सूचित करैत अछि। नईदिल्ली टीसनसँ साढ़ेसात बजे साँझक ट्रेनसँ टिकटक जोगार भेलैक अछि। सभ गोटे प्रसन्न अछि। गंगाक बाबू सेहो प्रसन्नतासँ नाँचि रहल छल। कखनो आङन

जाए,कखनो दलानपर आबए। ओकर माए सेहो तैयारीमे लागि गेल छल। पत्नी आ नेनासभ एतहि रहतैक। गंगा,ओकर माए-बाबू आ हम चारिगोटे ट्रेनसँ जाएब।

9

साँझमे हम,गंगा,ओकर माता-पिता सभ संगे टीसन बिदा भेलहुँ । गंगाक सार,सरहोजि,पितिऔत भौजी,आ कहि ने के के ओकरासभकेँ बिदा करबाक हेतु टीसन आएल रहैक। अजमेरीगेट दिस प्लेटफार्म नंबर एकसँ ट्रेनकेँ खुजबाक रहैक । ट्रेन टीसनपर पहुँचि गेल छल । गंगाकेँ बिदा करए आएल ओकर कुटुंब,मित्रसभ सोझे प्लेटफार्मपर पहुँचि गेल । सभ गोटे ताधरि ओतए आपसमे गप्पसप्प करैत रहि गेल जाधरि की ट्रेनक सीटी बाजि नहि गेल । सीटी बजितहि सभ धराधर ट्रेनसँ उतरल ।

थोड़बे कालक बाद यात्रीसभ अपन-अपन स्थानपर बैसि गेल रहथि। सामनेक सीटपर ओकर बाबू आ माए बैसल रहैक। ऊपरका दुनू शायिकापर केओ आओर यात्री छल। गंगा हमरा लेल पानि,किछु जलखै आ चाहक जोगार कए देने छल। हम आ गंगा चाह पिलहुँ। ओकर बाबू तमाकुल खेलक। माए बीड़ी पिबए चाहैक। मुदा गंगा मना कए देलकैक। गंगाक माए-बाबू सुति रहल। ऊपरका शायिकाबला दुनू यात्री सेहो अपन-अपन स्थानपर चलि गेल। रहि

गेलहुँ हम आ गंगा । कतबो कहिऐक गंगा अपन शायिकापर जेबे नहि करए । हमरा संगे गप्पमे बाझल रहल । कहैत रहल जे एहन मौका ओकरा फेर कहिआ भेटतैक? गप्प-सप्पमे हम पुछलिऐक-

“तूँ शंकरकेँ कोना जनैत छहक?”

“शंकरेकेँ नहि, हम तँ निशा, दीपेंदु आ दीपाकेँ सेहो जनैत छिअनि ।”

“से कोना?”

“हम कोनो आइसँ दिल्लीमे छी। हमरा एतए अएला पन्द्रह सालसँ बेसी भए गेल ।”

“ओतेक छोट बएसमे गाम छोड़ि कए कोना आएल भेलह?”

“कोनो निआरि कए थोड़े आएल रहिऐक ।”

“तखन?”

“हमर बाबूगाममे मालिकसँ किछ कर्जा लेने रहथि । मालिक दिन-राति तगादा करैक, अंट-संट बजैक । बाबूकेँ एकदिन नहि रहल गेलनि । किछु जवाब-सवाल कए देलखिन । तकरबाद तँ जे भेल से की कहू?”

“की भेलैक?”

“मालिक आ ओकर लठैतसभ बाबूकेँ गाछमे बान्हि कए बड्ड मारि मारलकैक । हमर माए हाथ-पैर जोड़ैत रहि गेलैक । मुदा लठैतसभ ओकरोपर एकाध लाठी चला देलकैक । माए ठामहि खसलि । हमरा केओ ई बात कहलक । हम दौरले ओहि ठाम

पहुँचलहुँ । बाबूकेँ गाछमे ओहि हालतिमे बान्हल देखि सौंसे देहमे आगि लागि गेल । चारूकात लोकसभकेँ हाथ-पैर जोड़लहुँ । मुदा केओ मदति करए नहि आएल । सभकेँ मालिकक डर होइक । संयोगसँ दोसर गामक पहलमानसभ कुश्ती खेला कए वापस जाइत रहए । ओएहसभ बाबूकेँ मदति केलकनि । जौर काटि देलकनि। इनारसँ आनि कए पानि देलकनि । तकरबाद उठा-पुठा कए घरो पहुँचा देलकनि । ओहीमे सँ केओ माएकेँ सेहो लदने आएल । केना ने केना बात चारूकात फैलि गेल । थाना-पुलिस होमए लागल । थानेदार बाबूकेँ धमका देलकनि-“खबरदार! यदि किछु बजबह तँ डकैती केसमे फँसा देबह।”मालिकसभ पुलिसकेँ मुँह बंद कए देलकैक। थोड़बे दिनमे सभ किछु शांत भए गेल । मुदा हमरा मोनमे जे आगि लागल से शांते नहि होअए । एकदिन बिना ककरो कहने गामसँ बिदा भए गेलहुँ । संयोगसँ दरभंगा टीसन पहुँचले रहिऐक की एकटा ट्रेन खुजैत रहैक । हम ओही ट्रेनमे बिना टिकटकेँ घुसिआ गेलहुँ।”

“टीटी पकड़लकह नहि?”

“पकड़ि लेलक की । मुदा हमरा लगमे बैसल एकटा यात्री भगवान बनि कए ठाढ़ भए गेल ।”

“से की?”

ओ अपना जेबीसँ टीटीकेँ तीनटा नमरी धराधर पकड़ा देलकैक आ कहलकैक-

“एहि नेनाकेँ तंग नहि करहक । ई बहुत परेसानीमे बुझा रहल अछि ।”

असलमे हमरा रहि-रहि कनाए लागए । ट्रेनमे गाम मोन पड़ि जाए । माए-बाबूक स्मरण होमए लागए । मोन होअए जे भोकारि पारि कए कानी । ओ यात्री हमरा दिस बड़ी काल धरि देखैत रहल । ओकरा नहि रहल गेलैक । ओ सहटि कए हमरा लग आबि गेल आ पुछैत अछि -

“की बात छैक? तूँ एतेक परेसान किएक छह? ”

हम ओकरा सभटा बात खोलि कए कहलिऐक । ईहो कहलिऐक जे हम गाम वापस नहि जाए चाहैत छी ।

“तखन जेबहक कतए?”-ओ पुछलक ।

“से की जाने गेलिऐक? दिल्ली पहुँचलाक बाद सोचबैक।”

ओहि यात्रीकेँ बहुत दया भेलैक ।

दिल्ली पहुँचलाक बाद कहैत अछि-

“तूँ हमरे संगे चलह । हमरे ओहिठाम रहिअह । हमर माएकेँ सेवा करिअह । मोन हेतह तँ पढ़बो लिखबो करिअह।”

“हम ओकर बात मानि ओकर संग धए लेलहुँ ।”

“तखन?”

“तखन की हेतैक । हम हुनका ओहिठाम रहए लगलहुँ। बुढ़ीक दिन -राति सेवा करए लगलहुँ । हमर सेवासँ ओ बहुत प्रसन्न रहैत छलीह । हुनकर इच्छा रहनि जे हम पढ़ी । मुदा हमरा पढ़ाइमे

मोन नहि लागए । तहन ओएहसभ हमरा ड्राइभरी सिखबा देलाह, लाइसेंस बनबा देलाह,एकटा आटो सेहो कीनि देलाह । ततबे नहि,नोएडामे एकटा छोटसन जमीन सेहो किना देलाह। हम हुनकर कर्जाकेँ क्रमशः कमा कए सधओलहुँ। ओसभ तँ वापस लेबहि नहि चाहथि। मुदा हम अड़ि गेलिऐक। हारि कए ओ सभ मानि गेलाह । जखन जेना जतबे सुविधा भेल,हुनकर कर्जा सधबैत रहलहुँ। एहि तरहें हमरा अपन जमीन भए गेल । तखन ओएहसभ कहलथि जे छोटो-छीन अपन घर बना लएह। ताहि मे सेहो ओ सभ मदति केलाह। आखिर घरो बनि गेल। हमर बिआहो भेल,दिल्लीएमे अपने दिसका कनिआसँ। ओकर परिवार बहुत दिनसँ हमरेसभक कालोनीमे रहैत छलैक। बिआह भेलाक बाद माए-बाबूकेँ सेहो दिल्ली लए अनलिअनि। तहिआसँ सभ गोटे संगे रहैत छी।”

“तोहर खिस्सा तँ बहुत रुचिगर छह । मुदा ओ आदमी छलाह के?”

आब तँ ओ स्वर्गवासी भए गेलाह। हुनकर एकहिटा बेटा छनि।

“की नाम छनि हुनकर?”

“दीपेंदु।”

“ओ! तँ दीपेंदु केँ तूँ बहुत दिनसँ जनैत छहुन।”

“बहुत दिनसँ । हुनके चलते हुनकर संगीसभसँ सेहो परिचय भेल । अहाँक पुत्र शंकरसँ सेहो हुनके ओहिठाम भेँट भेल रहए।”

ट्रेन मुगलसराय आबि गेल छल । एहिठाम इंजिनक अदला-बदली होएबाक रहैक । तेँ ओ बड़ीकाल धरि रुकल रहल। अधिकांश यात्री सुतल छलाह । हुनकासभकेँ किछु पता नहि चलल हेतनि जे ट्रेन कतए आबि गेल? मुदा हम आ गंगा जगले रही । गप्पक अंते नहि होइत छल । ने गंगाक जिज्ञासाक अंत होइत छल ने हमर । गंगाक मुँहे नव-नव खिस्सासभ सुनि हमर जिज्ञासा बढ़िते जा रहल छल । गंगा कैक बेर कहबो करए -

“थाकि गेल होएब । आब सुति जाउ ।”

“सुतबैक से निन्नो होअए तहन ने। ओहुना हमरा बहुत कम निन होइत अछि । ट्रेनमे तँ हम कहिओ नहि सुतैत छी । फेर एहि बेर तँ तूँ संगे छह । तरह-तरहक गप्प-सप्प करैत छह। कतेको एहन बातसभ आइ पता लागल जे हमरा नहि बूझल रहए। तेँ अजुका जगनाइ तँ बहुत सार्थक अछि । ने तूँ भेटितह ने हमरा शंकरक बिआहक पूर्वकथा पता लगैत ।”

“से किएक? अहाँसभ बिआहमे नहि आएल रहिऐक की?”

“हम तँ आबए जोकर नहि रही । मुदा शंकरक माएकेँ बहुत मोन लागल रहनि । कहिआसँ बेटाक बिआहक चर्च करैत रहैत छलीह । मुदा ओहो नहि जा सकलीह ।”

“भने नहि जाइत गेलहुँ।”

“से की?”

“बितलाहा बातसभक चर्च कए आओर दुखी भए जाएब। एकरासभकेँ बिसरने नीक।”

“हम ई कोना बिसरि सकैत छी जे एही घटनासँ दुखी भए शंकरक माए चारूधामक यात्रापर चलि गेलीह आ गंगोत्रीमे स्नान करैत काल ओहीमे बिला गेलीह।”

“ई तँ बहुत दुखद भेल।”

“मुदा उपाय की? जे बात अपना हाथमे नहि अछि तकर की कएल जा सकैत अछि? एकरा विधिक विधान बूझि सहि जेबेमे कल्याण थिक।”

गंगा ट्रेनसँ नीचाँ उतरल। प्लेटफार्मपर सँ माटिक कुल्हरमे दू कप चाह लेने आएल। दुनूगोटे चाह पिनाइ शुरू केलहुँ आ गप्पो करैत रहलहुँ। गंगाकेँ हमरा बारेमे जानबाक जिज्ञासा बढ़ैत गेलैक।

“अहाँकेँ कैकटा धिआ-पुता अछि।”

“दूटा। शंकर आ हीरा।”

“दुनूमे जेठ के छथि?

“हीरा जेठ छैक। दुनूगोटेकेँ यथेष्ट शिक्षाक अवसर भेटनि ताहि लेल दिन-राति एक कए देलहुँ। हमर सरकारी नौकरीमे आमदनी सीमित छल आ पढ़ाइक खर्च बहुत भए जाइक।”

“तखन केना की केलिऐक?”

“की करतिऐक? हमरा बाबा सपथ देने रहथि जे कहिओ ककरोसँ कर्जा नहि लेब। परिश्रमसँ जे उपार्जित होएत ताहीमे गुजर करब। दुनू बच्चा पढ़एमे बहुत तेजगर रहथि। इसकुलमे सभ दिन प्रथम स्थान पबैत रहलाह। इसकुल दिससँ छात्रवृत्ति भेटैत रहलनि। किताब-काँपीसभ इसकुले दिससँ भेटि जानि। फीस माफे रहनि। तेँ इसकुली पढ़ाइ तँ आसानीसँ निपटि गेल। तकरबाद शंकर इंजिनीयरींगमे नाम लिखओलाह आ हीरा डाक्टरीमे। दुनूगोटे बिना कोचिंगकेँ एकहि बेरे प्रवेश परीक्षामे नीक स्थान प्राप्त केलथि आ अपन-अपन पसिंदक संस्थानमे नामांकन भए गेलनि। दू-दूटा विद्यार्थीक एकहि संगे खर्चा देब मोसकिल होइत गेलनि।”

“से किएक? छात्रवृत्ति नहि भेटैक की? ”

“भेटैक। मुदा ओ पर्याप्त नहि रहैक।”

“तखन कोना की केलिऐक?”

“की करतिऐक? मधुबनीमे दस कठ्ठा जमीन किनने रही। सोचने रही जे समय साल सुभ्यस्त होएत तखन घर बनाएब। मुदा से नहि भए सकल। ओकरा बेचए पड़ल। संगहि टिपोट बनबए लगलहुँ। संयोग ई भेलैक जे हमरा एहिसँ खूब आमदनी होमए लागल। दुनू बच्चाक पढ़ाइक खर्चा लेल ककरोसँ माङए नहि पड़ल।”

“ई तँ कमाले भए गेल।”

“ईश्वरक कृपा। एहिमे हमर कोनो कमाल नहि छल। सभ ऊपरबलाक चमत्कार कहबाक चाही जे हमरा सन अदना आदमीक दू-दूटा संतान एतेक उच्च शिक्षा प्राप्त कए सकल।”

हमरा लोकनिक चाह खतम भए गेल छल। ट्रेन मुगलसरायसँ आगू बढ़ि रहल छल। यात्रीसभ फोंफ काटि रहल छल। मुदा हम आ गंगा जेना सभटा गप्प आइए कए लेबाक हेतु आतुर रही। गप्प सँ गप्प निकलैत रहल। ट्रेन आगू बढ़ैत रहल आ बढ़ैत रहल हमरा लोकनिक जिज्ञासा।

“गाम-घरमे एतेक पढ़ल-लिखल संतान तँ कमे लोककेँ हेतैक।”

“से बात सही छैक। ओहो हमरा गाममे। पहिल बेर एहन भेल छल जे कोनो विद्यार्थी सभ परीक्षा प्रथमश्रेणीमे सफल होइत गेल,ततबे नहि अपन पसिंदक संस्थानसभसँ डाक्टरी/इंजिनीयरींग केलक। हमर प्रसन्नताक तँ अंते नहि छल। चारूकातसँ दुनू बच्चाक बिआहक प्रस्तावसभ आबए लागल। मुदा हमसभ बाट तकिते रहि गेलहुँ। हमरासभकेँ जबरदस्त धक्का लागल। हीरा आ शंकर अपन-अपन पसिंदक वर कनिआ ताकि लेलथि। हमरासभकेँ ठकैत रहलाह। जे कथा उपस्थित होअए ताहिमे कोनो-ने-कोनो त्रुटि निकालि देथि। थोड़े दिनक बाद हीरा तँ अपन मोनक बात माएकेँ कहि देलखिन। हमरा लोकनि सहर्ष हुनकर बिआह कए देलिअनि। मुदा शंकरक ताल-पातरा किछु बुझेबे नहि करए। कखनो किछु तँ

कखनो किछु कहि हमरा लोकनिकेँ टरका देथि। एक बेर हमर छोट भाए हुनका किछु कहलखिन तँ शंकर बेस हंगामा ठाढ़ कए देलाह। घरसँ भागि गेलाह आ तकरा बाद आइ धरि गाम नहि अएलाह। साल भरिक बाद पता लागल जे ओहो अपन पसिंदक एकटा क्रिश्चन कनिआ संगे रहैत छथि। कहाँदनि ओ केरलक रहनिहार छलैक। नामसँ तँ नहि बुझाइक जे ओ क्रिश्चन छैक।"

"तखन अहाँसभकेँ कोना पता लागल?"

बिआहसँ पूर्व ओकर पिता हमरा एकटा चिठ्ठी लिखलक।

"की?"

लिखलक –

"हम अहाँसँ भेँट करए चाहैत छी। ओना सभ बात तँ अहाँकेँ बुझले होएत। तथापि हमरा लोकनिमे भेँट-घाँट भए जाए तँ बढ़िआँ होइत।"

"अपन नाम लिखने छल-राजू थोमस।बात बूझि गेलिऐक।"

"तँ ओकरा की उत्तर देलिऐक?"

"की उत्तर दितिऐक? चुप्पे रहि गेलहुँ। तकर बाद ने ओ हमरा किछु लिखलक आ ने हम किछु पता केलिऐक।"

ई बात कहैत-कहैत हमरा आँखिसँ नोर ढवर-ढवर खसि रहल छल। गंगा से देखलक। ओ बात बदलबाक प्रयास केलक। मुदा हम बड़ीकाल धरि किछु नहि बाजि सकलहुँ। ट्रेन आगू चलैत रहल। फरीछ भए गेल छल। ट्रेन लहेरियासराय पहुँचि गेल छल।

यात्रीसभ उठि रहल छल । सभ अपन-अपन समानसभ सरिआबए लागल ।

“एकर बाद   ट्रेन दरभंगा जंक्सनपर ठाढ़ होएत ।”-गंगा बाजल । ताबतेमे ओकर मोबाइलक घंटी बाजए लगलैक।

के? ”

“दीपेंदु बाजि रहल छी ।”

“ओ! ट्रेनक हल्लामे नहि सुनि सकलिऐक ।”

“कतए जा रहल छह?”

“गाम। माए-बाबू संगे छथि ।”

“शंकरक बाबूक किछु पता नहि छैक?”

“ओ तँ हमरा संगे छथि । से कोना?”

“कनी कालक बाद फोन करू । ट्रेनसँ उतरि कए गप्प करब।”

ट्रेन दरभंगा जंक्सन पहुँचल । प्लेटफार्म नंबर चारिपर लोकक करमान लागल छल । यात्रीसभ उतरबाक हेतु तत्पर भए रहल छलाह । मुदा ऊपरका यात्री सुतले रहए । गंगा हल्ला केलक -

“औ! अहाँ सुतले रहबैक? ट्रेन दरभंगा पहुँचि गेल ।”

ऊपरका सीटपरक यात्रीसभ शुरूएमे जे सुतल से रस्ताभरि सुतले रहि गेल । कतहु टस सँ मस नहि भेल । जखन ट्रेन दरभंगा पहुँचि गेल तँ गंगा जोर-जोरसँ हल्ला केलक-

“ट्रेन दरभंगा आबि गेल ।”

मुदा ऊपरका यात्रीकेँ कोनो असर नहि भेलैक । ऊपरका दोसर सीट पता नहि कखन खाली भए गेल रहैक। डिब्बाक लोकसभ ट्रेनसँ उतरबाक क्रममे आगू ससरि रहल छल । गंगाकेँ एना हल्ला करैत सुनि सभ थकमका गेल । मुदा ओ यात्री नहि उठल । ताबत रेलवे पुलिस बंदुक लटकओने अएलैक । ओ बंदूकक बटसँ ऊपरका सीटपर सुतल यात्रीकेँ हिलबैत अछि । ओ तैओ नहि उठल ।

"किछु गड़बड़ लागि रहल अछि ।"- सिपाही बाजल । ताबत एकटा युवक यात्री ऊपर चढ़ि गेल । ओकर नाक लग हाथ देलक ।

"साँस तँ चलि रहल छैक।"-ओ बाजल । "मुदा होस नहि छैक ।"-ओएह आगू बाजल । रेलवे पुलिस अपन मोबाइलपर फोन करैत अछि । दनादन तीन-चारिटा पुलिस जमा भए गेलैक। सभ गोटे मिलि कए ओकरा ऊपरसँ उतारैत अछि । ट्रेनक यात्रीसभ क्रमशः डिब्बासँ बाहर भेल जाइत छथि । पुलिससभ ओहि आदमीकेँ नीचाँ उतारैत अछि । ताबत हम आ गंगा सेहो डिब्बासँ बाहर भए गेल रही। पुलिससभ ओहियात्रीकेँ प्लेटफार्मपर रखैत अछि ।

हमर ध्यान ओहि आदमीपर पड़ैत अछि । हम मोने-मोन सोचैत छी -

"ई तँ मुखिआ बुझा रहल अछि ।"

हम सहटि कए ओकरा लग जाइत छी आ ओकरा ध्यानसँ देखैत छी । हँ,हँ, ई आओर केओ नहि मुखिए अछि ।

लगमे ठाढ़ पुलिससभ हमरा ओकरा बेर-बेर ध्यानसँ देखैत देखि लैत अछि।

“की बात छैक बाबा? अहाँ एकरा जनैत छिऐक की?”

“जनैत छिऐक।”

“ई के अछि?”

“हमरे गामक मुखिआ अछि।”

“की ई अहींक संगे आबि रहल छल?”

हम तँ एकरा पहिल बेर ट्रेनसँ उतरबा काल देखलिऐक। रातिभरि ई टस सँ मस नहि भेल। सुतल से सुतले रहल। हम आ गंगा आपसमे गप्प करैत रही। ओकरा दिस ध्यान नहि गेल।

“ओकर सामने बला सीटपरक यात्री कखन उतरल?”-पुलिस पुछैत अछि।

“से हमसभ नहि बुझलिऐक।”

“ई कोना भए सकैत अछि जे अहाँसभ से नहि बुझने होइ।”

“असलमे मुगलसरायमे हम चाह आनबाक हेतु उतरि गेल रही। भए सकैत अछि, ओही बीचमे ओ उतरि गेल होइक।”-गंगा बाजल। हमहूँ मुरी हिला देलिऐक।

“मुदा ई बूढ़ा तँ डिब्बेमे छलाह।”

“हम नीच उतरलहुँ। राति भरिक जगरनासँ हिनका तुरंते आँखि लागि गेलनि। हम जखन चाह लए कए वापस सीट लग अएलहुँ तँ ई फोंफ कटैत रहथि। हम हुनका उठेलिअनि। हमरा

हाथमे चाह देखि कए फुरफुरा कए उठि गेलाह। दुनूगटे चाह पिलहुँ आ गप्पो करैत रहलहुँ। मुदा ऊपरका सीटपर के उतरल, के रहल ताहि बात सभपर ध्यान नहि गेल।"

"तोहरसभक बात संदेहास्पद लगैत अछि। तूँ सभ हमरा संगे थाना चलह। ओतहि बात फरिछाएत।"

हम आ गंगा अपन झोरा लेने पुलिसक जीपपर बैसि जाइत छी। थोड़बे कालमे पुलिसक जीप थाना पहुँचि जाइत अछि। संयोग एहन भेल जे थाना पहुचैत-पहुँचैत मुखिआ केँ होस आबि जाइत छनि। ओ उठि कए बैसि जाइत छथि। सामनेमे हमरा देखि कए प्रणाम करैत छथि।

"हम एहि ठाम कोना आबि गेलहुँ?"-हमरासँ पुछैत अछि।

"तूँ तँ ट्रेनमे बेहोस पड़ल छलह। हमसभ तोरा ट्रेनसँ उतारलहुँ। ई सभ तोरे संगे तोहर सीटक नीचाँमे ट्रेनमे रहथि। तेँ हिनको थाना लेने अएलिअनि।

"मुदा हिनकासभ सँ तँ हमरा ट्रेनमे कतहु भेंटो नहि भेल छल।"-मुखिआ बाजल।

"तखन भेलैक की जे तूँ एना बेहोस भए गेलह।"-पुलिस पुछैत अछि।

"संभवतः हमरा सामनेक यात्री किछु केलक। ओ प्रसाद कहि कए हमरा एकटा पेरा देने रहए। हम ओहि पेराकेँ खेने रही। बस

एतबे मोन पड़ैत अछि । तकर बाद की भेलैक, किछु मोन नहि अछि।-मुखिआ बाजल।

ओकरा मुँहे ई बात सुनि कए पुलिस हमरा आ गंगाकेँ छोड़ि देलक । मुदा हम थोड़े काल ओतहि रहि गेलहुँ । भेल जे मुखिआ जँ ठीक भए जाएत तँ ओकरा संगे लेने जाएब । आखिर गौआँ अछि। संकटमे पड़ि गेल अछि । गंगो हमरे संगे रुकल रहल।

“मुदा हुनका अखन थानामे रहए पड़तनि । ऐहि मामिलाक कागज-पत्र बनेबाक हेतैक । दरोगा साहेब अओताह। तखने हिनका छोड़ल जेतनि ।”

पुलिसक मुँहे ई बात सुनि कए हम आ गंगा थानासँ बिदा भए गेलहुँ। दरभंगा बस स्टैंड धरि दुनूगोटे संगे गेलहुँ। ओहिठामसँ अपन-अपन गामक बसपर चढ़ि गेलहुँ । हमरा गामक बस डेढ़ घंटाक बाद खुजलैक । ताबत गंगा अपन गामो पहुँचि गेल रहए । ओहिठामसँ हमरा फोन केलक । ओकरा आश्चर्य लगलैक जे हम अखन धरि बस स्टैंडेपर छी ।

“एतेक समय कथीमे लागि गेल?”

“बसे खराप भए गेलैक । कनीके घुसकले छल कि अगिलका चक्काक हबा फुस्स दए निकलि गेलैक । यात्रीसभ बससँ उतारि देल गेल । बस गाड़ीकेँ ठेलि कए स्टैंडमे आनल गेल। लगीचेक दोकानसँ मिस्त्री बजाओल गेल । तहन तँ ओकर पहिआ बदलल आ बहुत मोसकिलसँ आब हमसभ फेरसँ अपन-अपन सीटपर बैसलहुँ

अछि। ताबत बहुत रास यात्रीसभ बसकेँ छोड़ि देलकैक। तेँ बस ठाढ़े अछि जाहिसँ किछु आओर यात्रीसभकेँ बैसाओल जा सकए।

आखिर बस खुजल। जेना-जेना बस हमरा गाम दिस बढ़ैत गेल,हमरा जानमे-जान अबैत गेल। लागए जेना सौंसे देहमे नवीन ऊर्जाक संचार भए रहल अछि। बस हमर गाम पहुँचैत अछि। हम आगू बाटे उतरि जाइत छी। एमहर हम उतरैत छी आ पाछू लागल मुखिआ सेहो टेकरसँ उतरैत अछि। दुनूगोटेकेँ गामक चौकपर भेँट भए जाइत अछि। हमसभ संगे आगू बढ़ैत छी। हम मुखिआक संगे अपना ओहिठाम पहुँचैत छी। घरक मुख्यद्वारिपर एकटा बड़का ताला लागल छल। ताला देखि हम बिस्मित छी।

"अखन हमरे ओहिठाम चलू।"

"से किएक? हम अपन घर छोड़ि कतहु किएक जाएब?"

"बादमे सभ बात कहब।"

"से की?"

"सएह कहू। अहाँ तेना बाजि रहल छी जेना किछु बुझले नहि होअए।"

"ऐना बुझौअलि नहि बुझाबह। साफ-साफ बाजह जे बात की अछि? हम तँ दोसर ताला लगा गेल रही।"

"तकर बाद बहुत किछु भए गेल।"

"की भेल?"

"से हमरा किएक पुछि रहल छी? अपन पुत्रसँ पुछिअनु।"

“तोरा जखन सभ बात बूझल छह तँ बजबामे दिक्कति की छह?”

“बात की रहतैक आ हमरा बजबामे किएक परेसानी होएत? मुदा अहाँक स्थिति देखि बाजल नहि होइत अछि।”

“फेर ओएह बात? जे बात छैक से साफ-साफ कहह ।”

“अहाँक पुत्र आएल रहथि ।”

“से?”

“ओ सभटा जमीन-जथा घर समेत हुंडे बेचि गेलाह । कहलाह जे हमर बाबू आब असगर गाममे नहि रहि सकैत छथि। बएस बहुत भए गेल छनि । ओ अपने नौकरी करताह की गाम सम्हारताह? । तेँ गामक चीज-वस्तुसभ बेचि देनाइ जरूरी छनि।”

मुखीआ मुँहे ई बातसभ सुनि हमरा बहुत कष्ट भेल । लागल जेना माथमे बिजलीक झटका लागि गेल हो । हम ठामहि टगि गेलहुँ।

10

देखिते-देखिते लोकक करमान लागि गेल । लोककेँ देखि हम जोर-जोरसँ हाकरोस करए लगलहुँ । गौआँसभ मुखिआक गट्टा पकड़लक । ओहीमे सँ केओ युवक ओकर झोरा छिनि लेलक। सभ एतबे कहैक -

“जरूर तूँ किछु गलत काज केलह अछि जाहि कारण बूढ़ा एतेक कष्टमे छथि ।”

“हम किछु गलत नहि केलहुँ अछि । किछुदिन पूर्व हिनकर बेटा शंकर आएल छलाह । ओएह हमरा बहुत आग्रह कए अपन सभटा घर-घराड़ी आ बाधक जमीनक बेचबाक एकरार कए गेलाह। हम हुनका दस लाख रुपया अगाउ सेहो देलिअनि। हमर झोरामे एकरारनामा राखल अछि । ओकरा पढ़ि लिअ । अपने सभटा बात स्पष्ट भए जाएत ।”

युवक झोरामे सँ कागज बाहर करैत छथि आ ओकरा पढ़ैत छथि । सौंसे गामक लोक एकरार सुनि-सुनि छिआ-छिआ करए लागल ।

“शंकर ई की केलक?”

“ओकरा अपन पिताक ध्यान रखबाक चाही ।”

“अखन तँ मनोहर जीबिते छथि । बादमे जे करबाक छलनि से करितथि।”

“एकरार भेलासँ की हेतनि, हमसभ कोनो हालतिमे एकर पंजीकरण नहि होमए देबैक ।”

“मुदा हमर जे दस लाख टाका शंकर लेने छथि तकर की होएत? हमर टाका वापस कए देथि,हम अपने एहि सभसँ कात भए जाएब ।”

जतेक मुँह ततेक तरहक बात होमए लागल। हम हकासल-पिआसल अपने घरक बाहर ठाढ़ रही,असमर्थ,असहाय। हमर स्थिति देखि गौआँसभ परेसान छल। मुदा समाधान किछु फुरा नहि रहल छलैक। मुखिओक बातमे दम बुझाइत छलैक । आखिर शंकर ओकरासँ दस लाख टका टानि लेने छैक। लिखित एकरार कए लेने छैक। एतबेमे ओकील कोर्टसँ वापस अएलाह। ओ संबंधमे हमर पितिऔत लगताह। हमर पिता आ हुनकर पिता सहोदरे छलाह। लोककेँ एना जमा देखि हुनका चिंता भेलनि। ओ पुछैत छथि-

"की बात छैक? एतेक लोक किएक जमा भेल छथि?"

युवक मुखिआक झोरा हुनका पकड़ा देलक।

एहिमे राखल कागजकेँ पढ़ि लिऔक। अपने सभटा बात बूझि जेबैक।

ओकिल साहेब कागजकेँ पढ़ैत छथि । तामससँ हुनकर आँखि लाल भए जाइत छनि। देहमे जेना आगि लागि गेल होनि। ओ चिकरि उठैत छथि-

"मुखिआ! तोहर खेल खतम छौक । तोरा की बुझाइत छौक? हमसभ कोनो मसोमात नहि छी जे हमरा रहैत भैयाक जमीन-जायदाद दखल कए लेबैं। लड़ैत-लड़ैत जिनगी बीति जेतौक।"

"मुदा हमर की गलती अछि? हम कोनो मगनीमे हुनकर चीज-वस्तु लेबनि।"

“जकर संपत्ति छैहे नहि, तकरा संगे एकरार केलासँ की हेतौक? अखन तँ भैया जीबैत छथि । सभटा जमीन हुनकर अपन कीनल छनि । मरौसी जमीन तँ नाममात्रक होएत ।”

“तखन अहीं कहू जे की कएल जाए? सभ गोटे अपने छी। कोनो आनगामक बात तँ थिक नहि । हमरा शंकरक बातमे नहि पड़बाक चाहैत छल । मुदा आब तँ से भए गेल । आगूक समाधान निकालैत जाउ । साँपो मरि जाए आ लाठिओ नहि टुटए।”

“हमरा संगे बुझौअलि नहि बुझाबह । तोरा सन-सन कतेकोकेँ हम देखि चुकल छी । ओकिल तँ काजे छैक फसादक हिसाब करब । अखन चुपचाप घसकि जो । भैया अपन घरमे जाथु। तकर बाद चैनसँ अबिहैं । तखन गप्प करब ।”

ओकील युवककेँ इसारा करैत छथि । हमर घरक ताला तोड़ि देल जाइत अछि । झोरा आ ओहिमे राखल कागज ओकील अपन कबजामे लैत छथि । हम अपन घर दिस बढ़ैत छी । मुखिआ तामसे आगि भेल अछि ।

“नीक चाहैत छह तँ हमर दस लाख टाका वापस करह । नहि तँ...”

“नहि तँ तूँ की कए लेबही । तोरा एकहु बेर ई विचार भेलौक जे एकटा बूढ़ आदमीक घर-जमीन सभ चीज लए रहल छी? हमरासँ पुछितैं । हे हमरापर विश्वास नहि रहौक तँ ककरोसँ तँ पुछितही । हमर परिवारक संपत्ति केओ लए लेत आ हम देखैत रहि जाएब? ई

भए नहि सकैत अछि । आइ दिनसँ भैया कतहु नहि जेताह । हमर परिवारमे रहताह । जँ हुनकर बेटा अपाटक भइए गेल तैँ की? हमहूँसभ तँ हुनके अंग छी ।”

हम ओकीलक बात सुनि कए बहुत प्रसन्न भेलहुँ । केओ तँ हमरा दिस बाजल। मुखिआ असगर पड़ि गेल । केओ ओकरा दिस बजबाक हेतु तैयार नहि भेल । हालति खराप होइत देखि चुपचाप ओतएसँ खसकि गेल । हम ओकीलक संगे अपन घरमे प्रवेश करैत छी।

“हम अखन असगर पड़ि गेल छी । जकरा जे मोनमे होअए से बाजि लिअ । मुदा अंतिम विजय सत्येक होएत। सत्यमेव जएते। हम कोनो मामुली नहि छी । एहन-एहन सरिअल ओकिलकैँ के पुछैत अछि । काल्हि भोरे सभटा हिसाब चुकता भए जेतैक । जँ अपन नीक चाहैत छह बूढ़ा तँ हमर दस लाखटका काल्हि दसबजे धरि हमरा पठा दएह ।” मुखिआ ओहिठामसँ मोछ फरकबैत चलि गेल ।

11

गंगा कतेको सालक बाद माए-बाबूक संगे अपन गाम पहुँचल । गामक संपूर्ण परिदृश्य बदलि गेल रहैक । सभसँ आश्चर्य ओकरा ई देखि कए लगलैक जे मालिकक कोठा ढनमना कए खसि रहल छल । ओहिमे केओ नहि रहैत छल । कहाँदनि मालिक अपने अपन नातिनक ओहिठाम दिल्लीएमे रहैत छथि। मालकिन किछुसाल

पूर्व हृदयाघातसँ गामेमे स्वर्गबासी भए गेलखिन । हुनकरसभक एकमात्र पुत्र एकदिन भोरे आमक गाछसँ लटकल भेटलखिन । हुनकर बेटी सेहो सासुरेमे हैजाक शिकार भए गेलखिन । हुनकर बेटीक एकमात्र संतान हुनकर नातिन छथिन। ओकरे संगे मालिको रहि अपन गुजर करैत छथि । गामक सभटा जमीन बिका गेलनि । गामक घर सेहो खसि रहल अछि। केओ देखनाहर नहि । ई थिक समय। किछु सालपूर्व मालकिक घमंड आकाश लागल छल । आब ओ अपनो रक्षा करबामे असमर्थ छथि।

ई जानि जे मालिक अपन नातिन संगे दिल्लीमे रहैत छथि, ओकरा बहुत जिज्ञासा भेलैक । एकदिन सहटि कए गंगा मालिकक घर लग गेल । ओतए हुनकर दिआदसभसँ हुनकर दिल्लीक पता लेलक । ओ मोने-मोन सोचलक-

“दिल्ली वापस गेलाक बाद एकदिन जरूर मालिकसँ भेंट करबनि । आखिर छथि तँ अपने समाजक । देखबैक जे दिल्लीमे कतए आ कोन हालतिमे छथि ।”

गाम अएलाक बाद गंगाक माए आ बाबू बहुत प्रसन्न भेल रहथि । एक सप्ताह दिन-राति मेहनति कए गंगा अपन पुरना घरकेँ ठीक केलक । ओकर पैतृक खेतसभ मालिकक परिवार जबरदस्ती कबजा कए लेने छल । मालिकक गामसँ हटि गेलाक बाद ओहि खेतसभपर जे-से तीमन-तरकारी उपजबैत छल । गंगा सौंसे गामकेँ जमा कए देलक । पंचैती भेल । पंचसभ गंगाक पक्षमे निर्णय देलथि

। “गंगाक जमीन जरूर वापस होएबाक चाही।”-सरपंच बजलाह । स्वार्थे लोक आन्हर भए जाइत अछि। सएह हाल हुनका लोकनिक छल जे गंगाक जमीनक अवैध कबजा कए लेने छलाह । मुदा जखन सौंसे गाम एक भए गेल तँ केओ की कए लैत? गंगाकेँ अपन जमीनसभ वापस भेटलैक । ओकर घर सेहो फेरसँ ठाढ़ भए गेलैक । एहि शुभ समाचारकेँ ओ हमरा फोन कए कहलक आ आग्रहो केलक जे एक बेर किछुओ दिनक हेतु हम ओकरा ओहिठाम अवश्य आबी। हम किछु स्पष्ट आश्वासन नहि दए सकलिऐक कारण हमरा तँ अपने लफरा लागल छल । अनकासँ तँ लड़ि सकैत छी। मुदा जखन अपने बेटा दुश्मन भए जाए तँ के रक्षा करत?सएह हाल हमर भए गेल छल। हम किछु-किछु बात गंगाकेँ कहलिऐक। ओकर उत्सुकता बढ़िते गेलैक । ओ कहलक-

“हम अहाँक परिस्थितिसँ बहुत चिंतित छी । फोनपर कतेक गप्प करब । दिल्लीसँ दीपेंदुक फोन आएल छल । ओ अहाँक बारेमे पुछैत छलाह । एना अचानक चलि अएबाक कारण ओ सभ बहुत चिंतित छथि । कहाँदनि अहाँकेँ अचानक चलि गेलाक बाद दुपहर रातिमे शंकरक निन टुटल रहैक । ओ अहाँकेँ नहि देखि बहुत परेसान भए गेल रहए । ऊपरसँ केबारो खुजले रहैक। ओ सभ बहुत चिंतामे पड़ि गेलाह । रातिभरि अहाँकेँ तकैत रहलथि ।”

“तूँ कहिओ हमरा गाम आबह । हमरा लोकनि भरिपोख गप्प करब । कनी हमर मोनो बदलत । एहिठाम तँ दिन-राति धमाचौकरी मचल रहैत अछि ।”

“हम तँ आबहि बला छी । दू-तीन दिनमे दीपेंदु सेहो एमहर आबए बला छथि । हुनके संगे आएब ।”

“मुदा ओ की करए आबि रहल अछि?”

“से तँ ओकरा अएलाक बादे बुझाएत । मुदा एतबा कहलक जे हमसभ बूढ़ासँ भेँट करए चाहैत छी ।”

“हमसभ के?”

“आब से की कहू? जखन ओ अओताह तखने पता लागत?”

ठीक तीनदिनक बाद दीपेंदु गंगाक ओहिठाम पहुँचल । ओहि समय भोर भए रहल छलैक । दरभंगा टीसनपर चारि बजे भोरे ट्रेन पहुँचल रहैक । ट्रेनक समय तँ रहैक दसे बजे । मुदा ओ छओ घंटा देरीसँ पहुँचल । कहाँदनि समस्तीपुर गुमती लग ट्रेन एकटा कारसँ टकरा गेलैक । कार चूर -चूर भए गेलैक। ओहिमे सबार यात्रीसभ सेहो ओतहि मरि गेल । एही चक्करमे ट्रेन देरीसँ पहुँचल रहए । दरभंगा बस स्टैंडसँ बस पकड़ि कए ओ हमर गाम आएल। रस्तामे कए बेर फोन केलक । हमरा उम्मीद रहए जे शंकरो आबथि। मुदा ओ नहि रहथि । दिल्लीमे किछु जरूरी काजसभमे लागि गेल रहथि । दीपेंदु ओहिठाम पहिल बेर आएल रहथि । ओ ओहि ठामक सुख-शांति देखि बहुत प्रभावित रहथि।

12

कारमे सबार यात्रीसभक लहास सड़कक कातमे पड़ल छल। ओकर सभहक मुँह-कान थकुचा गेल रहैक। चारूकात लोकसभक करमान लागि गेल छल । ओहीमे सँ ककरो सड़कपर पड़ल मोबाइल फोन देखेलैक । मोबाइल फोनमे गंगाक नंबर भेटलैक। ओ गंगाकेँ फोन करैत अछि -

"ऐँ! दीपा किएक फोन कए रहल छथि?"-गंगा फोन उठबैत अछि । फोनमे कोनो अज्ञात पुरुखक अबाज सुनि ओ अचंभित अछि।

"के बजैत छी?"

"हम समस्तीपुर गुमतीसँ लाइनमैन बजैत छी ।"

"की बात?"

"एहिठाम बड़का दुर्घटना भए गेल छैक । दूटा लहास पड़ल छैक । ओकरेसभक मोबाइलसँ फोन कए रहल छी ।"

"मुदा ई नंबर तँ दीपाक छनि ।"

"एकर माने अपने हुनका जनैत छिअनि ।"

"अवश्य जनैत छिअनि । हुनका संगे आओर के के छथि?"

"से हमसभ की जाने गेलिऐक?"

"दीपाक संगे एकटा डायरी सदिखन रहैत छैक । ओ सभटा जरुरी बात ओहिमे लिखैत छथि । ओहि डायरीकेँ ताकू । ओहिसँ सभटा जानकारी भेटत ।"

गंगासँ बात केलाक बाद ओसभ डायरी तकबामे लागि गेल। सड़कसँ दू लग्गा हटि कए एकटा खधिआमे डायरी भेटलैक। बगलमे ओकर गर्दनिक सोनाक चेन आ गुल्लक सेहो भेटलैक । डायरीक अंतिम पन्ना उनटल गेल। ओहिमे लिखल छल-

"आइ साँझमे हम संगी संगे बाबाधाम जाएब। मौका भेटत तँ वापसीमे अपन पैतृक गाम सेहो जाएब । हमर नाना आबए जोकर नहि छथि । तेँ ओ दिल्ली डेरे पर रहताह।"

दीपाक संगे आओर केओ छल कि नहि से नहि फरिछा रहल छल । हम दीपेंदुकेँ एहि फोनक बारेमे कहैत छी । ओ एहि समाचारकेँ सुनि बहुत दुखी भए जाइत अछि । हम ओकरा शांत करबाक प्रयास करैत छी ।

जखन ओ अज्ञात फोन आएल तँ गंगा आ दीपेंदु हमर घरक सामने पहुँचि गेल रहथि । मोबाइलपर गप्प करितहि गंगा दीपेंदुक संगे हमरा ओहिठाम पहुँचलाह । हम ओसारापर पटिआ ओछा कए बैसल रही । ओकील सेहो ओतहि रहथि । हमसभ रातुक घटनाक प्रसंगे आपसमे चर्चा करैत रही ।

"अहाँ अपन जगहपर काबिज रहू । ककर मजाल छैक जे अहाँकेँ एहिठामसँ हटा देत । हमर ओकालति कहिआ काज आओत।"

"जखन बेटे हमर दुश्मन भए गेल अछि तखन हम कतेक काल बाँचब ।"

“इएह ने गड़बड़ अछि। जखन बेटा अपन कर्तव्य नहि बूझि रहल अछि तखन ओकर मोहमे पड़ल रहब कतहुसँ उचित नहि अछि। अहाँ अपन चिंता करू। के जानैत अछि जे जीवन कतेक दिन चलत?”

“आब हम जीबिए कए की करब? पत्नी चलिए गेलीह। बेटा बेकाबू भए गेल। तखन हम असगर ककरा बले आ किएक जिअब?”

“फेर ओएह बात। जिअब आ मरब अपना हाथमे नहि छैक। जहिआ मरबाक होएत मरि जाएब। ई मृत्युभुवन थिक। एतए केओ अमर नहि भेल। जे आएल से गेल। तेँ ओहि प्रश्नपर सोचनाइ व्यर्थ थिक।”

“तँ तूँ की कहैत छह?”

“हम तँ इएह कहब जे अपन चीज-वस्तुकेँ बचा कए राखू। जाबे जिअब इज्जतिसँ जिअब, ककरो लग हाथ नहि पसारए पड़त। मरि जाएब तकरा बाद जे होएबाक हेतैक से हेतैक।”

“चीज-वस्तु तँ बँचले अछि। अनेरे के मुखिआ ताल ठोकि रहल अछि। कहि नहि ओकरा शंकरक संगे की बात भेलैक? शंकर की सभ कए गेल अछि से नहि कहि?

“अहाँ ताहिसभक चिंता छोड़ू। अपन मोनकेँ मजगूत करू। अपन हाथ नहि काटू। केओ आओर किछु नहि बिगाड़ि सकत।”

“हम आब कोनो जबान छी। नित्यप्रति शरीर कमजोरे होइत जा रहल अछि। स्मृति कमजोर भेल जा रहल अछि। रहि-रहि कए

ओ मोन पड़ैत रहैत छथि। गंगोत्रीमे हुनकर लुप्त भए गेलासँ हमर सभ शक्ति जेना गंगेमे बहि गेल। देह आ मोन कखनहु एक संगे नहि रहैत अछि। हम तँ बस ठाढ़ छी सएह टा।"

"कोनो अहींटा बूढ़ नहि भेलहुँ अछि। सभकेँ एहि रस्तासँ जेबाक होइत छैक। तखन केओ ओकरा हँसि कए बिता लैत अछि, केओ कनिते-कनिते चलि जाइत अछि।"

"कहनाइ आसान छैक। गुंड़क मारि धोकरे जनैत अछि। स्त्री मरि गेलीह। बेटा बेगाना भए गेल। पुतहुकेँ हमरासँ कोनो मतलब नहि रहैत छनि। बेटीकेँ फुरसतिए नहि छनि। तखन ककरा बले रहू। तूँही कहह?"

"अपना बले, भगवानक बले। आओर ककरा बले रहब?"

हम आ ओकील आपसमे गप्प करिते छलहुँ की दीपेंदुक संगे गंगा हड़बड़ाएल हमरा लग पहुँचल। ओकरासभकेँ अबैत देखि ओकील चलि जाइत छथि। गंगा आ दीपेंदु हमरा प्रणाम करैत छथि।

"की बात छैक? एना किएक परेसान छह? "-हम पुछैत छी।

"दुर्घटना..."

"की बजलह?"

"दुर्घटना."

"साफ-साफ किएक नहि बजैत छह जे की भेलैक। एना चिचिएलासँ तँ किछु नहि फरिछा रहल अछि।"

ताबते समस्तीपुर गुमतीसँ लाइनमैनक फेर फोन अबैत अछि।

“दोसर लहासक सेहो पहिचान भए गेलैक अछि । ओ ओही कारक वाहनचालक छल ।

“मुदा हमरा ई सभ कहलासँ की होएत?”

“अहाँ हुनकर परिवारकेँ सूचना दए दिअनु । एतबा तँ अहाँ कइए सकैत छी ।”

“मुदा दीपाक परिवारक ऐहि गाममे केओ नहि रहैत छथि। सुनैत छी हुनकर नाना सेहो हुनके संगे दिल्लीएमे छथि।”

तकर बाद फोन कटि जाइत अछि ।

“ककर फोन छल?”-हम पुछैत छिअनि ।

“समस्तीपुर गुमतीसँ लाइनमैनक ।”

“ई की भेलैक?”

“समस्तीपुर गुमती लग ट्रेन आ कारक टक्कर भए गेलैक जाहिमे कारमे सबार दुनूगोटे ठामहि मरि गेल । ओहिमे हमर गामक मालिकक नातिन दीपा सेहो छलि ।”

“दीपा जे दिल्लीमे अस्पतालमे भेटल रहथि ।”

“हँ, ओएह।”-दीपेंदु बजैत छथि ।

दुर्घटनामे दीपाक देहांतक समाचार सुनि दीपेंदुक हालति बहुत खराप भए गेलैक । ओ तँ आएल छल हमरासँ गप्प करबाक हेतु । मुदा भए गेलैक दोसरे बात । आब तँ ओकरा मुँहसँ बकारे नहि

फुटि रहल छलैक। हम लाख गप्प करबाक प्रयास केलहुँ मुदा ओ जे गुम्मी धेलक से धेने रहि गेल । दीपेंदु ओहिना अबाक हमरा सामने पटिआपर बैसल रहल । बामा कात गंगा सेहो चुपचाप बैसल छल । आखिर हमही ओकरसभक मौन तोड़ैत कहलिऐक-

“तूँसभ एना कतेक काल रहबह । भोजनक समय भए गेल छैक । सभ गोटे भोजन कए लएह । तकरबाद शांत मोनसँ विचारि कए काज करिअह ।” दीपेंदु किन्नहु भोजन करबाक हेतु तैयार नहि भेल । बहुत मोसकिलसँ चाहटा पिलक, ओहो कनीके। हम आ गंगा संगे भोजन करैत छी ।

“अहाँ एमहर कोना अएलहुँ?”-हम दीपेंदुकेँ पुछलिअनि।

“हमर पूर्वज कलकत्तासँ दरभंगाक बंगलागढ़मे बसि गेल रहथि । ओ सभ नामी विद्वान छलाह । हुनकर भविष्यवाणी कखनो गलत नहि होइत छल । दरभंगा महराज हुनका बहुत मान-दान केलखिन । जमीन देलखिन, घर बना देलखिन । तहिआसँ हमसभ दरभंगेक बासी भए गेलहुँ । हमसभ अखनहु घरमे बंगालीए मे बजैत छी । मैथिली सेहो धुरझार बाजि लैत छी। जखन जेहन लोक भेटल तेहने भाषा बाजि लैत छी ।”

“शंकरसँ कोना भेँट भेल?”

दिल्लीमे हम,शंकर,दीपा आ शंकरक पत्नी निशा संगे-संगे पढ़ैत रही । ओतहि परिचय भेल ।

“आ गंगासँ केना परिचय भेल?”

"से तँ गंगे कहत।"

गंगा हमर आवास देखि बहुत प्रसन्न भेल। कहलक-

"बहुत नीक बास अछि। एहन सुभ्यस्त जगह छोड़ि कए केओ किएक दिल्लीमे कोनो कोनामे पड़ल रहत?"

"से बात शंकर बुझथि तखन ने? हुनका तँ जिद लागल छनि जे हम सभ किछु बेचि कए हुनका संगे दिल्ली रही। मुदा दिल्लीक हालति तँ हम देखबे केलहुँ अछि। जँ तूँ नहि भेटल रहितह तँ पता नहि हम अखन कोन हालतिमे आ कतए रहितहुँ,जीबितो रहितहुँ की नहि?"

"हम अपनेकँ सभटा बात कहब। अखन हिनका कनी धरफरी छनि। हिनका बिदा कए दैत छिअनि। फेर जल्दीए आएब। तखन आगूक गप्प-सप्प हेतैक।"-गंगा बाजल।

"हम तँ सोचने रही जे अहाँ संगे रहब आ गामक आनंद लेब। मुदा हमरा अखन तुरंत वापस होएब जरूरी अछि। हम शंकरकेँ अपनेक समाचार सूचित कए देबनि।" - दीपेंदु बाजल। ओ जाइत-जाइत एकटा लिफाफा हमरा हाथमे पकड़ा दैत छथि।"

"ई की अछि?"

"शंकरक चिट्ठी छनि। कहने रहथि जे दरभंगा जेबे करबह तँ हमर गामो चलि जइअह आ ई चिट्ठी हमरा बाबूकेँ दए दिअहुन।"

गंगा आ दीपेंदु बिदा होइत छथि। जाइत-जाइत गंगा कहैत अछि-

“कोनो बातक चिंता नहि करब । हम अखन गामे छी । कखनो कोनो बातक दिक्कति होअए तँ फोन कए देब ।”

गंगा आ दीपेंदु हमरा प्रणाम कए बिदा भए जाइत अछि।

13

गंगा आ दीपेंदु चलि जाइत छथि । हम दलानपर ओछाओल पटिआपर ओहिना बैसल रहि जाइत छी । हमर हाथमे दीपेंदुक देल लिफाफा अखनो ओहिना अछि । लिफाफा नीकसँ साटि देल गेल अछि । ओहिमे बेस मोट किछु कागज धएल बुझाइत अछि ।

“एतेक मोट तँ चिट्ठी नहि भए सकैत अछि । जरूर किछु आओर अछि।”

मोनमे तरह-तरहक अंदेसा होइत अछि,डर होइत अछि। लिफाफा खोलबाक साहस नहि होइत अछि । हम पटिआपर ओंघरा जाइत छी । लिफाफाकेँ सिरमामे राखि लेने छी। पटिआपर पड़ले - पड़ल तरह-तरहक बातसभ सोचा रहल अछि । आँखिसँ निरंतर अश्रुपात भए रहल अछि । पटिआ नोरसँ भिजि गेल अछि। हम मोने-मोन सोचैत रहैत छी-“इएह ओ स्थान थिक जतए एकदिन केहन सुरम्य वातावरण रहैत छल। शंकर,हीरा आ हुनकर माए दौरि कए हमर स्वागत करैत छलीह। हम शनिदिन दरभंगाक इसकुलसँ छुट्टी भेलाक बाद गाम अबैत छलहुँ । सोम सँ शनिदिनक यात्राक अंतमे

गाम अएबाक एकटा गजबकेँ आनंद मोनमे रहैत छल । शंकरक हेतु लबनचूस,हीराक हेतु अलता ,पत्नीक हेतु कहिओ साड़ी,कहिओ चूड़ी कहिओ किछु लेने अबैत छलहुँ । एक बेर जखन हम हुनका हेतु सोनाक चूड़ी लए गेल रही तखनका दृश्य देखैत बनैत छल । ओना ओ अपना लेल कहिओ किछु नहि मंगलीह,कहिओ किछु नहि कहलीह,कहिओ कोनो उपराग नहि देलीह । तहिओ नहि जहिआ हम हुनकर नैहरमे देल गेल गहनासभ पारिवारिक परिस्थितिक कारण बेचि देने रहिअनि । हम एक बेर इसाराटा केलिअनि आ ओ सभटा गहना देहमे सँ नोचि कए फेकि देने रहथि,सहर्ष ।

"हमर गहना अहाँ छी, हमर गहना शंकर आ हीरा अछि। एहि गहनासभक आगू सभ किछु मलिन अछि । ककरो कोनो महत्व नहि।"- ओ बाजल रहथि ।

हम ओहि गहनाकेँ दरभंगा सहरक नामी गहनाक दोकानपर बेचि देने रही । किएक?हमर भतीजीक बिआह होइतैक। बर अएबे नहि करैक । ओकर पिता अड्डी गारि देलखिन जे जाबत हमरा पूरा टाका नहि भेटि जाएत ताबत हमसभ बिआह करए नहि आएब । आब अहीं कहू,एहनमे की कएल जाइत?पूरा परिवारक प्रतिष्ठा दावपर लागल छल । ततबे नहि हमर भतीजीक जिनगीक सबाल छलैक । बहुत नीक घर-वर भेटि रहल छलैक । हम जखन अपन श्रीमतीजीक गहना बेचि कए भाइकेँ टाका देलिअनि तँ ओ जोरसँ सांस छोड़ने रहथि। कृतज्ञतासँ बड़ीकाल धरि हमरा दिस तकैत रहि गेल रहथि ।

हमर भतीजी बिआह नीकसँ भए गेल। बरिआतीसभ संतुष्ट भए वापस भेलाह। बर-कनिआ बहुत प्रसन्न रहथि। हुनकासभक आनंद देखि हमरो बहुत प्रसन्नता भेल रहए। हमर श्रीमतीजीक तँ बाते नहि पुछू। ओ तँ दिन-राति एक कए देने रहथि। घरसँ बाहर धरिक काज करैत रहि गेल रहथि। मुदा हुनकर छुच्छ देह देखि हमरा मोनमे बहुत अपराधवोध होइत छल।

चतुर्थीक प्रात हम अपन पुरनका साइकिलपर दरभंगा बिदा भेल रही। अन्हरोखे भात,दालि,तरकारी,दही खुआ कए ओ हमरा बिदा केने रहथि। लोटामे पानि भरि कए ओ हमर शुभयात्राक कामना करैत रहथि। हम साइकिलपर चढ़बा काल हुनकर खाली देह देखि मोने-मोन संकल्प केने रही जे जाबे हुनकर सौंसे देह गहनासँ छारि नहि देब, ताबत चैन नहि लेब। मुदा एहि संकल्पकेँ सफल होएबामे जिनगी बीति गेल। आइ-काल्हि करैत रहलहुँ। हमर दरमाहा बढ़ैत गेल। इसकुलमे पद बढ़ैत गेल। हम आब इसकुलक प्रधानाचार्य भए गेल रही। पर्याप्त दरमाहा भेटि रहल छल। हम कैक बेर हुनका कहबो करिअनि –"चलू, अहाँ लेल गहना लेबाक अछि।" मुदा ओ टारि देथि। बहुत जोर दिअनि तँ कहि दितथि-"आब कथी अछि जाहिपर गहना पहिरब? सभ काजक समय होइत छैक। जखन मोन रहए तखन से भेल नहि। आब जँ गहना लइओ लेब तँ होएत की? लाकरक शोभा बढ़बैत रहत। फेर समय-सालसे बहुत खराप भए गेल अछि। गहना पहिरि कए बाहर नहि निकलि सकैत छी। कखन

के छिनि लेत,विरोध केलापर जान लए लेत तकर कोनो ठेकान नहि । भने देह खाली अछि । मोन निचैन लगैत अछि ।”

हमरा इसकुलमे प्रतिष्ठा नित्यप्रति बढ़ैत गेल । नीक शिक्षकक पुरस्कार राष्ट्रपतिक हाथे भेटल । समाजमे प्रतिष्ठित भए गेलहुँ । शंकर आ हीराकेँ अपने इसकुलक छात्रावासमे राखि पढ़बए लगलहुँ । दुनू भाइ बहिन बहुत नीक नंबर आनथि । हमर छाती मजगूत होइत गेल । मैट्रिक परीक्षामे दुनू भाइ-बहिन बिहार भरिमे उच्चस्थान प्राप्त कएलाह । शंकरक नाम पटनाक नामी साइंस कालेजमे लिखाओल गेल । हीराक नाम कलकत्ता विश्वविद्यालयमे लिखाओल गेल । दुनूगोटेक खर्चा एकहि संगे होइत रहल । तथापि हमसभ बहुत आनंदमे रही। सोची-“दुनूबच्चा पढ़ि-लिखि जाएत तकरबाद कथुक कमी नहि रहि जाएत । जे चाहब सएह होएत ।”

समयक चक्र आगू बढ़ल । हम प्रधानाचार्यक पदसँ सेवानिवृत्त भए गेलहुँ । दुनू बच्चा शिक्षा समाप्त कए नीक-नीक स्थानपर पहुँचि गेलथि । शंकर दिल्लीमे सरकारी अधिकारी भए गेलाह । हीरा कलकत्तामे डाक्टर भए गेलीह । हम दुनूगोटे बहुत प्रसन्न रही । जे सपना छल से पूरा होइत बुझाएल । जीवन भरिक परिश्रम सार्थक भेल लगैत रहए। “आब हम निश्चिंत भए दुनिआसँ जा सकैत छी ।”-हम हुनका कहिअनि ।

"दुर्इ जाए दिअ। अहाँकेँ सदिखन उल्टे सोचाइत रहैत अछि। अखन अहाँक की बएस भेल अछि? आबे तँ सुखक समय आएल अछि।"

हम कहिअनि-"नहि बाजू। अपनो बातक आँखि लागि जाइत छैक। ओ हँसि देथि आ काजमे लागि जाथि। मुदा भेल सएह। समयके हमर सुख नहि देखल गेलैक। ओकर चक्र घुमल। तकरबाद तँ की-की ने भेल। साइते हम ओ सभ सोचने रहल होअब। बाह रे भाग्य! की-की तमासा करैत रहलह? "

हम लिफाफा माथ तरमे धेने पड़ले छलहुँ की ओकील अएलाह। कोर्टसँ वापस आबिए रहल छलाह। थाकल,झमारल घरमुँहा रहथि। हमरा ओना उदास पड़ल देखि साइकिलकेँ ठामहि ठार कए हमरा लगमे आबैत छथि। हम हुनकर आहट नहि सुनि सकलहुँ। सोचैत-सोचैत आँखि लागि गेल रहए। ओकील चुपचाप हमरा बगलमे बैसि जाइत छथि। झोरामे सँ पनबट्टी निकालैत छथि। अपनेसँ पान बनबैत छथि आ हमरा उठेबाक प्रयास करैत छथि-

"भैया! पान बनओने छी।"

पानक नाम सुनितहि हम फुरफुरा कए उठि जाइत छी। माथ तरसँ लिफाफा सरकि जाइत अछि। ओकीलक दृष्टि ओहि लिफाफापर पड़ैत छनि। हमरा दिस पान बढ़बैत कहैत छथि-

"ई कथी अछि?"

“की जाने गेलिऐक की छैक? दिल्लीसँ शंकर दीपेंदुक हाथे पठओलाह अछि। तखनसँ पड़ले छी । लिफाफा खोलबाक साहस नहि भए रहल अछि ।”

“से किएक? लिफाफामे कोनो बम थोड़े हेतैक?”

“कए बेर शब्द बमोसँ बेसी खतरनाक आ कष्टकर भए जाइत अछि ।”

“मुदा वस्तुस्थितिकेँ झँपलासँ कोनो समाधान तँ होएत नहि। लिफाफा खोलि कए देखिऔक तँ जे ओहिमे अछि की? शंकर की चाहैत अछि? भए सकैत अछि कोनो नीके बात होइक।”

“से बात तँ बुझलहुँ । मुदा हमर मोने संग नहि दए रहल अछि। हम थाकि गेल छी । सौंसे दुनिआसँ तँ पार पाबि सकैत छी मुदा अपन बेटासँ पार पाएब बहुत मोसकिल अछि । एहीसभसँ दुखी भए तोहर भौजी हमरा गंगोत्री लेने चलि गेल रहथि आ ओतए कहि नहि कतए बिला गेलीह ।”

एतेक बात बजैत-बजैत हमर अबाज अवरुद्ध भए गेल। आँखिसँ नोर झहर-झहर खसए लागल । ओकील मोसकिलमे पड़ि गेलाह । लगमे बैसि किछु कहबाक प्रयास करितथि की हम भावनामे लटपटा गेलहुँ। हमर स्थिति देखि कहैत छथि-

“अहाँ परेसान नहि रहू । हम लिफाफा लेने जाइत छी। घर पहुँचि चैनसँ पढ़बैक । तकरबाद अहाँसँ विस्तारसँ गप्प करब। ताबत अहाँ विश्राम करू । परेसान नहि रहू । आइ-काल्हि ई हवे बहि गेलैक

अछि। कोनो अहींटा एहि स्थितिमे छी से बात नहि छैक। घरे-घर बूढ़सभ असहाय पड़ल अछि। केओ एकलोटा पानि देनहार नहि छैक। अहाँक लेल तँ कम सँ कम हमसभ हाजिर छी।”

हम बकर-बकर हुनका देखैत रहलहुँ,सुनैत रहलहुँ। ओकील लिफाफा लए साइकिलपर चढ़ि बिदा भए जाइत छथि। ओ अपन दलानपर पहुछलथि। ताहिसँ पहिनेसँ मुखिआ ओतए पहुँचल रहथि। हुनका देखितहि ओकीलक कान ठाढ़ भए जाइत अछि।

“बात की छैक? ई मुखिआ तँ घमंडे चूर रहैत छल। बजअलोपर नहि अबैत छल। ककरोसँ कहबा दैत-

“बीडीओ साहेबक ओहिठाम गेल छथिन।”

एकदिन तँ ओकील ओकरा झूठ बजैत सद्यः पकड़ि लेने रहथि। ओ छल अपने घरमे। ओ जखन ओकरा ओहिठाम गेलाह तँ ओकर भतीजी कहैत अछि-

“ओ तँ अन्हरोखे कतहु चलि गेलखिन।”

“मुदा हुनकर साइकिल तँ एतहि छनि।”

“ककरो संगे मोटर साइकिलपर गेलखिन।”

एतेक सिखा-पढ़ा कए ओ नान्हिटा नेनाकेँ ओकील लग पठओने रहए। मुदा ओहो ठहरलाह ओकील। बात सँ बात निकालब हुनकर धंधा छलनि। जेबीसँ चाकलेट निकालि कए ओहि बच्चाकेँ देलखिन कि ओ बच्चा तुरंते बकए लगलैक-

"काका घरेमे छथिन । अहाँकेँ देखितहि हमरा सिखा-पढ़ा कए पठा देलाह । ओकील सोझे केबारमे धक्का मारलाह । सामनेमे मुखिआ ठाढ़ तमाकुल चुना रहल छल । ओ ओकीलक तमसाएल मुद्रा देखि अपसियांत भए गेल ।

"की भेल? की भेल?"

"होएत की कपार? तोरासन झूठ्ठा मुखिआकेँ देखार करब जरुरी बुझाएल । तेँ.."

ओकील एतबे बाजल रहथि कि ओ पैर पर खसि पड़ल, माफी माङए लागल ।

"की कहैत छी? मुखिआक धंधामे ई सभ करए पड़ैत छैक।"

ओकील बिना किछु उत्तर देनहि ओहिठामसँ चलि गेलाह ।

घर पहुँचि ओकील साइकिल रखैत छथि । चापाकलसँ एकलोटा पानि निकालि पिबैत छथि । पान बनबैत छथि । एकटा पान अपने खाइत छथि आ दोसर खिल्ली मुखिआ दिस बढ़ा दैत छथि ।

"एकर कोन काज छलैक । हम तँ कनीके काल पहिने तमाकुल खेनहि रही ।"

"खा लिअ । मोन बदलि जाएत ।"

मुखिआ पान खाइत छथि । फेर ओकील लग राखल खाली कुर्सीपर बैसि जाइत छथि।

"आइ की बात छैक जे अहाँकेँ स्वयं आबए पड़ल ।"

“ओकील लग तँ ककरा-ककरा नहि आबए पड़ैत छैक। हम की छी?”

“से की भेलैक?”

“अहाँकेँ तँ सभ बात बुझले अछि तथापि अंठओने छी। उल्टे हमरेसँ पुछैत छी जे की बात छैक?”

“जखन ओकील लग अएलहुँ अछि तखन तँ साफ-साफ बात करू। बुझौअलि नहि बुझाउ।”

“रे ओ शंकर, अहींक भातिज सभकेँ फँसा कए चलि गेल। हमरासँ दस लाख अगाउ सेहो लए लेलक। जखन बात आगू बढ़ि गेलैक तँ आब तरह-तरहक फसाद सुनि रहल छी।”

“एतेक चलाक नहि बनू। जखन अहाँ ओकरा अगाउ देबए लगलिऐक तखन हमरासँ पुछलहुँ? हे हमरा छोड़ू ,हुनकर पितासँ तँ पुछि लितिअनि। तखन तँ भेल जे उगह चान की लपकह पूआ। आब जखन झंझटि बढ़ि गेल तँ हम मोन पड़लहुँ अछि। एकटा बात कान खोलि कए सुनि लिअ।”

“की?”

“ई हमर परिवारक संपत्ति थिक। एहिमे शंकरक कोनो योगदान नहि छनि। ककर मजाल छैक जे हमरा जीबैत ओहिपर पैर दए सकत। हमर आ मनोहरक खून एक अछि। हम एक छी। जँ केओ ओहि बीचमे पड़त तँ भोगत, चाहे ओ केओ होअए।”

मुखिआक सीटीपीटी गुम्म रहए। किछु बाजले नहि होनि। बहुत प्रयास कए जेबीसँ दस हजारक नोटक गड्डी निकालि कए आगू राखि देलखिन। ओकील ओकरा चट दए जेबीमे रखैत छथि। पनबट्टी खोलैत छथि। पान लगबैत मुखिआकेँ कहैत छथिन-

"देखू। ओकीली फराक छैक आ समाजिकता दोसर बात छैक। अहाँ अपन लोक छी। हमर बात सुनि लिअ। एहीमे अहाँक कल्याण अछि।"

"की?"

"अहाँ हमर पारिवारिक मामिलामे टांग नहि अड़ाउ।"

"हद भए गेल। हम तँ टाका दए हुनकर जमीन कीनि रहल छलहुँ। कोनो मंगनी थोड़े ठगि रहल छिअनि।"

"जे चीज शंकरक छनिहे नहि से ओ कोना बेचि सकैत छथि? परिवारक संपत्ति बाहर चलि जाएत आ हम देखैत रहि जाएब? ई संभव नहि थिक, हम एहि लेल गरदनि कटा लेब, मुदा एक बीत जमीन ककरो छुबए नहि देबैक।"

"तखन?"

"तखन की? अपन घरमे चैनसँ रहू।"

"आ जे दसलाख अगाउ देलिऐक से?"

"पहिने ने पुछितहुँ। आब की होएत? तथापि अपन कागज देने जाउ। हम ओकरा पढ़ब। तकरबादे गप्प करब।"

मुखिआ एकटा संचिका ओकीलकेँ दैत कहैत छथि-

"हमरा इच्छा छल जे दुनूगोटे मिलि कए एकरा निपटा लितहुँ।"

"कहक माने जे अहाँकेँ अपन चीज हम लेबए दितहुँ। ई सभ बिसरि जाउ । बहुत महग पड़त । अहाँ सन-सन कतेको मुखिआकेँ कहि नहि कतए पहुँचा देलहुँ ।"

मुखिआ फेर एकटा लिफाफा ओकीलकेँ दैत कहैत छथि-

"ई लगा कए बीस हजार भेल । आगूओ जे कहब से हेतैक। मुदा हमरा कम सँ कम अगाउ तँ वापस करा दिअ।"

"हमरा कागज देखए दिअ । तखने गप्प करब ।"

मुखिआ चलि जाइत छथि । ओकील बहुत प्रसन्न मुद्रामे छथि।

"आइ तँ घरे बैसल आमदनी भए गेल । दिनभरि ओहिना छलहुँ ।" -ओ मोनेमोन सोचैत छथि ।

14

ओकील क्रमशः सभटा कागजकेँ पढ़लनि । फेर एकटा मुस्कीक संग मोछपर हाथ फेरलनि।

"ई मुखीआ बहुत घमंडमे रहैत छल। आब पता लगतैक असलिअत । कागजसँ साफ झलकैत अछि जे भैयाक दस्तखत नकली छनि । ओ किन्नहु एहन काज कइए नहि सकैत छथि । ने

हुनकर एहि काजमे सहमति छनि। से बात तँ ओ कैक बेर स्पष्ट कए चुकल अछि। दोसर बात जे सभटा जमीन-जायदाद भैयाक नामे छनि। अखन धरि शंकरकेँ ओहि संपत्तिकेँ एमहर-ओमहर करबाक कोनो अधिकार नहि छनि। तखन जे ई मुखिआ एहि काजमे कुदल से गलती केलक। आब भोगओ ओकर फल। हम तँ किन्नहु छोड़बैक नहि। सभटा ओलि चुका कए रहबैक। असलमे ई आदमी अछिए दूनंबरी। ने तँ एहन काज करितए किएक? चुपचाप शंकरसँ हिसाब-किताब करए लागल। कोनो बात नहि, आब एकरो समय लगीच लगैत छैक।"

तकर बाद ओ हमर बला लिफाफाकेँ खोलैत अछि। ओहूमे ओही एकरारनामाक दोसरप्रति रहैक। संगे हमर नामे शंकरक लिखल चिट्ठी रहैक। ओकील सौंसे चिट्ठी पढ़ि गेलाह। फेर एकटा पान लगओलनि। मोछपर हाथ फेरलनि आ हमरा ओहिठाम बिदा भेलाह। भोरक आठ बजैत छलैक। हम अपन कोठरीमे पड़ल छलहुँ। काजबाली चाह बना कए दए गेल छलि। जलखैक ओरिआन कए रहल छलि। ओही समयमे ओकील हमरा लग पहुँचलाह।

"भैया! भैया!" ओ कैक बेर चिकरलाह। हम किछु सोचि रहल छलहुँ। नहि सुनि सकलिअनि। ओ हमरा सामनेमे ठाढ़ भए जाइत छथि।

"एतेक नहि सोचू। हम कखनसँ अहाँकेँ अबाज दए रहल छी।"

“ऐँ!”

जेना हुनकर भक्क टुटलनि । कहैत छथि-

“की कहिअह? दिन-राति मोन शंकरेपर लागल रहैत अछि। ओकर माए बेरि-बेरि कहि गेल छथि जे शंकरक ध्यान रखबैक । ओकरा दुनिआदारीक ओतेक ज्ञान नहि छैक । ओकरा बातपर नहि तमसाएब । आखिर अपनासभक ओएहटा बेटा अछि। चिन्नीक लड्डू टेढ़ो मिठ्ठे होइत छैक । आब जखन ओहो नहि छथि,हुनकर कहल एक-एकटा बात हमरा मोनमे ऊपर होइत रहैत अछि । हम एकदम असमर्थ अनुभव कए रहल छी । ई बुझितो जे शंकर गलत कए रहल छथि,हम किछु प्रतिकार नहि कए पाबि रहल छी,नहि कए सकैत छी। हमरा लगैत रहैत अछि जेना शंकरक माए हमर सामनेमे ठाढ़ि छथि .निहोरा कए रहल छथि-

“हमर बेटाकेँ बकसि देब। ओ हमर हृदय अछि । ओकरा बिना हमर मुक्ति संभव नहि अछि ।”

इएह कारण रहैक जे ओहनो हालतिमे हम शंकरक बात मानि पहिल बेर ओकर डेरापर दिल्ली चलि गेल रही । चलि तँ गेलहुँ मुदा रहि नहि सकलहुँ। परिस्थितिक आगू विवश भए गेलहुँ।

“इएह थिकैक मोह । अहाँक दुखक कारणे बेटाक प्रतिए अंधमोह थिक । धृतराष्ट्र कोनो महाभारतेमे भेल से नहि । ओ तँ एकटा उदाहरण छल । आब एहन उदाहरण तँ घरे-घर भेटि जाएत। पुत्रमोहमे

अंधभेल पिताक अंतहीन दुर्दशा देखि-देखि समाज पाथर भए गेल अछि ।”

“मुदा कएल की जाए?”

“से कोनो अहाँकेँ बूझल नहि अछि । सभ बात अहाँ जनैत छी । मुदा किछु कए नहि सकैत छी । तखन दोसर-तेसर की कए सकत? किएक अपन जीवनकेँ अहाँक चलते अशांत करत?”

हम ओकीलक मुँह देखैत रहि जाइत छी ।

“की कोनो गलत बात कहलहुँ? हमर बेटा सभ दिनसँ योग्य अछि,विद्वान अछि,अहाँक प्रतिए श्रद्धावान अछि । मुदा टाकाक अभावमे ओ एम.एस.सी नहि कए सकल,इंजिनीयरिंगमे नाम नहि लिखा सकल । अहाँकेँ ओकर परेसानी बूझल रहए । मुदा कहाँ कहिओ साहस भेल जे कहतिऐक-“कोनो बात नहि भातिज । हम तोरा लेल ठाढ़ छी । तूँ जतेक पढ़बह से पढ़ह । हम मदति करबह। बहुत मोसकिलसँ ओकरा सरकारी नौकरी भेटि गेलैक जे अखनो जान बाँचल छैक। हमहूँसभ इज्जतिसँ जीबि रहल छी ।”

“आब एहिसभक की हिसाब अछि?”

“बातो सही छैक । जे होएबाक छल से भए चुकल । मुदा जखन बात उठैत छैक तखन तँ बजाइते छैक । सत्य कखनो-ने-कखनो मुँहपर आबिए जाइत छैक।”

ओकीलक बात सुनि कए हम आओर दुखी भए गेलहुँ । ओ ई बात बुझलक । ताबत काजबाली दू कप चाह लेने आएलि। दुनूगोटे चाह पिबैत छी ।

"लिफाफामे की रहैक?"

"शंकर अहाँक नामे चिठ्ठी लिखलनि अछि आ संगे एकटा एकरारनामा से छैक जाहिपर अहूँक दस्तखत अछि ।"

चाह खतम भए जाइत अछि । हम जिज्ञासासँ ओकील दिस देखैत छी । हम किछु पुछितिऐक ताहिसँ पहिने ओ बजैत अछि-

"हम शंकरक चिट्ठीकेँ पढ़लहुँ । पढ़क नहि चाहैत छल। पिता-पुत्रक बीचमे हमर उपस्थिति उचित नहि । मुदा हमहूँ कोनो आन तँ छी ने । कतेको दिन हुनकर नेकरम केने छी । कोरामे खेलओने छी। इसकुलमे नामो लिखाबए अहाँ हमरे पठा देने रही। फेर ओहि लिफाफाकेँ देखबाक, पढ़बाक भार अहाँ हमरा देने रही।"

"सोझे कहह ने जे ओ की लिखलक अछि?"

"हम अहाँकेँ चिठ्ठी पढ़िए दैत छी ।" -से कहि ओकील चिठ्ठी पढ़नाइ शुरू करैत छथि ।

"पूज्य बाबू,सादर प्रणाम । हम बहुत मोसकिलसँ अहाँकेँ दिल्ली अनने रही । ओना तँ अहाँ कहिओ हमर बात ने बुझलहुँ ने मानलहुँ ,मुदा एहि बेर जखन माए गंगामे बहि गेलीह तखन अहाँ सुन्न भए गेल रही । संभवतः माएक स्मृतिमे अहाँ परेसान भए गेल रही । अहाँकेँ नीकसँ बूझल अछि जे माए हमरा बिना शांत नहि भए सकैत

अछि। मरिओ कए ओ हमरे लग भटकैत रहि जाएत। तेँ एहि बेर हमर बात अहाँ नहि टारि सकलहुँ। हमर डेरापर दिल्ली अएलहुँ । एहि बातसँ हम बहुत प्रसन्न भेल रही । सोचने रही जे आब अहाँकेँ सभ दिन अपने संगे राखब । ताहि लेल बड़का मकान किनबाक योजना बना लेने रही । ओतेक टाका एक बेर हम कतएसँ अनितहुँ? तेँ सोचलहुँ जे गामपर व्यर्थ पड़ल जमीनकेँ खसका कए ई काज आसानीसँ भए सकैत अछि । हमरा नीकसँ बूझल अछि जे अहाँकेँ गामसँ,गामक चीज-वस्तुसँ बहुत भावुक लगाओ अछि। अहाँ किन्नहुँ ई प्रस्ताव नहि मानब। मुदा दोसर कोनो रस्तो नहि छल। तेँ हम गाम जा कए मुखिआसँ गामक जमीन-जायदादकेँ बेचबाक चर्च केलहुँ । पहिने तँ ओ असमंजसमे रहथि। मुदा अंततोगत्वा, ओ मानि गेलाह । दिल्ली आबि कए हमरा दस लाख टाका दए गेलाह । हम हुनका संगे एकरारनामाक कागजपर दस्तखत कए चुकल छी । अहूँक बदलामे हमही दस्तखत कए देने छिऐक । अहाँक दस्तखतक हम नेनेसँ नीकसँ नकल कए लैत छी। कैक बेर अहाँ हमरा मनो केलहुँ। मुदा हम एकर अभ्यास करैत रहलहुँ । आब तँ केओ नहि कहत जे ओहि कागजपर कएल गेल दस्तखत अहाँक नहि अछि। तइओ जँ अहाँ से करब तँ हम जहल जाएब,से तँ अहाँ कदापि नहि चाहब । तँ मुखिआ मानि गेलाह । एकरारनामा तैयार भए गेल । हम अगाउ टाका लए लेने छिऐक । आब एहि मामिलामे कोनो लज्जति नहि छैक । सभक कल्याण एहीमे अछि जे ओहि काजकेँ अंतिम रूप देल जाए,समय

निकालि कए पंजीकरण कए देल जाए । अहाँ दिल्ली हमरा संगे रहब। जे मोन होएत से करब,जेना मोन होएत तेना रहब । हम जेहन छी,जे छी मुदा छी तँ अहींक । तेँ आपसमे मिलि कए रहबेमे कल्याण थिक।

रहल अहाँक पुतहुक बात से हम साफे खोलि कए कहि दैत छी । हमर हुनकर अखन धरि विधिवत बिआह नहि भेल अछि । हमसभ सालभरिसँ संगे रहैत छी । एक-दोसरकेँ लगीचसँ बुझबाक प्रयासमे लागल छी । सभ किछु अनुकूल रहल तँ कानूनी तरीकासँ बिआह हेतैक । तखने ओ अहाँक पुतहु हेतीह । ओ केरलक क्रिश्चन परिवारक छथि । हुनकर पिता दिल्लीमे उच्च सरकारी अधिकारी छथि । ओहोसभ हमरासँ प्रभावित छथि । एकदिन भेँट भेल तँ कहए लगलाह- “अहाँ दुनूगोटे वयस्क छी । जे उचित बुझाए से करू।” हम हुनकर वैचारिक उदारतासँ आश्चर्य चकित रही । एकटा अहाँसभ छी। ई होएबाक चाही ओ नहि होएबाक चाही । एही गुनधुनमे जिनगी बीति गेल । दरभंगा-मधुबनीसँ आगा सोचबाक काजे नहि बुझाएल । दुनिआ कतए सँ कतए चलि गेल । मुदा अपना ओहिठामक लोकसभक माथा जस के तस छैक । मुदा ई बेसी दिन चलतैक नहि, कतौ चलैक? लोक बाहर भेल,चारूकात भए रहल परिवर्तनसँ मुखापेक्षी भेल। सुंदर-सुंदर वर-कनिआसभ देखबामे अएलैक । तखन ओ जँ आगू बढ़िए गेल तँ कोन आश्चर्य?

ओहि राति अहाँ चुपचाप हमर डेरासँ कतहु निकलि गेलहुँ। रातिक तीन बजे हमरा एकर अंदाज भेल । हम लघुशंका करए उठल रही । बाहरबला केबार खुजल बुझाएल । कोठरीसँ अहाँ नदारद रही। सौंसे देह थर-थर काँपए लागल । रातिमे अहाँ कतए कोना होएब से सोचि देहक रोइआँ ढाढ़ भए गेल । निशाकेँ उठेलिऐक । ओ थोड़बे काल पहिने सुतल छलि। किन्नहु उठबाक हेतु तैयार नहि भेलि। दीपेंदुकेँ फोन केलिऐक। जे बात छैक ओ एतेक रातिमे दौड़ल हमरा लग आबि गेल । मुदा ओहो की करितए? ओतेक राति कए दिल्ली सन महानगरमे अहाँकेँ कतए ताकैत फिरैत? दुनूगोटे गप्प-सप्प करैत भोर कए देलहुँ । ओ कैकठाम फोन केलाह। मुदा अहाँक कोनो थाह नहि चलि सकल। हम एहि मामिलाकेँ थानामे नहि देबए चाहलहुँ । कारण परिवारक बात सड़कपर आनब कोनो नीक बात नहि होइत? तेसर दिन दीपेंदु फोन केलक-

"चिंता नहि करू । बूढ़ा सुरक्षित छथि आ अपन गाम पहुँचि रहल छथि ।" तकर बादे हमरा चैन भेल । जे-से । आब जखन अहाँ गाम फेरसँ पहुँचिए गेल छी तँ मामिलाकेँ फेरसँ ओझराएब नहि । मुखिआक कोनो दोष नहि छैक । जँ केओ दोषी थिक तँ ओ हम छी । हमरा जहल पठाइए देब तँ अहाँकेँ की भेटत? सोचिऔक-माएक आत्मा कतेक कुही हेतैक? ओ मरिओक आशांत भए जाएत । तेँ अहाँ अपन स्वार्थसँ ऊपर उठि एहि समस्याक समाधान होमए दिऔक । जँ से नहि भेलैक तखन जे होएबाक से हेतैक । भावी प्रवल....।

अहाँक पुत्र

शंकर ”

ओकील तँ चिट्ठी पड़बामे लागल रहए । कहि नहि कखन हमर आँखि मुना गेल । हम पटिआपर बामा मुँहे लोटि गेलहुँ । चिट्ठी समाप्त भेलापर ओकीलक ध्यान हमरापर गेलैक। ओ हमरा किछु कहबाक प्रयास करैत अछि । हम उत्तर नहि दैत छिऐक। ओ हमरा दिस ध्यानसँ देखैत अछि ।

“ई तँ बेहोस भए गेलथि ।”

ओ आङ्न दौड़ल । चापाकलपर सँ लोटामे ठंढा पानि आनि हमर मुँहपर छिटलक । ठंढा पानि पड़लासँ हमरा कनेक उसास होइत अछि। हम आँखि खोलैत छी । ओकीलकेँ जान मे जान अबैत छैक । ओ जोरसँ हाक देलक-

“दौड़ैत जाउ ...।”

ओकील हमरा उठा-पुठा कए ओसारापर लए जाइत छथि। हमर चिकरब सुनि कए गामक कतेको लोक ओतए आबि जाइत छथि । मुखिआ सेहो आबि जाइत छथि । लोकसभ आपसमे फुसफुसाइत अछि-

“एहि कांडमे मुखिएजीक हाथ छैक । ओ शंकरसँ फरजी कागज बना कए हुनका अपन संपत्तिसँ बेदखल कए देलकनि अछि।”

“ई कोना भए सकैत अछि? ई घर तँ मनोहर अपने बनओने छथि। दसकठ्ठा पुस्तैनी जमीन छोड़ि कए सभटा हुनकर अपन अर्जित छनि। तखन शंकर ओकरा कोना ककरो लिखि सकैत छथि?” - एकटा ग्रामीण बाजल।

“कहाँदनि मनोहरक फरजी दस्तखत कए देने छैक?”-दोसर ग्रामीण बाजल।

“के?”-तेसर ग्रामीण पुछलक।

“आओर के एहन काज कए सकैत अछि?”-चारिम ग्रामीण बाजल।

एहि तरहेँ सौंसे गाम ई बात सभ पसरि गेल। शंकरक प्रति सभक मोनमे आक्रोश छल। मुदा ओ सभ कइए की सकैत छल? जखन शंकरकेँ गाममे रहबेक नहि छनि तखन कोनो ग्रामीण किछु कहथु,किछु सोचथु ताहिसँ ओकरा की फरक होअए बला थिक?

जाबे ओ सभ रहल तरह-तरहक बात उठैत रहल। मुदा ओहिसभसँ किछु समाधान तँ होमए बला छल नहि। तेँ ओकील कहलखिन-

“अखन अहाँसभ अपन-अपन घर जाउ। बेसीगोटेकेँ देखि हुनकर मोन घबड़ाइत छनि। हिनका आरामक जरूरति छनि। हम तँ छीहे। जँ किछु दिक्कति हेतैक तँ हम अहाँसभकेँ बजा लेब।” हुनकर बात सुनि कए लोकसभ क्रमशः ससरैत गेल।

“अहाँ एतेक नहि सोचू । शंकरक जे विचार छैक से ओ अपनापर लागू करओ । अहाँ अपन घरमे छी । अपन अर्जित संपत्तिपर छी । एहिमे ओ की कए सकैत अछि? बेसी बिदति करत तँ भोगत । कानून अपन काज करत ।”

“ई कहनाइ आसान अछि । बेटाक आगू कानूनो फेल भए जाइत अछि । ओ केहनो अछि मुदा हमरा तँ विचारबाक अछि की नहि? आ की हमहूँ ओकरे सन भए जाउ?”

“अहाँकेँ जे नीक बुझाए सएह करू? जँ अहाँक एहन बुद्धि अछि तँ ने अपने बनाओल घरसँ बेदखल भए गेल छी ।”

“से तोरा के कहलकह? हम तँ केहन बढ़िआँ अपन घरमे छी।”

“ई अहाँक भ्रम अछि । शंकर अहाँक फरजी दस्तखत कए सभटा चीज-वस्तु मुखिआक नामे कए देलकैक अछि?”

“एना कोना भए सकैत अछि? हम तँ ककरो नहि लिखलिऐक अछि ।”

“तकर काजे कोन छैक? अहाँक फरजी दस्तखत कएल गेल अछि । जँ कानूनी रूपसँ ई बात सिद्ध भए गेल तखन शंकर जहल जाएत । से अहाँकेँ बरदास्त होएत? किन्नहु नहि होएत । ओ ई बात बुझैत अछि? तेँ तँ अहाँके फुसला कए दिल्ली अनलक जे एतए आरामसँ काज भए जाएत ।”

ओकीलक बात सुनि कए हम अबाक रहि जाइत छी । लगैत अछि जेना धरती हिलि रहल अछि । चारूकात प्रलयक दृश्य उपस्थित भए गेल अछि । जेना उनचासो हबा बहि रहल हो। हमर स्वप्नक महल धू-धू कए जरि रहल छल । शंकर जकरा हम दुनूगोटे जी-जान लगा कए पालन-पोषण केने रही ,आइ शत्रु बनि कए ठाढ़ भए गेल अछि । जकरा-तकरा संगे बिना बिआहकेँ रहि रहल अछि। कहैत अछि जे ओ बादमे ओकरेसँ बिआह करत । पहिने दिल्लीमे घरक जोगार करत । हमरो ओही घरमे राखत । अहीं कहू-एहन माहौलमे हम कोना रहि सकब ? एहिसँ अपना घरमे रहैत अपन माटि-पानिमे मिलि जाएब बेसी नीक । आब हमरा की राखल अछि? हम ककरा बले जिअब ?”

“आ बेटीकेँ तँ संतानमे मोजरे नहि?”

“सेहो कहीं भेलैक अछि । जे पार लागल से ओकरो ओहिना केलिऐक जेना शंकरकेँ केलिअनि । मुदा ओकरो मजबुरी छैक । कलकत्तामे डाक्टरी करैत अछि । दिन-राति ओहीमे लागल रहैत अछि ।”

“अहाँ कतहु नहि जाएब। ककरो अपन दुख नहि कहबैक। जे अहाँकेँ मदति कए सकैत अछि तकरा सटए नहि देबैक । किएक तँ कहीं अहाँक संपत्तिए ने हरपि लिअए । तखन तँ जे होएबाक अछि से होएत ।”

“तँ तूँ की कहैत छह?”

“हम तँ सभदिन एतबे कहलहुँ जे अहाँ हमर जेठ छी । हम सपरिवार अहाँक सेवा करब । अहाँक भातिज सेहो संयोगसँ लगीचेमे अछि । मुदा अहाँ हमर बात सुनब तखन ने।”

15

ओहि दिनक घटनाक बाद हम अस्वस्थ भए गेलहुँ । कैकदिन धरि बोखार लागल रहल । बीच-बीचमे ओकील अबैत रहैत छल । हाल-चाल पुछि जाइत छल । अपना ओहिठामसँ हमर भोजनक ओरिआन सेहो कए देने छल । तीन दिनक बाद हमर बोखार उतरल । देहमे कनीको सक्क नहि लगैत छल । जेना-तेना ओसारापर पटिआ ओछा कए बैसल रही । थोड़बे कालक बाद मुखिआकेँ दलानपर ठाढ़ देखि हमरा चिंता होइत अछि।

“ई की करए आबि गेल?”-हम मोने-मोन सोचैत छी । ओ हमरा लग आबि कए बैसि जाइत अछि ।

“सुनलिऐक जे अहाँ दुखित पड़ि गेल छी । मोन भेल जे अहाँक हाल-चाल लेल जाए । असगर केना की करैत होएब?”

“आब ठीक छी। मुदा बहुत कमजोरी लागि रहल अछि।”

“बोखारमे तँ देहक दुर्गति भइए जाइत छैक ।”

मुखिआ झोरामे सँ समतोला,अनार ,अरनेवा निकालि कए पटिआपर रखैत अछि ।

“ई सभ कतएसँ अनलह?”

"मधुबनी गेल रही । ओतहि बाटा चौकपर बिकाइत देखलिऐक तँ अहाँक ध्यान आएल ।"

"की भाओ देलकह?"

"भाओ नहि पुछू । आइ-काल्हि जँ भाओक हिसाब करब तँ किछु नहि कीनि सकब।"

"एतेक खर्चा करबाक कोन काज रहैक? हम कोनो अमर होमए अएलहुँ अछि । कतबो फल खाएब मुदा एक-ने-एक दिन तँ जेबाक अछिए । ओकील सेहो बहुत रास फल अनने रहथि। काल्हि दरभंगा गेल रहथि। कोनो केस रहनि । ओतहि टावरपर सँ समतोला,सरीफा आ कहि ने की-की किनने अएलाह। सभटा ओहिना चौकीपर राखले अछि ।"

"ओकीले सँ अहाँक समाचार हमरो पता लागल छल । हम हुनका ओहिठाम गेल रही । शंकरबला कागज देखए देने रहिअनि। गप्प-सप्पक क्रममे अहाँक चर्चा सेहो होइत रहल।

हमरा लग मुखिआकेँ बैसल देखि ओकीलकेँ नहि रहि भेलनि।

"कहीं ई दुनू आपसे मे किछु कए लेलक तखन.?"-ओकील मोने-मोन सोचथि । ओ अपन दलानपर सँ सहटि कए हमरा लग आबि गेलाह ।

"केहन मोन लगैत अछि भैया?"

“आब ठीक छी। एतेक आसानीसँ हमर प्राण थोड़े जाएबला अछि जे किछु होएत? हमरा ऐखन बहुत दुर्गति लिखल अछि। ओ पुण्यात्मा छलीह,गंगामे समाहित भए गेलीह,छोड़ि गेलीह हमरा एकसरि एहि दारुण जंजालमे अपन कर्मक फल भोगबाक हेतु।”

“एना किएक बजैत छी? हमर सभक सौभाग्य जे अहाँ जीबि रहल छी। हम एतेक नेतघट्ट नहि छी। अहाँक उपकार कोना बिसरि सकैत छी? धन्यकेँ अहाँ जे हम ओकालतिक परीक्षा दए सकल रही। अहीं हमर परीक्षाक फीस भरने रही। मानलहुँ जे आब समय बदलि गेलैक। हमरो धिया-पुता भेल,अहूँकेँ भेल। मुदा तेँ की? हम ककरोपर आश्रित थोड़े छिअनि। अपन योग्यतासँ कमाइत छी,खाइत छी।”

ओकीलकेँ हमरा लग बैसल देखि मुखिआ जाए लगलाह।

“किएक उठि गेलहुँ? हम तँ अहींकेँ देखि कए आएल रही। भेल जे सभ गोटेकेँ आमने-सामने बात भए जाएत।”

“मुदा ई समय ताहि लेल उपयुक्त नहि अछि। फेर कखनो गप्प कए लेब। हमसभ कतहु जा थोड़े रहल छी?”

हम बकर-बकर ओकील आ मुखिआक गप्प सुनैत रहलहुँ।

मुखिआ उठि जाइत छथि। ओकील हुनकासँ किछु एकांती करैत छथि। दुनूगोटे हँसैत छथि। मुखिआ चलि जाइत छथि। ओकील हमरा लग आबि कए पटिआपर बैसि जाइत छथि-

“अहाँ कोनो बातक चिंता नहि करू। कानून आब बूढ़क रक्षा करैत अछि। एक बेर थानामे दर्खास्त देबैक कि सभ अन्दर भए

जाएत। सभ लिखल-पढ़ल धएले रहि जेतैक। ऊपरसँ जहल जेबाक जोग सेहो बनि सकैत छैक।”

“तूँ हमर बात बूझि नहि रहल छह आ कि बूझए नहि चाहैत छह?”

“से की?”

“हौ बेटाकेँ जखन जहले पठा देबैक तखन हम कौआ जकाँ असगरे जीबिए कए की करब? हमर जे किछु अछि से तँ ओकरे छैक। तखन तँ रहल हमर बात। से देखल जेतैक। हम हीराकेँ समाद दैत छिऐक। ओकरोसँ पुछि लैत छिऐक। फेर जे मोन होएत से करब। नहि कोनो आन उपाय देखाएत तँ वृंदावन चलि जाएब। ओतहि कहिओ टगि जाएब। “मरनो भलो बिदेशमे,जहाँ न अपनो कोई।”हमरा लेल तूँ बेसी परेसान नहि रहह।”

ओकील हमर बात सुनि उदास भए गेलाह। ओ तँ सोचथि जे दुखिताह मोनमे हम हुनकर बातकेँ नहि टारि सकब। मुदा जखन हम फेर शंकरेक चर्च कए देलिअनि,हीरासँ गप्प करबाक बात केलिअनि तँ ओ चुप्प भए गेलाह। एक बेर अपना दिस,एक बेर हमरा दिस देखैत रहलाह। फेर हाथमे लिफाफा लेने अपन दलानपर वापस चलि गेलाह।

16

हम बिचला घरमे असगर चौकीपर बैसल रही । सामने देबालपर हमर परिवारक फोटो टांगल रहए । ई फोटो हमसभ दरभंगामे खिचओने रही । अखनो मोन पड़ैत अछि ओहि दोकानपर पहुँचबासँ पहिने टावरपर हमसभ लस्सी पिने रही। लगपासक दोकानसभमे किछु-किछु किनने रही । तखन ओएह कहलनि-“चलू ,हमसभ एकटा अपन परिवारक सामुहिक फोटो खिचा लैत छी । हम,हमर पत्नी आ दुनू बच्चाक फोटो टावर लगक नामी आर्ट गैलरीमे खिचओने रही । ताहि समयमे फोटो खिचाएब ओतेक आसान नहि रहैक । टाका सेहो बहुत लगैक। फोटोक दूटा प्रति बनबओने रही । दुनूमे फ्रेम लगबओने रही । एकटा फोटो हमर सासु लए लेने रहथि । दोसरकँ ओएह बिचला घरमे टांगि देने रहथि । तहिआसँ घरमे की-की ने भेल । मुदा ई फोटो जस-के-तस टांगल अछि । ओहि फोटोक टांगएबाली कहि नहि गंगामे कतए बिला गेलीह । हीरा अपन सासुर चलि गेलि आ शंकर? कहि नहि हुनकर स्थिति आ परिस्थिति केहन अछि? सुनलिऐक जे केरलक क्रिश्चन सँ बिआह कए लेलक। आब सुनैत छिऐक जे ओ सभ अखन लिभ-इन-रिलेशनमे अछि। माने जे जेना दोकानपर कोनो चीज-वस्तु अटकारैत छी,तखनहि किनैत छी आ कैक बेर खराप निकलि गेल तँ फेरि दैत छिऐक ,सएह बात । जँ लिभ इन बला संगी पसिंद नहि पड़लनि तँ बाइ-बाइ कए देल जाएत।

आएल पानि,गेल पानि बाटे बिलाएल पानि। एकटा अपना लोकनिक समय छल जे कहल जाइक जे बिआह जन्म-जन्मक संबंध होइत अछि। तेँ पतिकेँ मरलोपर ओकरे प्रति निष्ठावान रहबाक प्रयास होइक। ओहो एकटा अतिए रहैक। मुदा शंकर जे केलक वा कइए रहल अछि सेहो तँ हदे केलक अछि। अपन संस्कृतिक सत्यानाश केलाक बादो हाथमे की अएतेक तकर कोन ठेकान? एहि हालतिमे हम ओकरापर कोना विश्वास करू? कोना सभ किछु बेचि-बिकनि ओकरासंगे रहबाक हेतु ओकर डेरापर दिल्ली चलि जाउ? जकर अपने कोनो ठेकान नहि छैक,तकर संग धेलासँ तँ विनाशे होएत? हीरा रहि-रहि फोन करैत रहैत अछि जे हम ओकरे ओहिठाम चलि आबी। बेटीक ओहिठाम जा कए रहब हमरा उचित नहि बुझाइत अछि। कहि नहि ओकर परिवारक की परिस्थिति अछि? फेर ओकर सासु-ससुर सेहो संगे रहैत छथि। एकहि घरमे नीचाँ सासु-ससुर आ ऊपर ओ सभ अपने रहैत अछि। मानलहुँ जे हीरा डाक्टर अछि,स्वयं कमाइत अछि। मुदा ताहि सँ की?

आब ओ फोटो असगर भए गेल अछि -ओहिना जेना हम असगर छी। हमही ओकरा देखैत छी,कहिओ काल ओकरापर सँ गरदा झाड़ैत छी,आ फेर ओकरा यथावत टांगि दैत छी। कैक बेर मोन भेल जे परिवारक स्मृतिक एहि भग्नावशेषकेँ पेटीमे राखि दी,बंद कए दी जाहिसँ ओ बेरि-बेरि हमरा परेसान नहि कए सकए? कैक राति हम ओहि फोटो देखि-देखि प्रात केने छी। होअए जेना ओहि

फोटोसँ ओ निकलतीह,हमरा लग आबि कए बैसि जेतीह,पुछतीह-“चाह पिबैक?” हम किछु बजितहुँ ताहिसँ पहिने दू कप भफाइत चाह लेने अबितथि । दुनूगोटे चाह पीबितहुँ ,तरह-तरहक गप्प करितहुँ । आगूक योजना बनबितहुँ। दुनू बच्चासभक शिक्षाक विषयमे सोचितहुँ । ओ कहितथि-“अपन दुनू नेना ततेक तेजगर अछि जे ओ सभ नाम कइए कए रहत । हमरा लोकनिकेँ आओर चाही की? बच्चासभ बनि जाए,अपन-अपन जिनगी चलाबए तँ हमरासभ हेतु तँ सरकारक देल पेनसने पर्याप्त रहत । की करब आओर लए कए? पेनसने नहि सठत। मुदा ई समय ककरो नहि । ओ चलि गेलीह,अकस्मात । तेना ने गंगामे समा गेलीह जे श्राद्धो करब मोसकिल भए गेल । पंडितसभ निर्णय केलक जे बारह वर्ष हुनकर प्रतीक्षा करए पड़त । जँ ताधरि नहि भेटलीह तखन हुनकर श्राद्ध कएल जाएत । नेना दुनू अपन-अपन रस्ता धेलक। रहि गेलहुँ हम- भूत,वर्तमान आ भविष्यक चक्रव्यूहमे ओझराएल नितांत असगर । मोनक सपना-सपने रहि गेल ।

समाजक जे हाल अछि से देखिए रहल छी । ई मुखिआ तँ कहिआसँ हमर संपत्तिपर बकोदृष्टि रखने अछि आ ओकील तँ हमर पितिऔतौ भेल । ओ तँ तेहन-तेहन नाटक करैत अछि जकर वर्णन करब मोसकिल थिक । कखनहु बेटा लगा कए सपथ खाए लागत । कखनहु बाबा बैद्यनाथकेँ बीचमे आनि लेत। मुदा अछि ओ नेतक बैमान । मोटा-मोटी ओकर कहब जे हम ओकर परिवारमे सामिल भए जाइ । अपन बेटा-बेटीकेँ बिसरि जाइ आ जे किछु संपत्ति हमरा अछि

से भातिजक नामे लिखि दिऐक। ओकरे अपन कर्त्ता घोषित कए दिऐक। जाहिसँ हम सोझे स्वर्ग जाएब। कारण शंकर तँ आब क्रिश्चनसँ बिआह केलाक बाद श्राद्धक अधिकारी रहलाह नहि। जँ ओ पिंडदान करबो करताह तँ हमरा पैठ होएत नहि।

जखन कखनहु हमरा शंकरक उठापटकपर ध्यान जाइत अछि तखन तुरंत हमरा ओकर माएक बात मोन पड़ि जाइत अछि। ओ सदिखन कहैत रहैत छलीह-"हम नहिओ रहब तँ अमर आत्मा शंकरेमे विद्यमान रहत। अहाँ एकर नीकसँ पालन-पोषण करब। ओ किछु गलती कए दिअए तँ तकरा मोनमे नहि धरब। ओकरा अज्ञानी बूझि कए माफ कए देबैक। आखिर अछि तँ ओ अपने सभक संतान।" एहि बेर गंगोत्रीक यात्रासँ पूर्व ओ हमरा एकटा पेटी देने रहथि आ कहने रहथि-एहि पेटीकेँ अहाँ अपने हाथे पुतहुकेँ दए देबनि।

"से किएक? अहाँ कतए जा रहल छी?"

"छोड़ू ओ गप्प-सप्प। जे कहैत छी से सुनू। एकरा सम्हारि कए राखि लिअ।"

हम पेटीकेँ संदुकमे राखि देलिऐक। ओहिमे की छैक की नहि से हमरो नहि बूझल अछि। मुदा हुनकर एहि अंतिम इच्छाक सम्मान केना करब से नहि बुझा रहल अछि ? पुतहु छथि कि नहि छथि,छथि तँ के छथि ? सएह नहि बुझा रहल अछि। एक हिसाबे ई पेटी हमरा बान्हि लेने अछि। हुनकर अंतिम इच्छाक पालन करबेक अछि,कोना नहि करबनि? ताहि हेतु कोनो मूल्य अदा करए पड़त तँ

अवश्य करब । नहि तँ जन्म-जन्म हमरा शांति नहि भेटि सकत । मरलोपर हम ओहिना बौआइत रहि जाएब-अशांत,असंतुष्ट ।

17

गाममे असगर रहैत- रहैत मोन कोनादनि भए गेल । किछु करबाक,बजबाक मोन नहि होअए । कखनो काल ओकील अबैत छल । मुदा सदिखन किछु-ने-किछु घुरपेच लगेबाक चक्करमे रहैत छल । असलमे जखन मोन शुद्ध रहतैक तखन ने सही बात निकलितैक । सभ तँ अपने जोगारमे अछि ओ चाहे मुखिआ होअए वा ओकील होअए वा हमर पुत्र शंकर होथि । एहि परिस्थितिमे गंगे एहन लोक बुझाइत अछि जे बिना कोनो लोभ-लालचकेँ हमर ध्यान राखि रहल अछि । ओहि दिन दीपेंदुक संगे गेलाक बाद कैक बेर फोन केलक । हम कखनो फोन उठा लिऐक कखनो नहि उठा पबिऐक । एमहर कैकदिनसँ मोबाइल चार्ज नहि भेल रहैक । गंगा कैक बेर फोन केलक । मुदा फोन लगबे नहि करैक। ओकरा नहि रहल गेलैक । मंगलदिन भोरे-भोर हमरासँ भेँट करए आबि गेल । हम पोखरिदिससँ वापस आबि कए हाथ मटिअबैत रही कि गंगा देखाएल । ओकरा देखि मोनमे हुलास भेल। ओहो हमरा देखि कए प्रसन्न बुझाइत छल ।

“गोर लगैत छी।”-गंगा बाजल ।

“नीके रहह । कैकदिनसँ तोरेपर ध्यान लागल रहैत छल। पहिने तँ तोहर फोन आबि जाइत छल तँ मोन हल्लुक भए जाए। मुदा एमहर कैक दिनसँ हमर फोन बंद पड़ल अछि ।”

“फोनमे की भेलैक?”

“कहि नहि की भेलैक?

“चार्ज नहि भेल होएत ।”

“भए सकैत अछि । असगर की-की करू । मोन नहि लगैत अछि । जकरे देखू सएह ठकबाक जोगारमे घुमि रहल अछि।”

“ई कलियुग छैक । घरे-घर इएह हाल छैक । हमरो गामक मालिकक इएह हाल छनि।”

“से की?”

“की-की कहू?”

“नातिनक कहलापर गाम-घरक बाँचल-खुचल संपत्ति बेचि कए ओकरा संगे दिल्ली चलि गेलाह । ओकर दुर्घटनामे अकाल मृत्यु भए गेलनि । आब ओ असगर दिल्लीमे एमहर-ओमहर बौआइत रहैत छलाह । केओ देखनाहर नहि, देह काजक नहि, माथा सेहो अपना वशमे नहि । कहाँदनि एकदिन भोरे घर छोड़ि कए निकलि गेलाह । लोकसभ नाम-पता पुछनि। मात्र अपन नामटा मोन रहनि । संयोगसँ पुलिस हुनका एकटा मनोरोगी अस्पतालमे भर्ती करा देलक ।”

“तकर बाद....?”

“कहि नहि तकर बाद कोन हालमे छथि? छथिओ की नहि छथि?”

“तोरा ई बातसभ कोना पता लगलह?”

“दीपेंदु फोन करैत रहैत छथि । ओएह ई समाचारसभ देलथि।”

“सएह कहह...। समय केहन पलटी लैत अछि । राजा, रंक, फकीर केओ एकरासँ नहि बँचि सकल । एक समय छल जे हुनकर गाम-घरमे की धाख छल ।”

“से जे होइक मुदा आदमी नीक नहि छलाह । गरीबसभकेँ बहुत सतओलखिन । हमहूँ हुनके चलते गाम छोड़ने रही ।”

हम गंगाक बात सुनि गुम्म रहि गेलहुँ । गंगा हमर मुँह देखैत रहल । हमरा परेसान देखि कहैत अछि-

“पाप डिरिआइत छैक ने । सएह मालिकोकेँ भेलैक । अपना समयमे कतेकोकेँ उजारि देलक, कतेको निर्दोषकेँ जीवन बरबाद कए देलक ।”

“छोड़ह ओकर चर्च । दीपेंदु शंकरक बारेमे किछु कहैत रहह की नहि?”

“ओ तँ जखन फोन करैत छथि, शंकरक बात उठिए जाइत अछि ।”

“से कोना?”

“हमही किछु-ने किछु पुछि दैत छिअनि ।”

“कहाँदनि शंकरकेँ किछुदिनक हेतु अमेरिका जेबाक छनि।”

“से किएक?”

“निशाकेँ ओतहि नौकरी लागि गेलनि अछि । ईहो ओतहि नौकरी ताकि रहल छथि । जाबे से नहि भेलनि अछि ताबे अबैत-जाइत रहताह ।”

“सएह कहह । जे अपने देश छोड़ि रहल अछि तकरा संगे हम कोना रहितहुँ?”

“की कहि सकैत छी?”

“ई तँ रच्छ भेल जे तूँ भेटि गेलह नहि तँ हमरो हालति मालिके सन होइत । दिल्लीमे कतहु कोनो सड़कपर पड़ल रहितहुँ। तोरे कृपासँ हम जीवित गाम वापस आबि गेलहुँ । मुदा एतहु बेचैन केने अछि।”

“के?”

“आओर के रहत? अपने लोक ने घातक होइत छैक। हमर पितिऔत ओकील छथि । लगैत अछि सभटा ओकालति हमरे पर लगा देने छथि । परसू रातिमे एकटा स्टांपपेपर लेने आबि गेलाह आ कहथि-

“अहाँ एहिपर दस्तखत कए दिऔक आ सभ दिन लेल निश्चिंत भए जाउ । हमरा परिवारमे रहू । जे नून-रोटी हम खाएब से अहूँ खाएब । दुनू भाइ अपन दुख-सुखपर चर्च करब । एकठाम रहब

तँ आनो लोकसभकेँ डर हेतैक। मुखिआ सन-सन सरल लोकक ई साहस जे हमर परिवारक संपत्तिपर बकोदृष्टि राखए। ओकर ओकाति की अछि? कनी एहिसभसँ निपटि लैत छी। फेर ओकरो हम सबक सिखा कए रहबैक।"

"हम कतबो मना करिऐक ओकील मानबे नहि करए। स्टांप पेपरपर दस्तखत कए दिऔक -बस एतबे रटैत रहि गेल। हम मना करैत रहि गेलिऐक। जखन ओ नहि मानलक तँ हम बहुत जोरसँ चिकरलहुँ। दूपहर राति छल। संयोगसँ दछिनबाइटोलसँ किछुगोटे रामलीला देखि कए लौटि रहल छल। हमर चिकरब सुनि कए दौड़ल। ओकरासभकेँ देखि ओकील सकपका गेल आ चुपचाप अपन दलानपर जा कए बैसि गेल। लोकसभ पुछैत रहल-"की भेल?की भेल?" ओकरासभकेँ की कहितिऐक? मुदा किछु तँ कहबेक छल। ओकरसभक जिज्ञासा शांत करबाक छल। आखिर ओ सभ हमरा मदति करए आएल छल।"

"तखन?"

"तखन की? कहलिऐक जे चोर आबि गेल छल ,हल्ला सुनि कए बारीबाटे भागि गेल।"

"हमरा तँ ई बातसभ सुनि कए बहुत चिंता होइत अछि। हम तँ कहब जे अहाँ हमरे संगे चलू। जहिना हमर माए-बाप तहिना अहूँ छी। एहन हालतिमे हम अहाँकेँ असगर कोना छोड़ि दिअ?"

“तूँ हमर कतेक दिन संग देबह? जे हमरा भाग्यमे लिखल अछि से होएत।”

“जखन जे हेतैक से हेतैक। अखन तँ हम गाममे छी। आओर किछु नहि तँ हमही अबैत जाइत रहब। कखनहुँ फोन कए देब। हम तुरंत पहुँचि जाएब।”

“बेसी चिंता नहि करह। हमरा आब की होएत? हम तँ हुनकर संदेशवाहक छी। जहिआ से दायित्वपूर्ण कए सकब तहिए एहि दुनिआकेँ छोड़ि देब।”

“एना नहि बाजू। अहाँ अखन बहुत दिन जिअब। सभ किछु ठीक भए जेतैक। नीक समय अएतैक आ अएबे करतैक।”

साँझ पड़ल जा रहल छल। गंगा बहुत अछता-पछता कए बिदा भेल। जाइत-जाइत ओकर आँखि नोरसँ डबडबा गेलैक। गंगाकेँ जाइत देखि हमरा होइत छल जे भोकारि पारि कए कानी। मुदा कहुना कए अपनाकेँ रोकलहुँ। आखिर गंगा बिदा भेल। हम बहुत काल धरि गंगाकेँ जाइत देखैत रहि गेलहुँ।

18

किछुदिनक बाद निशाकेँ अमेरिकामे स्थायी काज भेटि गेलनि। ग्रीन कार्ड सेहो बनि गेलनि। हुनकर विशिष्ट योग्यताक सम्मान ओहिठामक विद्वत समाजमे होमए लागल। उच्च वेतनमानक संगे नीक नौकरी हुनका भेटि गेलनि। एमहर शंकर शुरूएसँ

दुबिधाग्रस्त छलाह । मोनमे कतहु-ने कतहु हमर ध्यान छलनि । हमर रहनि कि नहि ,गामक संपत्तिक हिसाबक -किताब करबाक छलनि । मुखिआसँ अगाउ सेहो लए लेने रहथि । मुदा हम एहि काजमे सहयोगी नहि भए रहल छलिअनि । ओमहर निशा हुनका साफे कहि देलखिन-

"हम अहाँक दोस्त छी, कोनो कनिआ नहि छी । एकसंगे हमरसभक समय नीकसँ बीतल । आब हम अमेरिकामे छी आ आगूओ एतहि रहबाक योजना अछि । एहिठामक समाजमे हमरा इज्जति अछि, उत्तम नौकरी अछि, आ की नहि अछि? तखन अहीं कहू जे हम कतेक दिन धरि अहाँक प्रतीक्षा करू? जँ अहाँ आबी आ एहिठाम रही तखन तँ हम किछु सोचबो करी । नहि तँ जीवन ककरो बिना ठहरि नहि जाइत अछि । समय तँ आगू बढ़बे करत।"

शंकरकेँ निशाक ईमेल भेटलनि । ईमेल पढ़िकए सौंसे देहक रोइआँ ठाढ़ भए गेलनि । किछु बाजल नहि होनि,सोचल नहि होनि । ओ ठामहि ओछाओनपर पड़ि गेलाह । थोड़े काल ओहिना सुस्ताइत छथि । फेर टेबुलपर सँ मोबाइल उठाबैत छथि। हमर फोनक घंटी बजैत अछि । फोनमे शंकरक नाम उचरैत अछि-

हम किछु पुछिअनि,किछु कहिअनि ताहिसँ पहिनहि ओ बाजए लगैत छथि-

"हमरा आब अमेरिका जाएब बहुत अनिवार्य भए गेल अछि। निशा पहिने ओतए जा चुकल छथि । हमरो नौकरीक जोगार ओएह कए रहल छथि । जँ हम देरी करब तँ सभ किछु बरबाद भए जाएत ।

ने हमर कनिआ रहतीह आ ने नौकरी रहत। हम चाहैत रही जे अहाँकेँ अपना संगे राखी । ताहि लेल दिल्लीमे मकानक ओरिआन केने रही। किछु अगाउ सेहो दए देने रहिऐक। बँकिए टाकाक ओरिआन गामसँ करबाक छल । हम जेना-तेना मुखिआकेँ मनओने रही । मुदा अहाँ तेहन ने केलहुँ जे हम ने एमहरकेँ रहलहुँ ने ओमहरकेँ ।

निशा हमरासँ पहिने अमेरिकामे नीक जकाँ व्यवस्थित भए गेलथि । हमरो हुनके संगे ओही कंपनीमे ओएह काज भेल छल । मुदा अहींक चक्करमे हम लटपटा गेलहुँ । हमरा तँ अमेरिका जाए पड़त । समय बेसी नहि अछि । एक सप्ताहमे ओहि काजकेँ नहि पकड़ब तँ हाथसँ निकलि जाएत । तेँ अगिला बुध दिन हम अमेरिका बिदा भए जाएब । हमर वीजाक कागज आइ भेटि जाएत। टिकटक ओरिआन तँ अमेरिकाक कंपनीए कए देने अछि। अखन अहाँसँ भेँट नहि भए सकत । ताहि बातक मोनमे अफसोच अछि । मुदा हालति तेहने अछि जे की कएल जाए? अहाँ एतबा करब जे मुखिआक समस्याक समाधान कए लेब । हम ओकरासँ दसलाख टाका अगाउ लेने छिऐक। ताहि बदलामे गामक चीज-वस्तु ओकरा देबाक छैक । से जेना जे होअए से अपन फरिछा लेब। अमेरिका पहुँचलापर आगूक समाचार लिखब ।”

शंकर धराधर अपन बात कहि देलाह । हम की बजितहुँ? किछु बाजले नहि भेल । फोन कटि गेल । कैकदिनक बाद गंगाक फोन आएल तँ ओ कहलक-“सुनैत छी जे निशा अमेरिकामे घर कीनि

लेलथि। शंकर सेहो निशाक कंपनीमे काज पकड़लनि अछि। मुदा रहैत छथि फराके।"

"मुदा तोरा ई सभ कोना पता लगलह?"

"दीपेंदु फोन केने छलाह।

19

गंगाकेँ गाम अएला मासदिनसँ बेसी भए गेलैक। सोचने रहए जे सात-आठ दिनमे वापस भए जाएब। मुदा गाम अएलाक बाद वापस दिल्ली जेबाक मोने नहि होइक। अपनोसँ बेसी ओकर माए-बाबूकेँ गामेमे रहबाक इच्छा होइ। मुदा गाममे कतेक दिन रहि सकैत? जिबाक कोनो साधन तँ चाही। गाममे आब खेती केओ करैत नहि अछि। कारण ओहिमे लागतो वापस नहि होइत छैक। ओना आब कतेको गोटे चौकपर दोकान खोलि लेने अछि। केओ किछु,केओ किछु बेचि कए जीवन-यापन करैत अछि। मुदा गंगाक तँ दिल्लीमे सभटा ओरिआन रहैक। छोट-छिन अपन घर रहैक,अपन आटो रहैक। आटोसँ ओतेक कमा लैत छल जे ओकर पूरा परिवार सुखसँ जीबए। लोककेँ देबे करैक,लेबाक प्रश्न नहि छलैक। अपन घरक पछुअतिमे एकटा छोटसन कोठरी किरायापर लगा देने रहए। ओहूसँ किछु आमदनी भए जाइक। कुलमिला कए ओ दिल्लीमे नीकसँ गुजर कए लैत छल। मुदा ओकर माए-बाबूकेँ सदिखन गामे मोन पड़ैत रहैत छलैक। जकरे -तकरे पकड़ि लितए आ गाम-घरक

बात उठा दितए। अनका ओहि गप्प-सप्पमे कोनो मतलब नहि रहैत छलैक। तेँ मौका देखितहि घसकि जाइत। जे-से।

गंगा गाम आएल,किछुदिन रहबो कएलक। आब ओकर बचतसभ खर्च भए गेलैक। एतेकदिन तँ गाममे इज्जतिसँ समय काटि लेलक। मुदा जखने लोक बुझतैक जे ओकरा पाइ नहि छैक,मदतिक प्रयोजन छैक तखनहि अपनो लोक कात भए जेतैक। ओना गाममे अखनहु लहना चलैत छैक। दूरुपया सैकड़ापर जतेक टाका चाही भेटि जाएत। मुदा ओ कर्जा जानलेवा होइत छैक। सुदिए तरे लोक बिका जाइत छल। गंगा एहि भ्रमरमे फसए नहि चाहैत छल। तेँ एकदिन भोरे उखरामे माए-बाबूकेँ चाहक संगे गप्प-सप्प करैत काल कहलकैक-

“आब अपना सभकेँ दिल्ली वापस चलबाक चाही।”

“से किएक? केहन बढ़िआँ समय कटि रहल छैक।”-ओकर बाबू कहलकैक।

“मुदा आब हमर टाका समाप्त भए रहल अछि। जँ आब वापस नहि भेलहुँ तँ टिकसोक हेतु कर्जा लेबए पड़त। गामक कर्जाकेँ तँ बुझिते छिऐक। सधबैत-सधबैत जिनगी बीति जाएत। तेँ इज्जति बँचा कए सभ गोटे गामसँ निकलि जाइ। एहीमे सभक कल्याण अछि।”

आखिर सभ गोटेमे सहमति भेलैक। सभ गोटे फेर दिल्ली वापस भए जाएत। रेलटिकटक जोगार कएल गेल। गामक सभ

समानसभ सरिआओल गेल । लगपासक लोकसभसँ भेँट-घाँट कएल गेल । लोकसभ बहुत अपनत्व देखबैत रहल ।

“अखने तँ एतेक दिनपर गाम आएल छलह । किछुदिन रहितह । पाबनिसभ आबि रहल छैक । देखितहक जे आब कोना की होइत अछि।”

“हमरो संगे लेने चलिअह । हमहूँ काज करब । आब गाममे लज्जति नहि छैक ।”

“गाममे अनेरे लोक गाल फुलेने रहैत अछि । एहनमे बाहरे नीक । अपन कमाउ, खाउ आ चैनसँ पड़ल रहू । केओ अनेरे टोकारा नहि देत।”

एहि तरहें जकरा जे मोन भेलैक कहैत गेलैक । गंगा सभकेँ सुनैत गेल । ओ नीकसँ बुझैत छल जे जहिए ककरो लग हाथ पसारब,खिस्से बदलि जाएत । जखन सभटा ओरिआन भए गेलैक,दिल्ली जेबासँ एकदिन पहिने गंगा हमरासँ भेँट करए आएल। हम दनाने पर पटिआ ओछा कए बैसल रही । हमरा देखिते भोकारि पारि कए कानए लागल । हमरा बुझेबे नहि करए जे अबिते-अबिते ओकरा की भए गेलैक?

“गंगा! गंगा!”

हम ओकरा बौसबाक प्रयास करैत छी । गंगा हमरा भरि पाँज पकड़ि लैत अछि । आँखिसँ नोर झर-झर खसि रहल छैक ।

“बात की छैक? तूँ एतए अबिते एना किएक कानि रहल छह?”

“हमसभ काल्हि गामसँ चलि जाएब। टिकट कटा लेने छी। हमर माए-बाबूकेँ जेबाक मोन नहि रहैक। मुदा उपाय की छल? जेबी खाली भए गेलाक बाद गाममे रहब खधिआमे खसब थिक।”

“तखन...”

“तखन की करितिऐक? गाममे कतेक दिन गुजर हेतैक? दिल्लीमे कम सँ कम इज्जतिसँ कमा लैत छी।”

“तूँ चलि जेबह से सुनि हमरो दुख भए रहल अछि। तोरा लगीचमे रहलासँ एकटा आशा रहैत छल। होइत छल जे शंकरक किछु समाचार कहबह। मुदा हमरा चलते तूँ अपन जीवन किएक खराप करबह। जखन हमर बेटा छोड़ि गेलाह तखन की कहल जा सकैत अछि?”

“एक बेर हीरासँ किएक नहि गप्प करैत छी? ओहो तँ अहींक संतान अछि। की पता ओ किछु समाधान कए सकए।”

“समाधान की करत? ओ कहैत अछि जे कलकत्ता आबि जाउ। हम तँ गाम नहि रहि सकैत छी। कलकत्तामे सभ किछु अछि। अपन मकान अछि। डाक्टरी खूब चलैत अछि। बच्चासभक इसकुल सेहो एतहि छैक।”

“ओकर कहब ठीके छैक। हमरा चलते ओ अपन जिनगी किएक खराप करए। जँ ओ हमरा लग आबिओ जाएत तँ कतेक दिन रहि सकत?”

हम आ गंगा गप्प कइए रहल छलहुँ की एकटा युवक दौड़ल हमर दलानपर आबि कए ठाढ़ भेल।

गंगा ओकरा देखिते पुछलकैक-

“की बात छैक? एना परेसान किएक छह?”

“तोहर बाबू...”

की भेलनि बाबूकेँ..?

“कलममे बेहोस भए गेल छथि। सौंसे गामक लोक ओतए जमा अछि।”

“कलममे...”

“तोरा एमहर अएलाक बाद ओ बड़की कलम गेलाह। ओतहि सिनुरिआ आमक नीचाँ किछु-किछु बड़बड़ाइत रहथि। थोड़े कालक बाद ओतहि ठामहि खसि पड़लाह।”

लगीचेमे गामक कैकटा चरबाहसभ महीष चरा रहल छल। ओएहसभ हल्ला केलक। कहाँदनि ओ बेहोस होएबासँ पहिने कहथिन-“हमरा एतहि जगह देब हे भगवान! अपन माटि-पानिमे समाहित भए जाएब।”

हम चोट्टे गाम घुरलहुँ। घर लग पहुँचिए रहल छलहुँ कि केओ चिचिआ उठल-

"तोहर माए घरमे बेहोस छथुन।"

बाबूक बेहोसीक समाचार सुनिते एमहर माए घरेमे बेहोस भए गेल। जाबे लोक अबितए,किछु करितए ताबत तँ जा चुकल छल। माएकेँ माटिपर निष्प्राण देखि हमरा जेना लकबा मारि देलक। किछु फुरेबे नहि करए। ओमहर केओ बाबूकेँ ई समाचार देलकनि। हुनका कनीके होस भेल रहनि। ओ करोट बदलि लेने छलाह। माएक समाचार सुनिते मुँह खोललनि से खुजले रहि गेलनि।"

हमर दलानपर लोकक मिस पड़ि रहल छल। एकगि संगे दूटा लहास एकहि अर्थीपर राखल गेल। आगू-आगू हम आ तकर पाछू-" राम नाम सत्य अछि" कहैत गौंआसभक हुजुम। हमर माथा काज केनाइ बंद कए देने छल। माए-बाबूक अंतिम संस्कार ओही आमक गाछ तरमे कएल गेल जे ओ स्वयं ठिकिआ गेल छलाह।

20

शंकरक समाद हमरा भेटल छल। अमेरिका जाइत-जाइत हमरा ऊपर दस लाखक मुखिआक कर्जा छोड़ि गेल छलाह। एमहर मुखिआ आ ओकील दुनू मिलि कए दाव खेलाइत छल। हम गाममे एसगर अपन जान लेल झखि रहल छलहुँ। की करू,ककरा कहिऔक किछु बुझाइते नहि छल। जीवनक उत्तरार्धमे ई दुर्दशाक कल्पनो नहि छल। सभ दिन नीके करैत रहि गेलहुँ। विद्यालयमे पहिने अध्यापक,फेर प्रधानाध्यापक रहि कतेको विद्यार्थीक जिनगी

बनओलहुँ । कतेको गरीब विद्यार्थीक मैट्रिकक फार्म अपन जेबीसँ भरलहुँ । परिवारक पालन-पोषण केलहुँ । दुनू बच्चाकेँ बहुत नीक शिक्षा देलहुँ । ओ दुनूगोटे बहुत नीक पदपर पहुँचि गेलाह । हीराक बिआह हुनकर पसिंदक वरसँ कए देलिअनि । ओहो डाक्टरे छथि। दुनूगोटे कलकत्तामे काज करैत छथि । ओतहि घर लए लेने छथि। शंकरकेँ सेहो बहुत नीक सरकारी नौकरी रहनि । से छोड़ि कए निशाक पाछू-पाछू अमेरिका चलि गेलथि । चलिए नहि गेलथि,जाइत-जाइत हमर हाथ-पैर बान्हि गेलथि । लगीचमे गंगा एकटा उपकारी व्यक्ति कतहुसँ संग भए गेल । मुदा ओकरो माता-पिताक देहावसान भए गेलैक । ओहो अपने परेसान भए गेल अछि। परसू श्राद्ध संपन्न केलाक बाद फोन केने रहए । कहैत छल-

"हमर मोन पश्चातापसँ भरल अछि । लगैत अछि जेना हमही हुनकरसभक प्राण घिचि लेलिअनि । ओ सभ तँ गाममे केहन बढ़िआँ रहैत छलाह । मुदा हमर जेबी खाली होमए लागल छल । तँ हम चाहलहुँ जे आब गाम छोड़ि दी । वापस अपन कर्मभूमिपर चली । मुदा हमर माए-बाबूकेँ गामसँ बहुत लगाओ रहनि । ओ सभ तँ मजबूरीमे हमरा संगे दिल्लीमे रहैत छलाह । बहुत दिनक बाद हुनकासभकेँ जखन दोबारा गाम रहबाक मौका भेटलनि तँ बहुत आनंदमे रहथि । जखन सुनलखिन जे दोबारा दिल्ली जेबाक बात भए रहल अछि तँ कलममे अपन गाछसँ बतिआए लगलाह आ ओतहि अपन सभ किछु

छोड़ि गेलाह। हुनकर सभक श्राद्ध करबामे हम कर्जसँ दबि गेल छी। जँ तुरंत दिल्ली नहि जाएब तँ गाममे सुदिए तरे बरबाद भए जाएब।"

ओकर बात सुनि कए हम बहुत दुखी भए गेल रही। मुदा कइए की सकैत छलहुँ? बड़ीकाल धरि ओहिना पड़ल रहि गेलहुँ। दू दिनक बाद फेर गंगाक फोन आएल।कहलक-

"हम आइए दिल्ली पहुँचि गेलहुँ। एतए अएलाक बाद जान मे जान आएल। जखने ट्रेन गाजिआबादसँ टपलैक तँ बड़का-बड़का गगनचुंबी मकानसभ देखबामे आएल। सड़कपर दौड़ैत मोटर, रिक्सा, बससभ देखाएल। लागल जेना अपन बथानपर पहुँचि गेलहुँ। ओ स्थान जे हमरा जीवन देलक, इज्जति देलक आ एतेक सामर्थ्य देलक जे अपन माता-पिताक सेवा कए सकलहुँ। आब ओ सभ एहि दुनिआमे नहि छथि। हुनकरसभक स्थानपर अहीं हमर सर्वस्व छी। अहाँ कोनो बातक चिंता नहि करब। कखनहु कोनो परेसानी होअए तँ हमरा निधोख मोन पाड़ब।"

"दिल्लीमे असगर की करैत छह?"

"सभसँ पहिने तँ अपन घराड़ीकेँ छोड़ेबाक अछि। माए-बाबूक श्राद्धमे मुखिआ सादा कागजपर निसान लए लेने अछि, से वापस करेबाक अछि। तकरबादे किछु आओर काजमे हाथ लगाएब।"

गंगाक भावुकतासँ हम आश्चर्यचकित रही। आइ-काल्हि बूढ़सँ तँ ओकर अपनो लोक छीह कटैत अछि। जाहि संतानक हेतु

जीवन लगा दैत अछि,की-की कष्ट ने सहि जाइत अछि सेहो छोड़ि जाइत अछि । बेटासभ अपन पत्नीक कहलमे रहैत छैक । ओहो की करतैक? जँ से नहि करत तँ अपने घर बरबाद भए सकैत छैक। आब ओ समय नहि छैक । बात-बातमे संबंध विच्छेद भए जाइत छैक । ताहि हालतिमे ओ तँ अपने जीबि लिअए सएह बहुत । नित्य नव-नव बात सुनएमे आबैत छैक । हम आनठाम कतए जाएब? हमर तँ शंकरे सभक कान काटि रहल छथि । ने हुनकर बिआहक ठेकान, ने परिवारक ठेकान, ने नौकरीक ठेकान । हमर सेवा ओ की करताह ?”

गंगाक फोन कटि चुकल छल । हम गुमसुम दनाने पर पटिआपर पड़ल रही कि हीराक फोन आएल ।

“गोर लगैत छी बाबू।”

“खूब नीके रहह । आओर की हाल-चाल?”

“शंकरक फोन आएल छल । ओ किछु-किछु कहि रहल छल ।”

“की कहैत छलह?”

“सारांश जे अहाँकेँ हम अपना संगे कलकत्ता लए आबी।”

“हम आब एहि बएसमे गाम छोड़ि कतहु नहि जाएब ।”

“मुदा ओ तँ गामक सभ किछु बेचि चुकल अछि ।”

“से कतहु भेलैक अछि? हम अखन ठामहि छी । हमर अर्जित संपत्ति अछि । केओ तेसर आदमी कोना बेचि सकैत अछि?”

“से हम की जाने गेलिऐक? जे कहलक से कहि रहल छी। ओहुना अहाँ असगर गाममे कोना रहब ?”

“जेना रहब। मरबो करब तँ अपन डीहपर मरब। एहिसँ बेसी हमरा आब की होएत?”

हमर बात सुनि कए हीरा कानए लगलीह । बहुत मोसकिलसँ हुनका सम्हारलहुँ। फेर कहैत अछि-

“अहाँ कथुक चिंता नहि करब। हम जल्दीए गाम आबि रहल छी।”

तकरबाद हीराक फोन कटि गेल।

21

ओहिदिन भोरेसँ हमर मोन खनहन लागि रहल छल। बूझबे नहि करिऐक जे बात की छैक? सभ किछु तँ ओहिना अछि। ओएह मुखिआ,ओएह ओकील ,ओएह गाम । शंकर तँ हमर समस्या बढ़ा कए अमेरिका चलि जाइत रहलाह । गंगा सेहो दिल्ली वापस चलि गेल। तखन आइ भेलैक की जे हमर मोन एते प्रसन्न अछि। अपनेसँ चाह बना कए ओसारापर साबिकक कुर्सीपर बैसल रही। ई कुर्सी हम जखन प्रधानाध्यापक रही तखने बनबओने रही। सेवानिवृत्तिक बाद एकरा गाम लेने आएल रही। जखन कखनो हम ओहि कुर्सीपर बैसैत छी ,हम एक क्षणक हेतु अतीतमे समाहित भए जाइत छी । कहि ने की-की सोचए लगैत छी । कैकटा सुखद स्मृति मोनकेँ

अनुरंजित कए दैत अछि । मुदा कैक बेर बिसरल दुखसभ सेहो मोन पड़ि जाइत अछि। हम जखन प्रधानाध्यापक रही तँ एही कुर्सीपर बैसि विद्यार्थी सभसँ लहेरिआसरायक अपन डेरापर गप्प-सप्प करैत छलहुँ। ओकरसभक परेसानी कम करबाक प्रयास करैत छलहुँ । कैक बेर हमर श्रीमतीजी कहितथि-“आब बस करू । कनीको काल आराम कए लिअ । थाकि गेल होएब । फेर तँ इसकुलो जेबेक अछि।”एहि तरहें कखन भोर होइक,कखन साँझ होइक पता नहि चलैक । आबो ओएह कुर्सी अछि । असगर घंटो ओहिपर बैसल रहैत छी । केओ हालो-चाल पुछनाहर नहि भेटैत अछि। मुदा आइ जखन हम एहि कुर्सीपर बैसलहुँ,चाह पिनाइ शुरू केलहुँ कि मोनमे अनेरे उत्साह लगैत छल। लगैत छल जे जरूर किछु नीक होमए बला अछि। आ से सही साबित भेल । थोड़बेकालक बाद एकटा कार आबि कए हमर दलानपर ठाढ़ भेल । कारसँ हीरा उतरि हमरा गोर लगैत अछि।

हम अचानक हीराकेँ देखि अबाक रहि जाइत छी । हीराकेँ मोन भरि आशीर्वाद दैत छी । हम ओकरा संगे अपन घर चलि जाइत छी । हीराक संगे ओकर एकटा चाकर सेहो छलैक । ओ कारसँ बड़का पेटी उतारैत अछि । हीरा पेटी खोलैत अछि । ओहिमे सँ हमरा लेल रंग-विरंगक चीज-वस्तुसभ निकालैत अछि। हमरा पसिंदक धोती,कुरता,बंडी,डोपटा सेहो अनने अछि । दुनू बाप-बेटी घंटो गप्प करैत रहि जाइत छी । ओकीलकेँ सेहो हीराक आगमनक जानकारी

भेटैत छनि। ओ हमरा लग सपत्नीक अबैत छथि। हीरा हुनकोसभकेँ गोर लगैत अछि। पेटीसँ निकालि कए हुनका लेल आनल गेल धोती-कुरता आ काकीक लेल नुआ हुनकर हाथमे राखि दैत अछि। एक झोरा मधुर सेहो काकाक हाथमे पकड़ा दैत अछि। ओकील गदगद भए जाइत छथि। बजैत छथि-

"आइ तोहरसभक भोजन हमरे आङनमे हेतैक । काकी तोहरसभक अएबाक समाचार सुनि बड़ी-भातक ओरिआन केने छथुन।"

थोड़े कालक बाद ओकील अपन आङन चलि जाइत छथि। हम हीराक संगे गप्प करैत रहैत छी । ओहिदिन हम आ हीरा ओकीलेक ओहिठाम भोजन केलहुँ । ओकीलक प्रसन्नताक तँ अंते नहि छलनि। भोजने कालमे ओ बजैत छथि-

"सुनैत छी जे अहाँ हीरा संगे कलकत्ता चलि जेबैक?"

"हीराक तँ बहुत जोर छैक। मुदा हमरे मोन छओ-पाँच कए रहल अछि। कखन की होएत तकर कोन ठेकान? आब एहि बएसमे गाम छोड़ि कलकत्तामे रहब ठीक नहि बुझाइत अछि।"

"इएह ने अहाँक गड़बड़ी अछि। जे सेवा करत तकरा संगे रहब नहि आ गाममे लोकसभपर अनुरोध करैत रहब। ताहिसँ की होएत? गाम तँ आब सहरोसँ गेल-गुजरल अछि। एक तँ गाममे लोके नहि छैक ,जे छैक तकरा ककरोसँ कोनो मतलब नहि छैक। जतबे पुछबैक ततबे बाजत। जँ टोकबैक तँ टोकत। जँ नहि बजबैक तँ

मुँह घुमा लेत जेना देखनो नहि होअए । फेर अहाँ तँ आब एकदम असगर पड़ि गेल छी । हमहूँ बूढ़ भए गेल छी । एहन हालतिमे अहाँ गाम कोना रहि सकब?”

“हम तँ भोरेसँ एही प्रयासमे छी जे बाबूकेँ संगे लेने जेबनि। ताहि लेल सभटा ओरिआन कलकत्ता डेरापर कए लेने छी । मुदा ई मानथि तखन ने?”

“मानताह किएक नहि? एहन अवसर ककरा भेटैत छैक? दू-दूटा डाक्टर दिन-राति सेवा लेल तैयार । जे खाउ,जतेक खाउ,जतए घुमू । हमरा तँ मोन होइत अछि जे अखने तोरा संगे बिदा भए जाइ । हिनका जे मोन होनि से करथु ।”

ओकीलक बात सुनि कए हीरा हँसि दैत अछि । हम चुप रहि जाइत छी । ओकीलक प्रसन्नताक कारण हम बूझि रहल छी। ओकर बकोदृष्टि हमर संपत्तिपर छैक,से आइसँ नहि छैक । जहाँ हम कलकत्ता गेलहुँ कि ओ हाथ साफ कए देत ।

दिनभरि घमरथन होइते रहल । आखिर हम हीरा संगे जेबाक प्रस्ताव मानि लेलहुँ । प्रातभेने सौंसे घरमे ताला मारि देलिऐक । जरुरी कागजसभकेँ अपना संगे राखि लेलहुँ । शेष वस्तुसभकेँ आलमीरामे बंद कए देलहुँ । तकरबाद भोरे ककरो किछु कहने-सुनने बिना गामसँ बिदा भए गेलहुँ । कारक खुजबाक अबाज सुनि ओकील दौड़ल आएल। हुनका दौड़ैत देखि हीरा कार रोकि दैत अछि।

“तूँसभ आगू बढ़ह। हमहूँ पीठेपर आबि रहल छी।” गामसँ हीराक कार निकलि रहल छल कि मुखिआ हाक देलक।

“कनी रुकब, कनी रुकब। हमरा किछु कहबाक अछि।”

संभवतः हीरा हुनकर अबाज नहि सुनि सकलि। कार ठाढ़ नहि भेल, कार आगू बढ़ि गेल। हमसभ आगू बढ़ि गेलहुँ। कारमे हीरा हमरा पसिंदक पुरान जमानाक गानासभ लगा देने छलैक जाहिसँ हम हल्लुक रही। मुदा अपन जन्मस्थानक बिछोहक आगू ओहो प्रियगर नहि लागि रहल छल।

22

हमर कलकत्ता जाएब ओकीलकेँ बहुत नीक लगलनि। जेना मोन जोकर काज भए गेल होनि। ओ दोसरे दिन भेने हमर ओसारापर अपन चौकी राखि देलनि आ ओतहि अपन बैसार बना लेलनि। जखन मुखिआकेँ ई बात पता लगलैक तँ ओ दौड़ल ओकीलक ओहिठाम पहुँचल।

“अहाँकेँ तँ ई बात बूझल अछि जे ई सभटा जमीन-मकान हमरा शंकर दए गेल अछि। हम ओकरा दसलाख टका देनहुँ छिऐक।”

“एहिठामसँ चुपचाप खसकि जाह। बेसी मुखिआगिरी हमरा लग नहि देखाबह।”

“की बात करैत छी? हम तँ अहाँपर विश्वास कए मूल दस्ताबेजो अहाँकेँ दए देने छी जे जरुरी पड़लापर उचित समाधान करब।”

“सएह ने केलहुँ अछि। हमरा जीबैत तूँ हमर परिवारक चीज-वस्तुपर हाथ लगेबह से सकबह। हमर ओकालति कोन दिन काज आओत?”

“हमरो लगमे तँ कागज अछि।”

“कोन कागज? जे हमरा देने छह?”

“ओकर दोसर प्रति हम कोर्टमे जमा कए देने छिऐक।”

“एहिसभसँ, आओर तँ किछु होएत नहि तोहर जहल गेनाइ पक्का भए जेतह।”

“तखन अहीं कहू जे की कएल जाए?”

“कएल की जाए? हमर परिवारक संपत्तिसँ अपन बकोदृष्टि हटा लेल जाए।”

“आ हमर दसलाख टाका।”

“ओकरा बिसरि जाह, नहि तँ एहन-एहन कतेको दसलाख बहार भए जेतह।”

“कोनो उचित रस्ता निकालिऔक ने। हम अहाँक बात मानि लेलहुँ। मुदा हमर टाका तँ वापस करा दिअ।”

“साफ-साफ सुनह। टाका तूँ हमरा तँ देने नहि छह ने हम वापस करबह। टाका देलहक तूँ शंकर केँ। आब ओ अमेरिकामे

अछि । जँ ओ कहिओ वापस आएत तखने ने कोनो बातो कएल जाएत? मुदा ओ वापस की करए आओत ? अमेरिकामे मोट आमदनी कए रहल अछि । ओतहि ओकर पत्नी छैक । एहिठाम की राखल छैक?”

“हमर कागज तँ वापस कए दिअ ।”

“कागज-कागज बेसी नहि चिचिआह । ओ कागज फरजी अछि । जँ बेसी उठा-पटक करबह तँ दफा चार सए बीसमे बंद भए जेबह ।”

मुखिआ ओहिठामसँ चलि गेल । मुदा जाइत-जाइत ओकीलकेँ चेता गेल-

“बेसी ओकालति हमरा नहि देखाउ । हमर टाका वापस नहि भेल तँ अहूँकेँ फल भोगहि पड़त ।”

मुखिआक बात सुनि कए ओकील किछु चिंतामे पड़ि गेलाह। “कोना की कएल जाए जाहिसँ ई आदमी काबूमे आबए?”- मोने-मोन से सोचैत रहलाह ।

23

गंगा सपरिवार दिल्ली अपन घर पहुँचल । ओकर घरक सभटा ताला टुटल छलैक । जे ताला नहि टुटि सकलैक तकर कबजा उखारि देल गेल रहैक । सभटा केबार,खिड़की तेना ने सटल रहैक जे बाहरसँ ककरो पता नहि लागि सकैत छल जे भीतर किछु गड़बड़

अछि । केबारमे टुटल ताला लटकल देखि गंगा बहुत परेसान भए गेल । ओही हालतिमे ओ आगू बढ़ल। बगलबला कोठरीक ताला सेहो टुटल छल । किरायेदारक कोठरीक ताला सेहो टुटल छल ।

“आखिर किरायेदार कतए गेल?” गंगा मोने-मोन सोचए। हम तँ ओकरेपर घर छोड़ि कए गेल रही । किरायदोरक कोठरीमे कोनपर राखल बक्साक सभटा समान चोर लए गेल । गंगाक कोठरीमे तँ किछु नहि छोड़ने रहैक । एकटा टुटलाही चौकी आ एकटा डोल धएल रहैक । ओ चौकीपर बैसल । कनीकाल तँ किछु फुरेबे नहि करैक । नलसँ एक गिलास पानि पिलक । फेर सोच-विचार करए लागल । किछु बुझेबे नहि करैक जे ई कोना भेलैक? किरायदारकेँ फोन लगओलक-

“कतए छह?”

“हमरा अचानक गाम आबए पड़ल । हमरमाएकेँ लकबा मारि देलकैक । हमरा गामसँ फोन आएल । मजबुरीमे हमरा गाम जाए पड़ल ।

एहिठाम तँ सभटा ताला टुटि गेल । सभटा समान चोरी भए गेल । किछु बाँचल नहि अछि ।”

“हमरा चलि अएलासँ चोरकेँ मौका लागि गेलैक ।”

“गाम जेबासँ पहिने फोन तँ कए दितह । हम कोनो व्यवस्था करितहुँ, नहि तँ अपने आबि जइतहुँ ।”

“फोन करबाक प्रयास केलिऐक। मुदा अहाँक फोन लगबे नहि करए। हमरा गाम अएलाक बाद कोनो होसे नहि रहल।”

“माएक आब की हाल छह?”

“अब-तब छैक।”

किरायेदारसँ गप्प केलाक बाद बूझि गेलिऐक जे ओकर कोनो गलती नहि छैक। गाम जाइत काल गंगा अपन पत्नी आ नेनासभकेँ दिल्ली डेरापर छोड़ि देने रहैक। मुदा ओकर माए-बाबूक श्राद्धमे सभ गोटेकेँ गाम जाए पड़लैक। संयोग एहन भेलेक जे किरायेदारकेँ सेहो अपन गाम जाए पड़लैक। मुदा आब कएल की जाए? जिनगीकेँ फेरसँ पटरीपर कोना आनल जाए?” - गंगा मोने-मोन सोचैत छल। ओ गाम जाइत काल अपन आटोरिक्सा मरम्मति लेल देने रहैक। सभसँ पहिने ओ मिस्त्रीक ओहिठामसँ अपन आटो अनलक। आटो बाँचि गेल रहैक से बड़का उसास भेलैक। प्रातभेने अपन आटो संगे सड़कपर निकलि गेल। दिनभरि दिल्लीक सड़कपर आटो गुड़कबति रहल। साँझमे थाकल-झमारल अपन डेरापर वापस आएल। दिनभरि मेहनति केलासँ जे आमदनी भेलैक ताहिसँ किछु जरूरी समानसभ कीनलक। किछु टाका बँचा कए रखलक जाहिसँ आगू जरूरी काज करत। दोसरदिन भोरे फेर अपन काजपर निकलि गेल। कनीके फटकी गेल होएत की पुल लग एकटा बूढ़ दाढ़ी बढ़ओने हाथमे बाटी लेने भीख मांगि रहल छलैक। ओकर हालति देखि गंगाकेँ बहुत दया भेलैक। ओ आटो रोकलक आ ओहि बूढ़ा

लग जा कए किछुटाका ओकर बाटीमे राखि देलकैक। तकरबाद ओ वापस अबैत रहए कि पाछूसँ ओ अबाज देलकैक-

“गंगा! गंगा!”

अपरिचित आदमीसँ अपन नाम सुनि कए गंगा चौकि गेल। पाछू तकैत अछि । ओएह बूढ़ा ओकर नाम लए चिकरि रहल छलैक।

“तूँ हमरा कोना चिन्हैत छह?”-गंगा पुछलकैक।

“हद भए गेल । तूँ हमरा नहि चिन्हलह । मुदा हम तोरा नीकसँ चिन्हि गेलिअह ।”

“तूँ के छह?”

“हम छी मालिक।”

“गंगा ओकर बात सुनि अबाक रहि गेल । मालिक आ एहि हाल मे?”

गंगा हुनका प्रणाम करैत अछि आ आग्रहपूर्वक अपन आटोपर बैसा कए सोझे अपन डेरापर लेने अबैत अछि । मालिककेँ अपन चौकीपर बैसबैत अछि । हुनकर जलखै,चाहक जोगार करैत अछि । से सभ केलाक बाद मालिक चौकीपर ठामहि सुति रहलाह। घंटो ओहिना सुतल रहि गेलाह । ताबत गंगा भोजनक ओरिआनमे लागल रहल । मोने -मोन मालिकक दुर्दशापर सोचैत रहल । “ई समय ककरो नहि । एक समय छल जे सौंसे गाम हिनकर डरे थर-थर कपैत छल । आइ ओएह मालिक असहाय हमर चौकीपर पड़ल छथि।”

जखन ओ दुपहरिओमे नहि उठलाह,तखन गंगा हुनका हिलओलक। ओ उठि बैसलाह। मोनमे बहुत शांति लागि रहल छलनि। ओ चौकीपर बैसल छथि। कखनो आगू,कखनो पाछू देखि रहल छथि। बुझेबे नहि करनि जे ओ एहिठाम कोना अएलाह? हुनका एतए के आ किएक अनलकनि? हम सामने ठाढ़ रहिअनि। तथापि ओ हमरा देखि नहि रहल छलाह किंवा देखितहु बुझि नहि रहल छलाह जे ई सभ कोना भेलैक? जखन की ओएह हमरा सड़कपर चिन्हने रहथि। चारूकात गुम्मी पसड़ल छल। आखिर हमही बजैत छी-

"मालिक! हम छी गंगा।"

"ओ! तँ हम एतए कोना आबि गेलहुँ?"

"सएह कहू? अहीं तँ हमरा चिन्हने रही।"

"की कहियह, किछु मोने नहि रहैत अछि।"

"सभ ठीक भए जेतैक। पहिने भोजन कए लिअ। फेर दुनूगोटे चैनसँ गप्प करब।"

"ठीक छैक।" मालिक पीढ़ीपर बैसि केराक पातपर भात, दालि, तरकारी, पापड़ आ तिलकोड़क तरुआ भोजन करैत छथि। गंगाक प्रसन्नताक तँ अंते नहि अछि। जिनका डरे ओ गामसँ भागल छल सएह आइ ओकरे ओहिठाम भोजन कए रहल छलाह।

मालिककेँ कोनो सुधबुध नहि रहैत छलनि। बेसीकाल ओ गुमसुम रहैत छलाह। मुदा गंगा अपना शक्ति भरि हुनकर सेवा करए।

ओकरा नीकसँ बुझल रहैक जे मालिकक केओ अपन बाँचल नहि छनि। हुनकर नातिन दीपाक देहांत भए गेल छैक। बेटा-बेटी पहिनहि मरि गेलनि। गामक संपत्ति स्वाहा भए गेल छनि। एही बातसभसँ ओ विक्षिप्त जकाँ रहैत छथि। मुदा कखनो काल हुनकर माथा काज करए लगैत छनि। एहने कोनो क्षणमे ओ एकदिन गंगाकेँ कहलखिन-

"एहिठाम हमरा तूँ कतेक दिन रखबह। हमरा एहिठाम मोनो नहि लगैत अछि। हमरा गाम दए आबह।"

"मुदा गाममे कथीपर आ ककरा लग जाएब? कतए रहब? घर-घराड़ी सभ बिका गेल। जे बाँचल छल से लोकसभ दखल कए लेलक।"

"से तूँ कि जाने गेलहक?"

"हम गाम गेल रही। सभ किछु अपने देखलहुँ। विश्वास नहि होइत छल जे जे देखि रहल छी से सही अछि।"

ई सभ सुनि कए फेरसँ ओ अपन दुनिआमे चलि गेलाह। हम बड़ीकाल धरि ओतहि ठाढ़ रहि गेलहुँ। हुनका एहि हालतिमे छोड़ि कए जेबाक मोन नहि करए। मुदा ओ जखन टस सँ मस नहि भेलाह तँ हारि कए हमरा आटो चलेबाक हेतु जाए पड़ल। नहि जइतहुँ तँ रातिमे खइतहुँ की?आखिर हुनका चौकीपर ओहिना छोड़ि हम आटो चलबए चलि गेलहुँ।

मालिककेँ गंगाक ओहिठाम मासक धक लागि गेलनि। ओकरा बुझेबे नहि करैक जे हिनकर की कएल जाए? ओ मोने-मोन

सोचए-"हम हिनका कतेक दिन देखैत रहबनि। मुदा छोड़िओ कोना दिअनि? एहि महानगरमे हिनका के रखतनि? के देखभाल करतनि? मुदा हमही की करितहुँ? हमरा से आटो चलबएमे दिनभरि समय चलि जाइत अछि। साँझमे वापस डेरापर अबैत छी तँ ई कतहुँ सुन्न पड़ल रहैत छथि।"

गंगा दीपेंदुकेँ तकबाक प्रयास केलक। एकदिन ओकर डेरोपर गेबो कएल। मुदा ओहिमे ताला लागल छल । लगपासक लोककेँ किछु पता नहि रहैक जे ओ कतए गेलाह? अबैत रहए तँ डाकपीन भेटि गेलैक । ओ गंगाकेँ जनैत छलैक । गप्प-सप्पमे ओएह गंगाकेँ कहलक जे ओहो अमेरिका चलि गेलाह । हुनकर डेरा ओहिना खाली पड़ल अछि । गंगा डेरापर वापस आएल तँ मालिक चित्त भेल चौकीपर पड़ल रहथि। गंगा हुनकर नाकपर हाथ रखलक । छाती दिस देखलक । कतहु जीवनक कोनो संकेत नहि छल । मालिक एहि दुनिआकेँ छोड़ि चुकल छलाह ।

24

हम हीरासंगे कलकत्ता पहुँचलहुँ । ओहिठामक इंतजामक वर्णन की करू । हमरा लेल भूतलपर एकटा स्वतंत्र कोठरीमे सभटा ओरिआन छल । सोफा,पलंग,टीभी,फ्रीज सभ किछु सजाओल राखल छल । एकटा नौकर दिन-राति हमरामे लागल रहैत छल । तीन महलक मकानमे हमर कोठरीसँ सटले दहिना कात अस्पताल

छल। ऊपर पहिल मंजिलपर रोगी सभक रहबाक ओरिआन छल। हीरा आ ओकर पति तेसर मंजिल पर रहैत छल।

सुविधाक नामपर हमरा हीराक डेरापर की नहि छल? कोनो चीजक अभाव नहि ,जे चाही से तुरंत हाजिर भए जाएत। मुदा अपन लोकक कतहु पता नहि छल। भोरसँ साँझ धरि बैसल रही। जलखै करी,चाह पिबी,टहली,अखबारो पढ़ी। मुदा तकर बाद...। मोन होइत जे हीरा भेटितए,जमाए भेटितथि,नातिन भेटैत,मुदा ककरो दर्शन होएब दुर्लभ। हम उठी भोरे चारि बजे। ताधरि ओ सभ सुतले रहैत छल। हम सुती नओ बजे ताधरि ओ सभ अपन-अपन काजमे व्यस्त रहैत छल। नातिनकेँ सेहो समय नहि रहैक। इसकुल,ट्यूशन,आओर कैक तरहक व्यस्तता। हमर कोठरीमे एकटा आधुनिक टीभी राखल छल। ओकरा चलेबाक हेतु चारि प्रकारक रिमोट चलबए पड़ैत छल। कोनोसँ अबाज अबितए,कोनोसँ चैनल बदलल जाइत,कोनोसँ इंटरनेट चलैत..। हमरा बुते एतेक रिमोटकेँ सम्हारब मोसकिल छल। जखन कखनहु नौकर अबैत तँ हमर आग्रहपर ओ टीभी चला दैत। यदि ओ नहि अछि तँ ओकरा बंदो केनाइ पराभव।

कुलमिला कए हमर जिनगी ओहि कोठरी धरि सीमित भए गेल छल। कखनो काल मोन उद्विग्न भए जाए तँ ओसारापर ठाढ़ भए जइतहुँ। कतहु केओ नहि देखाइत। कखनो काल कोनो रोगीक आवागमनसँ कनीकाल लगपासमे चहल-पहल रहैत। कखनो

दूधबला,कखनो अखबारबला तँ कखनो तरकारी बेचएबला देखाइत। मोन होइत जे ओकरेसभकेँ भरिपाँज पकड़ि ली। कहिऐक- “रे बाबू! हमरा अपन गाम लए चल। हम एहिठाम बताह भए जाएब। मुदा ओहि अपरिचित परिवेशमे हमरा सन दुर्दशाग्रस्त बृद्धक कें सुधि लैत ?

गामसँ कलकत्ता जेबाक समय हुनकर देल पेटी सेहो हम लेने गेल रही। गाममे असगर छोड़ल नहि गेल। ओ हुनकर स्मृतिसँ जुड़ल छल। सोचैत रही जे कहुना ओकरा पुतहुकेँ दए सकितिअनि तँ हम भारी ऋणसँ मुक्त भए जइतहुँ। हुनकर अंतिम इच्छाक पालन कए सकितहुँ। मुदा आब तँ शंकरेक कोनो अता-पता नहि अछि ,पुतहुक बात तँ जाए दिअ। अपने चलि गेली से गेली,ई पेटी हमरा गरामे बान्हि गेलीह। हम बहुत दिनधरि मोहवश एकरा जोगा कए रखलहुँ। ओहि पेटीमे की छैक,तकरा जानबाक कहिओ प्रयास नहि केलहुँ। जहिना ओ देलथि तहिना तहिएसँ बंद पड़ल अछि। आब तँ अपने कोनो सुधि नहि रहैत अछि तँ एहि पेटीक कोन ठेकान? नित्य सुतबासँ पूर्व ओहि पेटी दिस देखैत छलहुँ। मोनमे हुनकर स्मृति टटका भए जाइत छल। ओछाओनपर पड़ल-पड़ल कनीकाल कानि लैत छलहुँ आ सुति जाइत छलहुँ।

कैक बेर मोन होअए जे हीराकेँ ई पेटी सुंझा दिअनि। माएक समाद सेहो कहि दिअनि। आगू ओ जानथि। मुदा सेहो नहि कए

पाबी। मोहग्रस्त मोन किछु करए नहि दिअए। “जाबे जीबैत छी ताबत तँ एकरा सम्हारि कए राखू”-मोनमे अबाज होइत।

कैक बेर हीरासँ भेँट भेला दस-दस दिन भए जाइत छल। हुनको अपन मजबुरी रहल हेतनि। जमाएसँ भेँट भेला कतेक दिन भेल से मोन नहि पड़ि रहल अछि। एमहर हमर मोन सेहो कोनादनि करैत रहैत अछि। भोजन कए लैत छी आ बिसरि जाइत छी। स्नान केलाक बादो होइत रहैत अछि जे स्नान नहि केलहुँ अछि। कैक बेर नहाइत रहि जाइत छी। कखनहु काल होइत रहत जेना सौंसे देहपर चुट्टी चलि रहल अछि। कखनो काल दिनेमे होइत जे राति भए गेल अछि। लगैत जेना केओ हमर नाम लए चिकरि रहल अछि। कहि रहल अछि- “भाग मनोहर भाग , एहिठामसँ भाग। चलि जो अपन डीहपर। कम सँ कम अपन जन्मस्थानमे मरि सकबए। नीकसँ श्राद्ध भए सकतौक। अपन पसिंदक गाछ तरमे सारा बनि सकतौक। एहिठाम की? कतहु डाहि देल जेबह। कतए सारा बनत? के श्राद्ध करत? के भोज खाएत?” ताबतेमे ओकील मोन पड़ि जाइत,मुखिआ मोन पड़ि जाइत। गामक घर,जमीन-जायदाद मोन पड़ि जाइत। चारूकात भम्ह पड़ैत घर मोन पड़ि जाइत। “आब बाजह? गाम जेबह की?”

ओहिदिन हीराक अस्पताल बंद रहैक। मौका देखि ओ हमरासँ भेँट करए आएलि। संगमे हमर नातिन सेहो छलि। हम चुपचाप कोनमे ठाढ़ रही। मोन होअए जे हीराकेँ आएल देखि प्रसन्न

होइ,ओकरासँ गप्प करी । मुदा बकारे नहि फुटए । हीरा कैक बेर हमरा टोकलक । जखन हम ओहिना गुम-सुम रहि गेलहुँ,मोन कतहु आओर टांगल सन रहि गेल,हीरासँ ,नातिनसँ गप्प करबाक कोनो उत्सुकता नहि भेल तँ ओ तुरंत वाहन चालककेँ बजओलक , हमरा कारमे बैसओलक आ लेने-देने मनोरोगी अस्पतालमे भर्ती करा देलक।

25

हमरा अस्पतालमे भर्ती करबा कए हीरा वापस घर चलि गेलि। हम असगर ओतए एकटा कोठरीमे पड़ल छलहुँ कि गंगाक फोन आएल ।

“कोना छी?”

“कोना की रहब? हीरा हमरा मनोरोगी अस्पतालमे छोड़ि देलक अछि । तूँही कहह जे एकटा स्वस्थ आदमीकेँ जखन एहि अस्पतालमे राखि देल जाएत तँ ओकरा केहन लागत? हम तँ ओकरा ओहिठाम परेसान रही कारण दिन भरि ककरोसँ भेँट नहि होअए,करबाक हेतु कोनो काज नहि रहए । ने कतहु जाइ ने केओ आबए । बस,एकटा नौकर छल जे हमर नेकरम करए । ओकरो की सिखाओल-पढ़ाएल रहैक जे मुँह खोलबे नहि करए । कतबो प्रयास करितहुँ जे किछु गप्प करी जाहिसँ मोन हल्लुक होइत,ओ बजबे नहि करैत । अपन काज करैत आ चुपचाप घसकि जाइत। मसीनोकेँ चला

दैत छैक तँ ओ बाजए लगैत छैक,मुदा ओ तँ ताहूसँ गेल-गुजरल छल। कहिओ दस दिनपर हीरा अबितए । औपचारिकतावश ,दस मिनट किछु-किछु बजैत रहितए आ तकर बाद जे जाइत से गेले रहि जाइत। ओकरा रोगीकेँ इलाज करबासँ फुरसतिए नहि रहैत छैक । टाका कमाएपर लागल अछि। ओकर घरबला सेहो ओकरेसंगे अस्पतालमे व्यस्त रहैत छैक । एहनमे मोन कोना ने औनाइत?”

“अहाँ चिंता नहि करू । हम समाधान ताकि लेलहुँ अछि।”

“की?”

“बंगलागढ़, दरभंगामे एकटा वृद्धाश्रमक निर्माण कए रहल छी । मास-दूमास आओर लागत । एहि संस्थाक नाम अछि, नूतन प्रभात। गाम-घरमे परेसानीमे पड़ल बूढ़ लोकनिक एहिठाम आश्रय भेटतनि । गामे जकाँ सभटा ओरिआन रहत । ककरोसँ कोनो प्रकारक शुल्क नहि लेल जाएत । स्वेच्छासँ जँ केओ संस्थामे दान देबए चाहथि तँ से मना नहि कएल जाएत । दिल्लीक घर बेचि सभटा टाका ओहिमे लगा देलिऐक अछि । सरकारसँ सेहो किछु मदति भेटबाक प्रयास कए रहल छी ।”

“मुदा तोरा ई संस्था खोलबाक विचार कोना भेलह?”

“जहिआसँ हमर माए-बाबू गुजरि गेलाह तहिएसँ हुनकर स्मृतिमे किछु-ने-किछु करबाक इच्छा छल । मुदा जखन दिल्लीमे मालिकक दयनीय स्थिति देखलिअनि आ अहाँक कष्ट देखलहुँ तँ भेल जे किछु करबाक चाही । संयोगसँ दीपेंदुसँ ओही बीचे गप्प भेल । हम

हुनका अपन मोनक बात कहलिअनि । ओ ओहि समय अमेरिकामे कोनो नीक नौकरी करैत छलाह । कहए लगलाह-

“दरभंगामे हमर घर खाली पड़ल अछि । हम ओकरा एहि काजक हेतु दान कए देब ।” संगहि किछु टाका सेहो मदति करबाक आश्वासन देलनि । हुनकर सहयोगसँ ई काज करब आसान भए गेल।

हमरा गंगासँ फोनपर गप्प करैत ओहि अस्पतालक मनोचिकित्सक देखलक । ओ हमर कोठरीक बाहर ठाढ़ भेल हमरसभक गप्प-सप्प सुनैत रहल ।

“ई आदमी तँ एकदम ठीक अछि। एकरा कोनो बिमारी नहि छैक । तखन एकरा एहिठाम किएक आनल गेल?”-डाक्टर मोने-मोन सोचैत छल ।

हमर ध्यान अचानक डाक्टरपर गेल । हम फोन राखि देलिऐक ।

डाक्टर साहेब इसारासँ पुछलनि-

“फोन किएक राखि देलिऐक?”

“भेल जे कहीं अहाँ तमसा ने जाइ।”

“एहिमे तमसेबाक कोन बात छैक?”

“हम तँ एहि बातसँ पहुत प्रसन्न छी जे अहाँ एतेक नीकसँ फोनपर गप्प कए लैत छी । हमरा विचारसँ अहाँकेँ एहि अस्पतालमे रखबाक कोनो जरूरति नहि अछि । हम अहाँक बेटीकेँ फोन कए बजा दैत छी। अहाँ हुनका संगे चलि जाएब ।”

“नहि नहि। से टा नहि करब।”

“से किएक?”

“हमर कष्टक कारणे ओएह थिक। ओ आएत आ फेरसँ हमरा ओहि कोठरीमे राखि देत।”

“से की?”

“जाए दिअ ओ बातसभ। हमरा अहाँ पठा सकी तँ अपन गाम पठा दिअ। हम ओतए जाइते ठीक भए जाएब।”

“ठीक तँ अहाँ छीहे।”

“से तँ अहाँ ने कहैत छी। मुदा हमर बेटीकेँ कहब जे ओ बड़का डाक्टर अछि। ओकरे चलते हमर ई गति भेल अछि।”

“अहाँक पारिवारिक विषयमे हम की कए सकैत छी?”

“अहाँकेँ किछु करबाक काज नहि अछि।”

“तखन?”

“गंगा अपना संगे हमरा लेने जाएत।”

“मुदा अहाँक बेटी जँ हमरा पुछतीह तँ हम की उत्तर देबैक?”

“कहि देबैक जे ओ गाम चलि गेलाह।”

हम मास दिन ओहि अस्पतालेमे रहि गेलहुँ। कथी लेल हीरा कहिओ अबैत? “भने ओतए पड़ल छथि।”-ओ सोचैत होएत।

एकदिन भोरे गंगा ओतए आएल। सबसँ पहिने ओ डाक्टरसँ भेँट केलक। ओकर चर्चा डाक्टर साहेब लग हम कैक बेर केने रहिऐक। तेँ ओ धर दए गंगाकेँ अपन कोठरीमे बजा लेलखिन।

“हम मनोहरजीकेँ अपना संगे लए जेबनि ।”

“से तँ ओहो कहने रहथि । मुदा हुनकर बेटीकेँ पुछब जरूरी अछि । कारण अस्पतालक कागजपर हुनके दस्तखत छनि।”

“कोनो हरजा नहि । हम अपने हुनकासँ भेँट कए लैत छिअनि”

गंगा हमरा लग पहुँचल । ओकरा देखितहि हमरा जानमे-जान आएल । हम अपन ओछाएन सभ समेटलहुँ । अपन घरक सर्ट-पैंट पहिरलहुँ आ कुर्सीपर बैसि गेलहुँ ।

मुदा गंगाकेँ असमंजसमे देखलिऐक ।

“की बात छैक? तूँ किछु परेसान बूझा रहल छह?”

“डाक्टर कहलक जे हीराकेँ बजबए पड़त । तखने काज आगू बढ़त ।”

“डाक्टर के होइत अछि हमरा एतए राखएबला? जखन ओ स्वयं कहि रहल अछि जे हम ठीक छी । तखन हमरा एतए रोकबाक अधिकार ओकरा कतएसँ अएलैक? हम कोनो नवालिग नहि छी,पागल नहि छी ,हमसभ तरहें ठीक छी । ई बात स्वयं डाक्टरो कहि रहल छथि । तखन हमरा ककरो अनुमति किएक चाही?”

“तखन?”

“तखन की? एहिठाम आब एक मिनट नहि रहि सकैत छी।”

ताबत डाक्टरो ओतए आबि गेल छलाह । हम हुनका पुछैत छिअनि-

“जखन हम ठीक छी तखन हमरा अहाँ किएक रोकि रहल छी?”

“हमरा भेल जे एक बेर हीराकेँ भेँट कए लितिअनि । ओ हमर संगी छथि । कहीं तमसा ने जाथि।”

“छोड़ू ई बात सभ । हम जा रहल छी । जाइत-जाइत हम स्वयं ओकरा भेँट करबैक आ सभटा बात बुझा देबैक जाहिसँ अहाँकेँ कोनो परेसानी नहि होएत ।”

हम गंगासंगे अस्पतालसँ बिदा भेलहुँ । डाक्टर साहेब मोने-मोन बहुत प्रसन्न रहथि । जाइत-जाइत एकटा मिठाइक डिब्बा हमरा पकड़ा देलाह ।

हम गंगा संगे कारसँ आगू बढ़ि जाइत छी ।

26

हुनकर देल पेटीक संगे हम नूतन प्रभात आबि गेल छी । रस्तामे गंगा हमर हिफाजति करैत रहल । हमर मनोवल बढ़बैत रहल। हम गंगाक स्वभावसँ पूर्व परिचित छलहुँ । ओकरा हमरासँ कोनो स्वार्थ नहि रहैक । ओकरा हमर संपत्तिपर बकोदृष्टि नहि रहैक। ओ निःस्वार्थ भावसँ अपन समस्त संपत्तिक दान कए अपन माता-पिताक स्मृतिमे नूतन प्रभात संस्थाक स्थापना केने छल । ओकर पत्नी,बच्चासभ आ स्वयं दिन-राति ओहि संस्थामे काज करैत छल। ओकरसभक समय दिन-राति ओतहि बीतैत छलैक । ओकरा कोनो

लोभ नहि रहैक,ककरोसँ कोनो अपेक्षा नहि रहैक। ओकरा हमर कष्ट देखल नहि गेलैक। मालिकक दुर्दशा देखि ओ विचलित भए गेल छल। फेर एहन-एहन उदाहरण तँ घरे-घर पसरि गेल अछि। बृद्ध लोकनिक जीवन आ सम्मानक रक्षा जेना लोक बिसरि गेल अछि। जखन कि सभकेँ बूढ़ होएबाके छैक। मुदा भोगवादी संस्कृतिक बिहारिमे आगू-पाछू किछु नहि सुझि रहल छैक।

गंगा अपन समस्त शक्तिसँ नूतन प्रभातक विकासमे लागल रहल। परिणामस्वरूप, साले भरिमे ओहि संस्थामे सएसँ बेसीए बृद्ध आबि गेलाह। जगह कम पड़ए लागल। धनक अभाव नहि रहि गेलैक। गंगाक इमान्दारीपर सभक विश्वास रहैक। देश-विदेशसँ चंदा अबैत रहैत छल। कालक्रमे दरभंगासँ सटले हाइवेपर एकटा विशाल भवनक निर्माण करबाक योजना बनाओल गेल जाहिमे बृद्ध लोकनिकेँ एकहिठाम सभटा सुविधा भेटतनि। ओतहि अस्पताल सेहो रहत। मनोरंजनक हेतु समस्त व्यवस्था तँ होएबे करत। बामा कात मंदिर रहत जतए नित्य कीर्तन,भजन होइत रहत।

गंगाक सहयोगसँ ओहि संस्थामे हमर समय बहुत नीकसँ बीति रहल छल। कखन भोर होइक,कखन साँझ होइक किछु पता नहि चलए। मुदा मोनमे कतहु एकटा कचोट रहिए गेल रहए। हुनकर देल पेटीकेँ देखितहि हम भावविभोर भए जाइ। लगैत छल जेना ओ कहि रहल छथि-

“सएह कहू । अहाँ बुते बौआक बिआहो कराएब नहि पार लागल । हमर सनेस अहाँ हमर पुतहु धरि नहि पहुँचा सकलहुँ।” हम एहि मनोव्यथासँ उबरि नहि पाबि रहल छलहुँ । ताहिपर सँ सुनलिऐक जे शंकरकेँ निशा छोड़ि देलकनि । किछुदिन सँ आब ओ अंग्रेजक संगे रहि रहल अछि । ई समाचार सुनि हम बहुत निराश भए गेलहुँ । भेल जे गंगासँ अपन मनोस्थितिपर चर्च करी । फेर सोचलहुँ- “आखिर हम ओकरा कतेक तंग करिऔक । ओहो तँ मनुक्खे अछि । फेर ओ बहुत नीक काजमे लागल अछि। हमरा सन-सन कतेको वयोबृद्धक जीवन बँचा रहल अछि । ओकरा अपनेमे ओझरेने रहब उचित नहि।”

एकदिन भोरे सुति-उठि तैयार भेलहुँ । बामा हाथमे पेटी आ दहिना हाथमे बेंत लेने बिदा भेलहुँ । कनीके आगू बढ़ल होएब की गंगा भेटि गेल । हमरा एना जाइत देखि ओ छटपटा गेल । हमर पैरपर खसि पड़ल । कहए लागल-

“हमरा एना छोड़ि कए नहि जाउ । जँ हमरासँ कोनो गलती भेल तँ माफ करू ।”

“तोरासँ गलतीक सबाले नहि उठैत अछि । तूँ तँ हमरा लेल भगवानक वरदान साबित भेलह । मुदा समय-समयक बात छैक । हमरा केओ बजा रहल अछि । आब हम चलब ।”

“मुदा अहाँ जा कतए रहल छी?”

“गंगोत्री।”

“मुदा एहि बएसमे असगरे अहाँ गंगोत्री कोना जाएब?”

"से जानथि भगवान ।"

"हम अहाँक संगे चलब।"

हम कतबो कहलिऐक गंगा नहि मानलक । ओ हमरा संगे बिदा भए गेल ।

27

गंगोत्रीक सुरम्य वातावरणमे पहुँचि हम आनंदसँ गद-गद छलहुँ । लगैत छल जे आइ जीवनक सभसँ नीक दिन अछि। अछि कोना ने? हम आइ हुनकासँ फेरसँ भेँट होएबाक सुखद अनुभूति कए रहल छी । जेना ओ आ हम संगे गंगाक कातमे ठाढ़ छी ।

"नहि, नहि ओ नहि हुनकर देल गेल पेटी हमरा संगे अछि।"

हम ओहि पेटीकेँ गंगामे विसर्जित करैत छी । गंगा सेहो लगीचेमे ठाढ़ छल ।

"माफ करब । हम अहाँक संकल्पकेँ नहि राखि सकलहुँ। हम अहाँक देल चीज अहींकेँ समर्पित करबाक हेतु विवश छी ।"

"कोनो बात नहि ...। ई जीवन थिक । अपूर्णता एकर स्वभाव छैक।"- लागल जेना गंगाक कलकल करैत धाराक मारफत ओ अपन बात कहि रहल छथि ।

हमर आँखिसँ एकबूंद नोर खसि पड़ैत अछि । गंगा से देखैत अछि । ओ भरि पाँज कए हमरा पकरि लैत अछि । हम अपन झोरासँ दूटा लिफाफा निकालैत छी ।

"ई की अछि?"

"एहिमे हमर गामक सभटा संपत्तिक नूतन प्रभातकेँ दान देबाक इच्छापत्र अछि।"

"आ दोसर लिफाफामे?"

"मुखिआक नामसँ दस लाखक बैंक ड्राफ्ट अछि जे तूँ ओकरा दए दिअहक।"

गंगा हमरा दिस बकर-बकर देखैत रहि जाइत अछि। हम ओकरा इसारासँ ओहि कागजकेँ सम्हारि कए रखबाक आग्रह करैत छी। गंगा हमर बात मानि जाइत अछि। जाबे गंगा ओहि कागजकेँ राखलक ताबते हम आगू बढ़ि जाइत छी। गंगामे डुबकी लगबैत काल एक बेर फेर ओ स्मृतिमे अबैत छथि। जेना ओ कहि रहल छथि-

"देखू, अहाँक बिना हम काँट-काँट भए गेल छी। आब देरी नहि करू। हम ई वियोग आओर नहि सहि सकैत छी।"

"आब किएक परेसान छी? हम तँ अहीं लग आबि रहल छी।"

गंगा पलटि कए देखैत अछि। हम कतहु नहि देखाइत छी। ओ थोड़े काल अबाक ठामहि रहि जाइत अछि। हम ओकरा गंगामे कनीके फटकी तेजीसँ बहाइत देखाइत छिऐक। ओ चाहिओ कए किछु नहि कए पबैत अछि। ओकर आँखिसँ अश्रुक धार अविरल बहि रहल छैक। लगीचेमे ठाढ़ एकटा महात्माजी ओकर माथपर हाथ दैत कहैत छथिन-

"आब हुनकर मोह छोड़ह। ओ तँ मुक्त भए गेलाह।"

मूर्धन्य विद्वान प्रोफेसर(डाक्टर)भीमनाथ झा लिखैत छथि-

"अपनेक नव्यतम उपन्यास 'हम आबि रहल छी' हमरा लग आबि गेल अछि । पढ़बामे ततेक मन लागि गेल अछि जे आन बेगरता भागि गेल अछि । ठीके, रोचकता तँ अपनेक लेखनीक प्रमुख विशेषता थीके, जे एहूमे विद्यमान अछि-- एक तँ ई कारण। दोसर ई जे एहिमे बूढ़ लोकक गूढ़ व्यथाक आख्यानक उत्थान, प्रस्थान आ अवसान अत्यन्त आत्मीयता आ मार्मिकताक संग कयल गेल अछि । आजुक शिक्षित समाजक बहुलांश कोना अपसंस्कृतिक मोहजालमे फँसि नाग जकाँ अपन प्रतिपालकोकेँ डँसि लैत अछि आ अपनहुँ अन्तमे निराशाक नरकमे खसि आजीवन सिसकी भरैत रहैत अछि । परिवर्तनक एहि बिरड़ोक अछैतो सनातन कर्त्तव्यबोध (यथा--मातृपितृभक्ति, स्वावलंबन, अपकारक बदला उपकार, तिरस्कारक

उत्तर सत्कार प्रभृति)क ध्वजा उधिया नहि गेलैक अछि, अपितु फहरा रहलैके अछि ।

संयोग आ आकस्मिकता एकर कथानकक प्राण थिक । एक दिस पुत्र जत' प्रेमिकाक लौलमे अमेरिका धरि दौड़ मारैत छथि तैयो ओ हाथसँ पिछड़ि जाइत छनि आ ई हकन्न कनैत छथि तँ दोसर दिस मायक गंगोत्रीमे जलसमाधि लेलाक कारणे पितो सायास हुनक अनुसरण करैत छथि आ अटूट प्रेमक दृष्टान्त बनैत छथि । नाटकीयताकेँ सामान्य पाठकमे उत्सुकता जगयबाक लेखकक कौशल रूपमे देखबाक थिक।

अपनेक साहित्य-सभाक ई औपन्यासिक नवरत्न मैथिली पाठकक चारू कात अपन चमक पसारैत रहय-- ताही शुभकामनाक संग हार्दिक अभिनन्दन ।”

भीमनाथ झा

25.6.2021

प्रसिद्ध विद्वान एवम् चिकित्सक आदरणीय डाक्टर कीर्तिनाथ झा लिखैत छथि-

हम आबि रहल छी

(समाज मे बूढ़क दुखद स्थितिक जीवन्त चित्रण करैत उपन्यास)

लेखक: श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र

सोझ कथानक। सरल भाषा। अनेक नाटकीय मोड़, आ स्पष्ट संदेश। संग मे समाधान दिस संकेत सेहो।

एकहि बैसाड़ मे एहि पोथीक परायण कयल।

विषयानुकूल कैनवास आ नितान्त समसामयिक सामाजिक समस्या पर लिखल ई उपन्यास अंत धरि अहाँक जिज्ञासा जगओने रहत।

उपन्यास लेखन मे सिद्धहस्त, आ निरंतर नव-नव उपन्यासक संग उपस्थित होइत श्री मिश्रजीकें अनेक बधाई /साधुवाद।

कीर्तिनाथ झा

१२.३.२०२३

(https://www.facebook.com/photo/?fbid=10227405720502325&set=a.10200225774380659}

प्रसिद्ध विद्वान आदरणीय श्री हितनाथ झा लिखैत छथि-

मैथिलीमे एहनो साहित्यकार छथि , जे करीब 05-06 सालमे दू दर्जनक करीब पोथी लिखलनि आ लिखिते जा रहल छथि ,जाहिमे 16 उपन्यास छनि ।
पोथीक गुणवत्ताक विषयमे डॉ0 कीर्तिनाथ झाक टिप्पणी जे काल्हि फेसबुकपर देखल ,ओहिसँ अनुमान लगा सकैत छी -
" सोझ कथानक । सरल भाषा । अनेक नाटकीय मोड़ आ स्पष्ट सन्देश । संगमे समाधान दिस संकेत सेहो ।
एकहि बैसारमे एहि पोथीक परायण कयल । "
पोथी - हम आबि रहल छी

एहि लेखककेँ वन्दन -अभिनन्दन ।
हितनाथ झा
१३.३.२०२३
(https://www.facebook.com/photo/?fbid=6170737622982954&set=a.694482283941876)

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)
https://pothi.com/pothi/node/209754.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.
विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.
महराज (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/196264.
सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208632.

बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/209281.

राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/210181.

संयोग(कथा संग्रह)

https://rb.gy/edit6k.

नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)

https://bit.ly/3The07Y

दीप जरैत रहए(उपन्यास)

https://t.ly/nU_E.

ठेहा परक मौलाएल गाछ(उपन्यास)

https://bit.ly/4ogK2jQ

पटाक्षेप(उपन्यास)

https://bit.ly/4qAZ99l

जयतु जानकी(उपन्यास)

https://bit.ly/3LLCXq7

यज्ञसेनी(उपन्यास)

https://bit.ly/4oLqnZl

सूर्यपुत्र(उपन्यास)

https://**bit.ly/3JG4oUL**

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.

Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।